आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 मार्च 2022
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 मार्च 2022
ISSN : 2456-611X

राम चमक रहे भानु समाना

वर्ष : 59 अंक : 23
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23 Office
Posted At R.M.S., Bikaner

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

संघ सेवा, संघ समर्पणा हो चहुँओर ।
साधक बनें, उपासक बनें हो धर्म की नई भोर ।।

बिन्दु से सिन्धु तक

- जिसकी जैसी दृष्टि होती है उसे सृष्टि वैसी ही नजर आती है।
- लक्ष्य से सुनने वाला लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।
- भीतर का ज्ञान नहीं तो सर्वत्र अंधेरा ही नजर आएगा।
- जो आत्मविश्वासी होते हैं, उन्हें निर्णय लेने में देर नहीं लगती है।
- दूसरों से बदला लेने की बजाय स्वयं को बदलना उचित है।
- स्वयं में जब भी देखो, दोषों को देखो, ताकि उन्हें दूर किया जा सके।
- ऊँची उड़ान भरने से पहले, नीचे की जमीन को कभी मत भूलना।
- आत्मानुशासन के बिना समुदाय का अनुशासन फलीभूत नहीं होता है।
- मन मकड़ी की तरह ताने-बाने बुनता रहता है। ये ताने-बाने ही उलझा कर जाल का रूप ले लेते हैं।
- मनुष्य की बहुत-सी ऊर्जा/शक्ति अनावश्यक वचन प्रयोग के माध्यम से क्षीण हो जाती है।
- मनुष्य जितना सोचता है उतना यदि आचरण करने लग जाए तो वह विश्व को महान देन दे सकता है।
- संयोग और वियोग जीवन के साथ जुड़े रहते हैं। जहाँ संयोग है वहाँ वियोग की विभीषिका बनी रहती है।
- इच्छाओं को सीमित करना या भीतर इच्छाओं को जागने ही नहीं देना भी तप है।
- सत्यनिष्ठा वह रसायन है, जिसके सेवन से व्यक्ति का मनोबल सुदृढ़ होता जाता है।
- जो जीवन के महत्त्व को जान लेगा, वह समय का दुरुपयोग कर ही नहीं सकता है।
- मन बच्चे की तरह सरल, वचन युवा की तरह ओजस्वी एवं आचरण वृद्ध की तरह यतना व विवेकपूर्वक होना चाहिए।
- आलस्य और प्रमाद को त्याग कर अनुसंधान में लगे रहें तथा पुरुषार्थ करते रहें तो ज्ञान की प्राप्ति संभव है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

आगमवाणी

जाणं करेति एक्को, हिंसमजाणमपरो अविरतो य।
तत्थ वि बंधविसेसो, महंतरं देसितो समए।।

–बृहद्भाष्य (3938)

एक अविरत (असंयमी) जानकर हिंसा करता है और दूसरा अनजान में। शास्त्र में इन दोनों के हिंसाजन्य कर्मबन्ध में महान अन्तर बताया है अर्थात् तीव्र भावों के कारण जानने वाले को अपेक्षाकृत कर्मबन्ध तीव्र होता है।

One unrestrained person commits violence unknowingly and the other does so knowingly. The karmic bondage bonded by them are vastly different. One who commits violence knowingly bonds much stronger bonds.

सव्वे पाणा पिआउया, सुहसाया दुक्खपडिकूला,
अप्पियवधा पियजीविणो, जीवितुकामा
सव्वेसिं जीवितं पियं नाइवाएज्ज कंचणं।

–आचारांग (1/2/3, सूत्र 78)

सब प्राणियों को अपनी जिन्दगी प्यारी है। सुख सबको अच्छा लगता है और दु:ख बुरा। वध सबको अप्रिय है और जीवन प्रिय। सब प्राणी जीना चाहते हैं। कुछ भी हो, सबको जीवन प्रिय है। अत: किसी भी प्राणी की हिंसा न करो।

All the living love their lives,
They all like pleasure and shun pain,
They all like to live and hate death,
They all want to live,
Life is dear to all of them.
Therefore, do not kill anyone

अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि असत्थं परेण परं।

–आचारांग (1/3/4, सूत्र 129)

शस्त्र (हिंसा) एक से एक बढ़कर है, परन्तु अशस्त्र (अहिंसा) एक से एक बढ़कर नहीं है अर्थात् अहिंसा की साधना से बढ़कर श्रेष्ठ दूसरी कोई साधना नहीं है।

The weapons (the means of violence) are one greater than the other but the non-weapons (the means of non-violence) are not so. Therefore, non-violence is the best.

साभार– प्राकृत मुक्तावली

चिंतन पराग

महावीर-सन्देश

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

हे पुरुषो! आत्मा को विषयों (काम-वासनाओं) की ओर जाने से रोको, क्योंकि इसी से तुम दुःख से मुक्ति पा सकोगे। समस्त जैन दर्शन महावीर की इसी पूर्ण स्वाधीनता की उत्कृष्ट भावना पर आधारित है।

आत्मा की पूर्ण स्वाधीनता का अर्थ है- सम्पूर्ण भौतिक पदार्थों एवं भौतिक जगत् से सम्बन्ध विच्छेद करना। अंतिम श्रेणी में शरीर भी उसके लिए एक बेड़ी है, क्योंकि वह अन्य आत्माओं के साथ एकत्व प्राप्त कराने में बाधक है। पूर्ण स्वाधीनता की इच्छा रखने वाला विश्वहित के लिए अपनी देह का भी त्याग कर देता है। वह विश्व के जीवन को ही अपना मानता है, सबके सुख-दुःख में ही स्वयं के सुख-दुःख का अनुभव करता है, व्यापक चेतना में निज की चेतना को संजो देता है। एक शब्द में कहा जा सकता है कि वह अपनी व्यष्टि को समष्टि में विलीन कर देता है। वह आज की तरह अपने अधिकारों के लिए रोता नहीं अपितु वह कार्य करना जानता है और कर्तव्यों के कठोर पथ पर कदम बढ़ाता हुआ चलता जाता है। जैसा कि गीता में भी कहा गया है-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्'

फल की कामना से कोई कार्य मत करो। अपना कर्तव्य जानकर करो, तब उस निष्काम कर्म में एक आत्मिक आनन्द होगा और उसी कर्म का सम्पूर्ण समाज पर विशुद्ध एवं स्वस्थ प्रभाव पड़ सकेगा। कामनापूर्ण कर्म दूसरों के हृदय में विश्वास पैदा नहीं करता। स्वार्थ छोड़ने से परमार्थ की भावना पैदा होती है और तभी आत्मिक भाव जागता है।

महावीर ने स्वाधीनता के इसी आदर्श को बताकर विषमता एवं भौतिक शक्तियों के मिथ्याभिमान को दूर हटाकर सबको समानता के अधिकार बताए। यही कारण है कि ढ़ाई हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी महावीर के अहिंसा और त्याग के अनुभवों की गूंज बराबर बनी हुई है।

साभार- चिन्तन : मनन : अनुशीलन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनयन हेतु सूचना

हमारे गौरवशाली श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी पगारिया का कार्यकाल **आसोज सुदी 2 संवत् 2079** तदनुसार **27 सितम्बर 2022** को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र **2022-2024** हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत प्रोत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के आजीवन सदस्य के नाम आमंत्रित किए जा रहे है। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी युवा सदस्य का नाम मय पता व सम्पर्क सूत्र नीचे लिखे पते पर प्रेषित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक **30 अप्रैल 2022** से पूर्व भिजवाने का कष्ट करें।

पता:-
Jain Jain & Associates
201/बी, ओम साई निवास, सुभाष रोड़, विले पारले (पूर्व), मुम्बई-400057
Email - CAJAINGOUTAM@GMAIL.COM Call - 9821083200 (Whatsapp)

गौतम जैन (रांका)
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
श्री अ.भा.सा. जैन संघ

अभिमान : विकास का शत्रु

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

अभिमान की मनोवृत्ति जीवन–विकास में घोरतम शत्रु है। मन में जब अभिमान का अंश रहता है, तब वह किसी छोटे व्यक्ति से बात भी करना पसन्द नहीं करता। चाहे उस छोटे व्यक्ति से कितना भी महत्त्वपूर्ण कार्य क्यों न हो, उससे बातचीत करने पर अपना बहुत भला हो सकता है, फिर भी अभिमान उसे बात नहीं करने देता। कभी–कभी यहाँ तक स्थिति आ जाती है कि मृत्यु के क्षणों तक भी अभिमान उसे झुकने नहीं देता। झुकना तो दूर, बात तक नहीं करने देता। इस प्रकार अनेक तरह की हानियाँ तो वर्तमान जीवन में प्रत्यक्ष दिखने वाली होती हैं। इसके अतिरिक्त मन की कोमल वृत्ति से विकसित होने वाली अनेक शुभ वृत्तियाँ कुण्ठित हो जाती हैं। उनके कुण्ठित हो जाने से इस जीवन की आन्तरिक शक्तियाँ तो प्राय: नष्ट होती ही हैं, जो लाख प्रयत्न करने पर भी प्राप्त नहीं हो सकती। इसके साथ–साथ अगली स्थिति बिगड़ जाती है, क्योंकि अभिमान की दशा में दूसरे के प्रति सदा हीन भावना बनी रहती है। उसकी हीन भावना के समय अगले जन्म का आयुष्य–बन्ध भी नीच गति का होता है। उस गति के प्राप्त होने पर प्राय: उसी के अनुरूप ही आगे के विचार बनते रहते हैं। इस क्रम से अनेक जिंदगियाँ बर्बाद हो जाती हैं। अत: विचारवान इन्सान को चाहिए कि अपने मन के किसी भी कोने में अभिमान न रहने दे।

दिनांक 09–06–1968

साभार– गहरी पर्त्त के हस्ताक्षर

सृष्टि, भगवान महावीर की दृष्टि

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

भगवान महावीर की दृष्टि हम क्या पहचानें। पहचानने के लिए भी तो वैसी दृष्टि होनी चाहिये। रत्न पारखी के बिना रत्न किसी के हाथ में चला भी जाये तो वह कैसे मूल्य पा सकेगा ? यद्यपि रत्न का मूल्य तो है ही, वह कमतर नहीं हो जाता फिर भी जौहरी के बिना बाजार में उसे वह मोल नहीं मिल पाता। भगवान महावीर की दृष्टि को भी समझने के लिए गहरी आँख की जरूरत है। भगवान महावीर ने जीव संयम की बात तो कही ही, अजीवकाय संयम का भी उन्होंने उपदेश दिया। अजीव पदार्थों का भी दुरूपयोग नहीं होना चाहिये। अजीव पदार्थों का भी महत्व है। पर्यावरण को सुव्यवस्थित रखने में उनका भरपूर सहयोग है। उनके दुरूपयोग से जीव का जीवन भी खतरे में पड़ जाता है। जीवों के जीवन के लिए अजीव पदार्थ आधार है। इसलिए भगवान का उपदेश हमें प्रकृति के निकट ले जाता है। जब व्यक्ति प्रकृति–कुदरत प्रिय बन जाता है तो वह उसका विनाश कैसे कर पायेगा ? छोटी से छोटी चीज भी जरूरत के क्षणों में महत्त्वपूर्ण बन जाती है एक छोटी सी गोली–टेबलेट हार्ट अटैक की परेशानियों को रोक देती है। एक छोटी सी तूली रगड़ खा आग में बदल सकती है। इसलिए किसी अजीव–पुद्गल की भी अवहेलना नहीं होनी चाहिये। व्यर्थ में वनस्पति की हिंसा, पानी का अपव्यय असंयम में आते हैं। इनका रक्षण करना, दुरूपयोग–अपव्यय नहीं करना, इनका संयम है। वनस्पति, पानी भी जन जीवन के लिए अत्यावश्यक चीजें हैं। इनके प्रति जो लापरवाह बनता है, वह जन जीवन का हितकर कैसे बन सकता है ? मानव सेवादि की चर्चाएँ इस युग में खूब उठ रही हैं पर जो मानव जीवन के लिए जरूरी अंग है उनको बेहिचक नष्ट करने में पीछे नहीं रहते, ऐसे व्यक्ति मानव सेवा के लिए क्या सचमुच में तत्पर हैं? सृष्टि की सुव्यवस्था के लिए भगवान महावीर के दर्शन को ध्यान में लें। उनके दर्शन को ध्यान में ले यदि तदनुरूप प्रयत्न किया जायेगा तो यथार्थ में आत्म–कल्याण के पथ पर अग्रसर होता हुआ व्यक्ति परोपकार के क्षेत्र को भी आलोकित कर सकता है। आत्म–संयम, जीवनिकाय संयम व अजीवकाय संयम के अभाव में जो होगा, उसे आत्म प्रवंचना ही कहा जा सकता है। उससे बचना चाहिये।

मा.शु. 7 मंगलवार, 6.12.2016

साभार– भ्रामरी

अनुक्रमणिका

जीवनी/ धर्म देशना

भगवान श्री महावीर	08
Veermati in the clutches of a prostitute	11
जयपुर महाराजा के भतीजे के लग्न के अवसर पर पशुवध बन्द कराया	13
सत्य की महिमा	15
महावीर-वाणी का अनन्त आनन्द	18
महावीर का मंगल पथ	25

ज्ञान सार

असत्य कथन	31
श्रीमद् भगवती सूत्र	34

संस्कार सौरभ

धैर्य की देवी दमयन्ती	37
WORLD AT WAR: GLOBAL DARKNESS	40
लघु गौतम पृच्छा	41
भीतर से करूणा-हीन बनता मानव	46
भारतीय संस्कृति की मर्यादा बनाम पाश्चात्य संस्कृति की अशिष्टता	48
"सर्वशक्तिमान : वर्द्धमान के पाँच मौलिक सिद्धांत"	51
दो भाई	53
भारतीय शिक्षा पद्धति बनाम पाश्चात्य शिक्षा पद्धति	55

तत्त्व ज्ञान

तत्त्व बोध	35
समकित के 67 बोल	42

भक्ति रस

समुद्र	12
बनें हम महावीर के अनुयायी	14
अहिंसा के अग्रदूत प्रभु महावीर	30
वर्तमान-वर्द्धमान के 5 मौलिक सिद्धांत	54

विविध

गुरु चरण विहार	60

सुनहरी कलम से....

सादर जय जिनेन्द्र!

आदरणीय पाठकगण,

एक प्रसंग जो कि यथापरिमाणित, हृदयस्पर्शी, शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ हमारे मानस-पटल को झकझोर देने वाला है, वह इस प्रकार है-

एक व्यक्ति अपने समस्त प्रमाण-पत्रों से सुसज्जित अति-उत्साह से एक कम्पनी में साक्षात्कार हेतु गया। उसे अपनी प्रतिभा पर पूर्ण विश्वास था कि उसका आवेदन खारिज नहीं किया जा सकता है। आज तो उसे यह नौकरी मिल ही जाएगी और वैसा ही हुआ। प्रतिक्षा समाप्त हुई और उसका क्रम आया। एक के बाद एक प्रश्नों के उत्तर उस व्यक्ति ने बड़ी ही प्रभावी शैली से दिए। अन्तिम प्रश्न पर वह चौंक गया। कम्पनी के मालिक ने पूछा कि ''आज आपने नाश्ते में क्या खाया?'' प्रश्न सुनकर उसके चेहरे पर प्रश्नवाचक उभर आया। फिर भी उसने अपने आपको संभालते हुए बड़े ही आत्मविश्वास से कहा- ''मान्यवर, यहाँ आने की जल्दी में घर से चाय पीकर आया हूँ और रास्त में दो आलू बड़े खाए हैं।'' यह सुनते ही मालिक ने कहा- ''आप जा सकते हैं। हमें विचार करना पड़ेगा।'' उस व्यक्ति से रहा नहीं गया। उसने थोड़ी उत्तेजना दिखाते हुए कहा कि आपको जैसी योग्यता चाहिए वो सब मेरे पास है। मैंने सारे जवाब भी सही दिए हैं। फिर भी आप मुझे क्यों नहीं चुन सकते?

मालिक मुस्कुराते हुए बोला- ''तुम जैन हो'' ऐसा तुम्हारे प्रमाण-पत्र में लिखा है। समस्त जैनी भगवान महावीर के अनुयायी हैं और एक वैष्णव होते हुए मुझे पता है कि उन्होंने ''अहिंसा परमोधर्म:'' का सिद्धान्त दिया है और तुम जमीकन्द खाते हो? अगर तुम अपने भगवान, मार्गदर्शक, पालनहार के प्रति वफादार नहीं, उनकी बातों-नियमों की पालना नहीं कर सकते तो मेरे व मेरी कम्पनी के नियमों की पालना कैसे करोगे? इसीलिए मुझे विचार करना पड़ेगा कि तुम मेरी कम्पनी के लायक हो या नहीं?''

बात बहुत छोटी है, परन्तु हम समीक्षण करें कि हम में जैनत्व का रंग कितना है? एक जैन होते हुए भी हम जमीकंद खाते हैं, रात्रिभोजन करते हैं, अनीति का व्यापार करते हैं, विलासिता हेतु असीमित परिग्रह कर रखा है, ब्रह्मचर्य से हम कोसों दूर है, अनेकान्तवाद को परे कर संघ, समाज, घर-परिवार, व्यापार में मनमानी चलाते हैं।

इस होली बाह्य रंगों से ना रंग कर जैनत्व का रंग अपनाएँ और चिन्तन करें कि जैनत्व के कौन-कौन से रंगों से हम अभी भी नहीं रंगे हैं। जैनत्व के रंग से सराबोर हो भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनाकर जीवन को सार्थक व निर्णायक बनाएँ।

असीम शुभभावनाओं के साथ.........

सह-सम्पादिका

भगवान श्री महावीर

गतांक 15-16 फरवरी 2022 से आगे...

भगवान ने दूसरे मासखमण का पारणा आनन्द नाम के गृहपति के यहाँ और तीसरे मासखमण का पारणा सुनन्द नाम के गृहपति के यहाँ किया। तीसरे मासखमण का पारणा करके भगवान पुन: मौन धारण कर ध्यानस्थ रहे। कार्तिक पूर्णिमा के दिन गोशालक ने भगवान के लिए विचार किया कि मैं इनको महाज्ञानी सुनता हूँ, अत: आज परीक्षा करूँ। इस प्रकार विचार कर गोशालक, भगवान से पूछने लगा कि हे प्रभो! आज पूर्णिमा-महोत्सव के कारण घर-घर में उत्तम भोजन बनता है, अत: आज मुझे भिक्षा में क्या मिलेगा? गोशालक के यह पूछने पर भी भगवान तो मौन ही रहे, परन्तु सिद्धार्थ व्यंतर ने भगवान के शरीर में प्रविष्ट होकर गोशालक से कहा कि भद्र! आज तुझे क्रूर और बिगड़े हुए कोढ़ों का भोजन मिलेगा तथा एक खोटा रूपया दक्षिणा में भी मिलेगा। यह सुनकर गोशालक उत्तम भोजन के लिए दिनभर भ्रमण करता रहा, परन्तु उसे कहीं से भी कुछ न मिला। संध्या समय एक सेवक गोशालक को अपने घर ले गया। वहाँ उसने गोशालक के आगे वही भोजन रखा, जो सिद्धार्थ व्यंतर ने कहा था। गोशालक दिनभर का भूखा था, अत: उसने विवश होकर वही भोजन किया। भोजन कराने के पश्चात् सेवक ने गोशालक को एक रूपया भी दक्षिणा में दिया, परन्तु परीक्षा कराने पर वह रूपया खोटा निकला। इस घटना से गोशालक ने यह निश्चय किया कि जो भावी होता है, वही होता है। इस प्रकार उसने अपने में नियतिवाद को स्थान दिया।

चातुर्मास समाप्त होने के कारण भगवान नालन्दी से विहार कर गए। गोशालक जब शाम को बुनकर शाला में आया तो उसने वहाँ भगवान को नहीं देखा। लोगों से भगवान के विषय में पूछ-ताछ करके गोशालक, भगवान के पास जाने को चला। कोलाक नाम के सन्निवेश में उसने लोगों को यह कहते हुए सुना कि बहुल ब्राह्मण को धन्य है, जिसने मुनि को दान दिया और दान के प्रभाव से उसके यहाँ देवों ने रत्नवृष्टि की। लोगों के मुँह से यह सुनकर गोशालक समझ गया कि यह बात मेरे गुरु के लिए ही है। भगवान को ढूँढता हुआ गोशालक उस स्थान पर पहुँच गया, जहाँ भगवान कायोत्सर्ग किए खड़े थे। वहाँ भगवान को वन्दन करके गोशालक प्रार्थना करने लगा कि हे प्रभो! मैं पहले तो आपका शिष्य होने के योग्य न था, परन्तु अब वस्त्रादि त्याग कर नि:संग हूँ। अत: आप मुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करिए। यद्यपि आप राग-रहित हैं, परन्तु मेरा मन आपकी सेवा चाहता है। महापुरुष, किसी की उचित आशा भंग नहीं करते, इस कारण भगवान ने गोशालक की यह प्रार्थना अस्वीकार नहीं की।

गोशालक, भगवान के साथ ही विचरने लगा। तीसरा चातुर्मास चम्पानगरी में बिताने के लिए भगवान चम्पानगरी पधारे। वहाँ भगवान ने दो-दो मास की तपस्या करके चातुर्मास बिताया। तीसरे चातुर्मास में भगवान के साथ गोशालक भी था। चातुर्मास के पश्चात् भगवान पुन: कोलाक ग्राम में पधारे। वहाँ भगवान तो कायोत्सर्ग करके रहे, परन्तु गोशालक अपनी उच्छृंखलता के कारण कोलाक के राजकुमार द्वारा दण्डित हुआ। चौथे चौमासे में भगवान पृष्ठ चम्पा पधार गए और वहाँ चौमासी तपपूर्वक कायोत्सर्ग करते रहे। चौमासे के अंत में प्रतिमा पाल कर भगवान ने अन्यत्र विहार किया।

जनपद में विचरते हुए भगवान ने विचार किया कि मुझे बहुत कर्मों की निर्जरा करनी है, लेकिन इस आर्यदेश में कोई न कोई परिचित मिल ही जाता है; इस कारण कर्मों की निर्जरा का ठीक योग नहीं मिलता। अत: आर्यदेश को छोड़कर अपरिचित अनार्यदेश में जाना ठीक होगा। यह विचार कर भगवान लाट देश की ओर पधारे। लाट देश के

स्वभावत: क्रूर लोग भगवान को मुण्डा-मुण्डा कहकर मारने लगे। कोई तो भगवान को चोर कहकर बांधता, कोई अन्य राजा का गुप्तचर समझकर भगवान को पकड़कर कष्ट देता और कोई कौतूहल के लिए भगवान पर शिकारी कुत्ते छोड़ता। इस प्रकार वहाँ के अनार्य लोगों ने ताड़न-तर्जनादि द्वारा भगवान को अनेक उपसर्ग दिए। लोग भगवान से कुछ पूछते, परन्तु मौनधारी भगवान कुछ उत्तर न देते। तब वहाँ के लोग, क्रोध करके और भगवान को चोर, डाकू, धूर्त, ठग कहकर अनेक प्रकार की पीड़ा देते, परन्तु भगवान प्रसन्नतापूर्वक सब कष्ट सहन करते। जिस प्रकार ग्राहकों के आधिक्य से व्यापारी खेद नहीं पाता, अपितु प्रसन्न होता है, उसी प्रकार, अनार्य लोगों द्वारा दिए गए कष्टों से भगवान खेद न पाते, किन्तु कर्मों की अधिक निर्जरा होती है। यह जानकर भगवान अधिकाधिक आनन्द पाते।

अनार्यदेश में बहुत कर्म खपाकर भगवान पुन: आर्यदेश की ओर पधारे और अनेक ग्राम-नगरों में विचरते हुए पाँचवां चौमासा, चौमासी तपयुक्त भद्दिलपुर में बिताया। भद्दिलपुर से भगवान ने विशाला की ओर विहार किया। उस समय गोशालक ने भगवान से कहा- ''प्रभो! अब मैं आपके साथ नहीं रहना चाहता, क्योंकि लोग जब मुझे मारते हैं, तब आप तटस्थ की तरह देखा करते हैं और जब आपको उपसर्ग होते हैं, तब आपके साथ रहने के कारण मुझे भी उपसर्ग सहने पड़ते हैं।'' भगवान ने तो मौन धारण कर रखा था, इसलिए वे तो कुछ न बोले, लेकिन सिद्धार्थ व्यंतर ने गोशालक की बात के उत्तर में गोशालक से कहा कि तू तेरी इच्छा हो, वैसा कर।

भगवान विशाला पधारे। वहाँ भगवान एक लोहार की शाला में कायोत्सर्ग करके रहे। उस लोहार ने भगवान को मारने के लिए लोहा कूटने का घन उठाया, लेकिन देवयोग से वह घन उसी लोहार पर गिरा, जिससे लोहार मर गया। भगवान वहाँ से विहार करके आगे बढ़े।

भगवान ने छठा चौमासा भद्रिकापुरी में बिताया। भद्रिकापुरी में भी भगवान चौमासी तप पूर्वक कायोत्सर्ग करके रहे थे। विशाला के मार्ग में गोशालक ने भगवान का साथ छोड़ दिया था, लेकिन भद्रिकापुरी में वह फिर भगवान के साथ हो गया।

भद्रिकापुरी से विहार करके भगवान मगधदेश में विचरने लगे। भगवान ने सातवाँ चातुर्मास आलंभिका में चातुर्मासिक तप करके बिताया। आलंभिका से विहार करके अनेक ग्राम-नगरों को पावन करते हुए भगवान ने आठवाँ चातुर्मास चातुर्मासिक तपपूर्वक राजगृह नगर में बिताया।

भगवान ने विचार किया कि मुझे बहुत अधिक कर्मक्षय करने हैं, अत: इसके लिए मुझे म्लेच्छ देशों में जाना उचित है। इस प्रकार विचार करके चातुर्मास की समाप्ति पर भगवान ने वज्रभूमि लाट देश की ओर विहार किया। वहाँ के निवासी म्लेच्छ लोग भगवान को विविध प्रकार से कष्ट देने लगे, लेकिन भगवान ''कर्म खपते हैं'' इस विचार से शांत और आनंदित ही बने रहे। उस देश में स्थान न मिलने के कारण भगवान को शीत, तप और वर्षा भी सहन करनी पड़ी, परन्तु धैर्यपूर्वक समस्त उपसर्गों को सहन करते हुए भगवान ने नौवां चातुर्मास उसी अनार्य देश में व्यतीत किया।

अनार्यदेश में चातुर्मास बिताकर भगवान सिद्धार्थपुर की ओर पधारे। गोशालक भी साथ ही था। मार्ग में वैशिकायन नाम का तापस सूर्य के सम्मुख मुख करके सूर्य की आतापना ले रहा था। तप के प्रभाव से उसे तेजोलेश्या लब्धि प्राप्त हुई। सूर्य की गर्मी के कारण वैशिकायन के बढ़े हुए बालों से जुएँ नीचे गिरती थी, जिन्हें उठा-उठाकर वैशिकायन पुन: अपने बालों में रखता जाता था। गोशालक सहित भगवान महावीर उसी मार्ग से निकले। गोशालक, वैशिकायन के पास जाकर कहने लगा- रे तापस! तू कौन से तत्त्व जानता है? तू इन जुओं का शय्यातरी है। तू पुरुष है या स्त्री है? आदि। गोशालक ने इस प्रकार की अनेक बातें कही, लेकिन समतावान वैशिकायन तापस कुछ नहीं बोला। तब गोशालक तापस को पुन:-पुन: छेड़ने लगा। अंत में तापस क्रुद्ध हो उठा। उसने गोशालक पर तेजोलेश्या लब्धि का प्रयोग किया। विकराल ज्वाला की तरह तेजोलेश्या से भय पाकर गोशालक भागकर भगवान के पास आया। तेजोलेश्या से गोशालक को भयभीत देखकर करुणा सागर भगवान ने गोशालक की रक्षा के लिए उस तेजोलेश्या को शीतल दृष्टि से देखा। भगवान की शीतल दृष्टि से वह तेजोलेश्या उसी प्रकार शांत हो गई, जिस

प्रकार समुद्र में गिरी हुई बिजली शांत हो जाती है। भगवान की शक्ति देखकर वैशिकायन विस्मित हुआ और भगवान के पास आकर नम्रता से बोला- प्रभो! मैं आपका ऐसा प्रभाव नहीं जानता था। आप मेरा अपराध क्षमा करें। इस प्रकार क्षमा-प्रार्थना करके वह तापस अपने स्थान पर गया।

वैशिकायन तापस के चले जाने के पश्चात् गोशालक ने भगवान से पूछा- ''प्रभो! तेजोलेश्या लब्धि कैसे प्राप्त होती है?'' भगवान ने उत्तर दिया- ''नियमाधारी होकर छ: मास तक बेले-बेले का तप करके पारणे के समय केवल मुट्ठी भर उड़द तथा अंजलि भर जल से पारणा करने से छ:मास के अंत में तेजोलेश्या लब्धि प्राप्त होती है।'' तेजोलेश्या लब्धि प्राप्त करने का उपाय जानकर गोशालक भगवान का साथ छोड़कर तेजोलेश्या लब्धि की प्राप्ति का उपाय करने के लिए श्रावस्ती की ओर चला। श्रावस्ती पहुँच कर वह एक कुम्हार की शाला में ठहर कर तेजोलेश्या लब्धि की प्राप्ति के लिए तप करने लगा। छ: मास समाप्त होने पर गोशालक को तेजोलेश्या लब्धि प्राप्त हुई। गोशालक ने परीक्षा के लिए क्रोध करके एक दासी पर तेजोलेश्या का प्रयोग किया, जिससे वह दासी जलकर भस्म हो गई। तेजोलेश्या लब्धि मुझे प्राप्त है यह जानकर गोशालक प्रसन्नता पूर्वक अन्यत्र विचरने लगा। विचरते हुए गोशालक को भगवान पार्श्वनाथ के छ: शिष्य मिले, जो अष्टांग महानिमित्त के पण्डित थे, परन्तु चरित्र से रहित थे। भगवान पार्श्वनाथ के शिष्यों ने मित्र-भाव से गोशालक को वह निमित्तज्ञान बता दिया। उस निमित्तज्ञान और तेजोलेश्या लब्धि पर गर्व करता हुआ, गोशालक अपने आपको जिनेश्वर बताता हुआ विचरने लगा। जनपद में विचरते हुए भगवान महावीर श्रावस्ती पधारे और भगवान ने दसवाँ चातुर्मास श्रावस्ती में ही किया। श्रावस्ती में भी भगवान चातुर्मासिक तप करके रहे थे। चातुर्मास के अंत में पारणा करके भगवान ने श्रावस्ती से विहार कर दिया।

विचरते हुए भगवान महावीर भद्र, महाभद्र और सर्वतोभद्र तप करने के लिए सोलह दिन तक एक स्थान पर कायोत्सर्ग पूर्वक किसी एक पदार्थ पर दृष्टि लगाकर रहे। पश्चात् उस स्थान से विहार करके पैढाला नगरी के समीपस्थ उद्यान में अष्टम तप पूर्वक एक शिला पर कायोत्सर्ग करके एक ही पुद्गल पर दृष्टि जमाकर प्रतिमाधारी हुए। **साभार- तीर्थंकर चरित्र (बालचन्द श्रीश्रीमाल)**

-क्रमश:

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपृष्ठ के नियमित पाठक है यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें नि:संकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 अप्रैल 2022** के धार्मिक अंक **1. ''वर्तमान : वर्द्धमान के पाँच मौलिक सिद्धांत'' 2. ''सर्वशक्तिमान : वर्द्धमान के पाँच मौलिक सिद्धांत'' 3. ''आओ समीक्षण करें कितना गहरा है जैनत्व का रंग'', 4. ''भारतीय संस्कृति की मर्यादा बनाम पाश्चात्य संस्कृति की अशिष्टता''** विषय पर प्रकाशित किए जाएंगे। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा।

विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. 9314055390 एवं ईमेल : news@sadhumargi.com पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

साथ ही **15 वर्ष से कम आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं की भावनाएँ- प्रेरक प्रसंग, कविता, गीत, चित्र आदि के माध्यम से हमें भिजवाएँ।** श्रेष्ठ रचनाओं को श्रमणोपासक में प्रकाशित किया जाएगा।

-श्रमणोपासक टीम

Veermati in the clutches of a prostitute

Golden Glimpse of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.

Under the 'Achar Vishudhi Mahotsav' the english translated series of 'Pujya Hukmesh' is presented below to make the readers aware about the life of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.

Dear children! The prostitute reached her base with Veermati. On the way, the prostitute showed such affection and affinity as if she was Veermati's real aunt. The prostitute took Veermati to the upper residence with full security. On seeing the situation, it didn't take long for Veermati to understand that it was a brothel and that she was caught in the trap of the prostitute.

She started thinking that- What will happen now, how will my character be protected here, and how will my husband get information about this, so that he can search for me. With concern and worry, she started running her eyes around the base (brothel), but there was such a tremendous security arrangement that even a bird could not come by fluttering. At last, she decided that the refuge of religion (God) can be the only helper, and nothing else. After pondering about this, she started chanting the Mahamantra in her heart with devotion. Meanwhile, the prostitute along with maidservants brought a plate of food, and with pretentious affection, started requesting Veermati to take a shower and adorn herself with jewels and eat the food. But Veermati, paying no heed to their words, concentrated on the chanting of the Mahamantra.

When Jagdev came back home, he could not find Veermati. He got confused, scared and fainted (fell on the ground). Then as soon as he regained his senses and consciousness, he started thinking about - where to go and whose help to seek in such a situation.

Eventually, with hope and some courage, he got up and walked to the kingdom of King Siddharaj. With his bravery and tact, he started serving as a bodyguard of King Siddharaj, along with internally searching for Veermati.

Here, the prostitute invited King Siddharaj's former bodyguard Veerdhaval to increase their business through Veermati.

Veerdhaval arrived all dressed up and started getting ready to rape Veermati as per the instructions of the prostitute. Then suddenly, while chanting the Mahamantra, an irrepressible power was infused in Veermati that she ended up killing Veerdhaval and sacrificed her life to protect her chastity.

When King Siddharaj came to know about this, he reached there with his bodyguard. Upon seeing the dead body of Veermati lying there, bodyguard Jagdev cried bitterly and told his whole story.

After hearing his story, the king hugged him tightly. Later, Jagdev was honoured with a high position in the state and the prostitute was expelled from the state.

BIRTH

Dear children! You read about Todaraisingh, the land of Karmaveers-Dharmaveers. Bisa Oswal Jain Shri Ratanchand ji Chaplot used to reside in

Todaraisingh. His wife's name was Motibai. A spring of perfect harmony was flowing between husband and wife just like milk and sugar.

Honorable Ratanchanji was a firm believer in Sudev, Suguru and Sudharma, an ardent devotee and shravak. No matter how busy he was in life, he always followed the samayik-pratikraman rituals with full vigilance. His wife Motibai truely fulfills the saying of 'icing on the cake' as she was also always eager to do samayik, pratikraman, renunciation of dinner after sunset and fasting on festival dates(तिथियाँ). She was piety and virtuous as a wife.

Because of this, the women of the family and society considered her as an ideal and always actively performed religious rituals. At the same time, even in the practical field, she met everyone in her neighbourhood with great affinity and made sure no one was in any trouble. As soon as she came to know about someone's suffering, she was ready to offer help both financially and emotionally like a family member.

The spirit of 'Atithi Devo Bhavah' was engulfed in her veins. Whether the Panch Mahavratadhari Saint-Sati, or the self-righteous Shravak-Shravika or even the poor, sad, hungry, thirsty, whoever came to her door never returned empty-handed. With full discretion and determination, she showed hospitality and respect to the guests.

As a result of this, there was an atmosphere of happiness and peace in the family. The only thing missing from their life was a child. To fulfil that void, on V.S. 1860, पौष शुक्ल 9., Motibai gave birth to a boy who was full of virtuous limbs and endowed with auspicious signs of the sea. Seeing his divine spirit and beautiful panoramic face, a wave of joy spread in the whole family. As soon as he retired from the sutak karma (सूतक कर्म), the birth was celebrated with great pomp and gaiety. The Chaplot family donated generously to the visitors and gave a feast to all the relatives. **Continued...**

भक्ति रस

समुद्र

समुद्र के किनारे जब एक तेज लहर आयी
तो एक बच्चे की चप्पल ही अपने साथ बहा ले गई।
बच्चा रेत पर अंगुली से लिखता है... ''समुद्र चोर है''।
उसी समुद्र के दूसरे किनारे पर
एक मछुहारा बहुत सारी मछलियाँ पकड़ लेता है...
वह उसी रेत पर लिखता है... ''समुद्र मेरा पालनहार है''।
एक युवक समुद्र में डूब कर मर जाता है,
उसकी माँ रेत पर लिखती है... ''समुद्र हत्यारा है''।
दूसरे किनारे एक गरीब बूढा टेढी कमर लिए
रेत पर टहल रहा था...
उसे एक बड़े सीप में अनमोल मोती मिल गया,
वह रेत पर लिखता है... ''समुद्र बहुत दानी है''।
अचानक एक बड़ी लहर आती है और
सारा लिखा मिटा कर चली जाती है।
मतलब समुद्र को कहीं कोई फर्क नहीं पड़ता
कि लोगों की उसके बारे में क्या राय हैं,
वो हमेशा अपनी लहरों के संग मस्त रहता है।
अगर विशाल समुद्र बनना है तो जीवन में
कभी भी फिजूल की बातों पर ध्यान ना दें...
अपने उफान, उत्साह, शौर्य, पराक्रम
और शांत समुंद्र की भाँति
अपने हिसाब से तय करें।
लोगों का क्या है... उनकी राय परिस्थितियों के हिसाब से बदलती रहती है।
अगर मक्खी चाय में गिरे तो चाय फेंक देते हैं और
शुद्ध देशी घी में गिरे तो मक्खी फेंक देते हैं।
जो जितनी ''सुविधा'' में है, वो उतनी ही ''दुविधा'' में है।
स्वस्थ रहें, मस्त रहें, हमेशा हँसते रहें,
खिलखिलाते रहें और अपना बहुत ख्याल रखें...!!

जयपुर महाराजा के भतीजे के लग्न के अवसर पर पशुवध बन्द कराया

जीवनी अंश - परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा.

गतांक 15-16 फरवरी 2022 से आगे...

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. अजमेर से विहार कर ब्यावर पधारे और युवाचार्यश्री ने बीकानेर की तरफ विहार किया। ब्यावर में आचार्यदेव बहुत दिन ठहरे। चातुर्मास भी वहीं करने की संभावना थी। इसके लिए कालक्षेप करने को पूज्यश्री आस-पास के क्षेत्रों में विचरने लगे। इस प्रकार विचरते हुए वे बाबरे (बाबरा) पधारे। वहाँ पूज्यश्री के सदुपदेश से बाबरे (बाबरा) के श्रावकों ने 100-150 बकरों को अभयदान दिया। पूज्यश्री बाबरे (बाबरा) विराज रहे थे तब मेवाड़ राज्य के ठिकाणे शिवरती के महाराज हिम्मतसिंहजी के कुँवर साहब की बारात बाबरे (बाबरा) के समीप ग्राम राश (रास) के ठाकुर साहब के यहाँ आई हुई थी। पूज्यश्री के बाबरे (बाबरा) विराजने के समाचार मिलते ही हिम्मतसिंहजी आदि मुख्य लोग बाबरे (बाबरा) पधारे और पूर्व परिचय के कारण निवेदन किया कि वे लोग वहाँ चार-पाँच दिन ठहरेंगे अत: आचार्य प्रवर भी राश (रास) पधारने की कृपा करें। इस पर आचार्यदेव ने फरमाया कि अभी राश (रास) आने का अवसर नहीं है, क्योंकि आप लोगों की मेहमानदारी में पशु-पक्षियों का वध होना सम्भव है। ठाकुर साहब आदि ने निवेदन किया कि महाराजश्री! हम हिंसा बिलकुल नहीं होने देंगे। अत: आप राश (रास) पधारने की कृपा करें।

इसके पश्चात् महाराज हिम्मतसिंहजी ने राश (रास) लौटकर राश (रास) ठाकुर साहब से आग्रह किया कि उनके लिए जीवहिंसा बिलकुल नहीं की जाए। इससे 150-175 बकरों को सहज ही अभयदान मिल गया। पूज्यश्री भी राश (रास) पधारे। वहाँ व्याख्यान में शिवरती महाराज हिम्मतसिंहजी, अन्य सरदार व जैन तथा अन्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित होते थे। राश (रास) के कामदार ने 101 बकरों को अभयदान दिया। श्रावकों ने भी बहुत-से बकरों को अभयदान दिया। श्री हिम्मतसिंहजी के संकल्प से सभी माँसाहारी लोगों को प्रेरणा लेकर शादियों व सामान्य व्यवहार में होने वाली जीव हिंसा को बन्द कर सादा जीवन और स्वच्छ भोजन को जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिए। जैसा भोजन होगा वैसा स्वभाव होगा। सामिष भोजन करने वाले अपने ही आदमी तक का खून कर देते हैं। मात्र माँस खाने के लिए जीव हिंसा करते हैं। जहाँ ऐसे निर्दोष प्राणियों तक का वध होता है वहाँ उन परिवारों में चोरी, लूट-पाट, दगा, जुआ और बदमाशी का भी अन्त सरलता से नहीं किया जा सकता।

सम्राट अशोक ने दया-धर्म की स्थापना की तभी हिन्दुस्तान उन्नति कर सका। दया-धर्म को जब राजा कुमारपाल ने स्थापित किया तब गुजरात आबाद हुआ। किन्तु आज लोग स्वार्थी, क्रूर और अधम बनते जा रहे हैं। पहले हमको स्वयं को त्याग करना चाहिए। जब दया करेंगे तब शान्ति स्थापित होगी। हमारे प्रति अपराध करने वाले को भी क्षमा करने से समाज में भ्रातृ भावना पनपेगी एवं बढ़ेगी।

अबोल (मूक), दीन, निर्दोष प्राणियों पर अत्याचार करना एवं उनका वध करना घोर निर्दयता है। इसका नतीजा स्वयं को भुगतना पड़ता है। इसलिए सभी को दया का ही आश्रय लेना चाहिए

एवं सब जगह उसी का प्रचार करना चाहिए, क्योंकि धर्म का मूल दया में ही निहीत है।

रास से पूज्यश्री केकिन्द (कैकीन) पधारे। वहाँ वे एक सप्ताह ठहरे। वहाँ भी आचार्यदेव के दर्शनार्थ आस-पास के गाँवों के सैंकड़ों श्रावक उपस्थित हुए। करीब 400 बकरों को जसनगर में अभयदान मिला। वहाँ से आषाढ़ कृष्णा 1 के दिन पूज्यश्री लांबिया पधारे। वहाँ के ठाकुर साहब पूज्य आचार्यदेव के व्याख्यान में पधारे। उनके हृदय पर पूज्यश्री के व्याख्यान का अत्यन्त सात्विक प्रभाव हुआ। ठाकुर साहब ने कितने ही नियम तथा प्रत्याख्यान किए और चार बकरों को अभयदान दिया। दूसरे लोगों ने भी नाना प्रकार की प्रतिज्ञाएँ की। आषाढ़ बदी 3 के दिन सुबह आचार्यश्रीजी कालू पधारे। वहाँ पूसालालजी कोठारी ने सपत्नी चौथे व्रत का स्कन्ध किया। उपवास, दया, पौषध तथा अन्य स्कंधादि बहुत हुए। कालू के कृषकों ने हरे वृक्ष तथा हरे चने इत्यादि भून कर खाने के सौगन्ध लिए।

कालू में श्री दौलतऋषिजी म.सा. (जिन्होंने काठियावाड़ में विचरण कर अत्यन्त उपकार किया) आदि ठाणा-8 पधारे। परस्पर आनन्दपूर्वक ज्ञानचर्चा और वार्तालाप हुआ। दोनों महापुरुषों का व्याख्यान एक जगह होता था। प्रात:काल का व्याख्यान दिगम्बर स्कूल में होता। पहले श्री दौलतऋषिजी म.सा. व्याख्यान फरमाते थे, बाद में पूज्यश्री का व्याख्यान होता था। दोपहर में बड़े बाजार में श्री लक्ष्मीनारायणजी के मंदिर की तिबारी में दोनों महात्मा व्याख्यान फरमाते थे। परिषद् का जमाव दर्शनीय था। दोनों संतों के श्रवणीय और अद्वितीय उपदेश के प्रभाव से महान उपकार हुए। व्याख्यान में जैन व अन्य करीब 500 लोग आते थे। कालू से विहार कर आषाढ़ बदी 13 के दिन पूज्यश्री बलूंदे (बलूंदा) पधारे। वहाँ के धनाढ्य सेठ गंगारामजी मूथा ने, जिनका व्यवसाय बैंगलोर तथा मद्रास में है; पूज्यश्री की पूर्ण भक्तिभाव से सेवा की। बलूंदे में एक दिन संध्या समय पूज्यश्री जंगल से आ रहे थे तब एक खटीक की लड़की दो बकरों को ले जा रही थी। सेठ गंगारामजी को समाचार मिलते ही उन्होंने बकरों को अभयदान दिला दिया। **साभार- अद्भुत योगी**

-क्रमश:

भक्ति रस

बनें हम महावीर के अनुयायी

-मोनिका मिन्नी, अहमदाबाद

जैन कुल में जन्म लिया
जगी पूर्व जन्म पुण्याई,
पंचशील सिद्धान्तों के अनुयायी
बनें हम महावीर के अनुयायी।।

भगवन् के ये मौलिक सिद्धान्त
जीवन जीने की कला सिखलाते,
फिर क्यूं अपने अमूल्य जीवन को
पाप क्रियाओं में व्यर्थ गँवाते।।

नाम के पीछे जैन लगा है
क्या बस इतनी-सी है पहचान?
सच्चा जैनी वही कहलाता
जिसने लिया है पंचव्रतों को जान।।

अहिंसा को अपनाकर लाओ
हृदय में जीवदया की भावना,
अनुशासित और संयमित जीवन से
करो सत्य की प्रभावना।।

परिग्रह दु:ख का मूल कारण है
बढ़ाता आसक्ति और लगाव,
नीयत हो अच्छी भावना हो सच्ची
जगाएँ अचौर्य के भाव।।

आत्मा में लीन होकर पहचानो
सच्चे ब्रह्म का स्वरूप,
ब्रह्मचर्य से अन्तरात्मा की
प्रतिमा निखरेगी खूब।।

सत्य की महिमा

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री जवाहरलालजी म.सा.

मनुष्य को जब तक अनुभव नहीं हो जाता, तब तक उसकी समझ में सत्य का महत्त्व नहीं आता। जब उसके सिर पर कोई ऐसी आपत्ति आ पड़ती है जो असत्य का आश्रय लेने से उत्पन्न हुई हो तो तत्काल ही वह समझ जाता है कि सत्य का क्या महत्त्व है। इसके लिए एक प्राचीन कथा का उदाहरण दिया जाता है–

एक श्रावक ने अपने पुत्र को नाना प्रकार की शिक्षाएँ देने का प्रयत्न किया, अनेक प्रकार से उसे समझाने की चेष्टा की, परन्तु उसके दिमाग में एक भी न जँची और वह कुसंगति छोड़ने को तैयार न हुआ। धीरे-धीरे थोड़े ही दिनों में वह लड़का चोरी करने लगा। पिता ने उसे समझाने के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न किए किन्तु सब निष्फल। वह लड़का न सुधर सका और दिन-ब-दिन अपने विषय में नैपुण्य प्राप्त करने लगा। पिता से तिरस्कृत होकर भी उसने अपना व्यवसाय बन्द न किया और एक दिन राजा को चोरी का पता लग गया तथा चोर भी पकड़ा गया। पकड़ लिए जाने पर उस लड़के ने यह जाल रचा कि जिस दिन राज्य भण्डार में चोरी हुई, उस दिन मैं इस नगर में था ही नहीं। इस बात को उसने अपने मित्रों की गवाही दिलाकर प्रमाणित कर दिया। चालाकी पूरी चली, यह देखकर राजा दंग रह गया। उसने अपने मन में सोचा कि यद्यपि चोरी इसी ने की है तथापि जब तक इसकी चोरी नियमानुसार प्रमाणित न हो जाए, तब तक इसे चोर कैसे ठहराया जा सकता है? इतने में ही राजा को एक युक्ति याद आई। इस लड़के का पिता सत्य भाषण के लिए प्रख्यात था। राजा ने उसी की साक्षी पर मुदकमे का दारोमदार छोड़ दिया। लड़के ने जब यह जाना कि मेरे पिता की साक्षी पर ही मुकदमे का दारोमदार है तो वह दौड़ा-दौड़ा अपने पिता के पास गया। वहाँ जाकर उसने पिता के पैरों में गिरकर प्रार्थना की कि यद्यपि चोरी मैंने ही की है तथापि यदि आप राजा के सम्मुख यह कह देंगे कि उस दिन मेरा लड़का नगर में नहीं था तो मैं बच जाऊँगा। राजा आपका कहना मानेंगे, अत: आप मेरी बात को जो लगभग प्रमाणित हो चुकी है, थोड़ी और पुष्ट कर देंगे तो मैं साफ बच जाऊँगा।

लड़के ने यद्यपि नम्रतापूर्वक उक्त प्रार्थना की किन्तु वह श्रावक ऐसा न था। उसे सत्य की अपेक्षा अपना अन्यायी पुत्र कदापि प्रिय नहीं हो सकता था। वह एक विद्वान् के निम्न कथन का कट्टर समर्थक था–

आत्मार्थे वा परार्थे वा पुत्रार्थे वापि मानवा:।
अनृतं ये न भाषन्ते ते बुधा: स्वर्गगामिन:।।

जो अपने, पराये या अपने पुत्र के लिए भी असत्य नहीं बोलते, वे ही बुद्धिमान देवलोक को जाते हैं।

उसने उत्तर दिया कि यद्यपि पिता होने के कारण तेरी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है, लेकिन 'सत्य' मेरा सर्वस्व है। सत्य ही मेरा परम-मित्र है। सत्य से मेरी रक्षा होती है। अत: उस परम-प्रिय सत्य को छोड़कर मैं तेरे अन्याय का समर्थन करने के लिए झूठ बोलूं, यह कदापि सम्भव नहीं है। यदि सत्य से तू बचता हो तो मैं तू कहे वैसा कर सकता हूँ।

अन्यायी मनुष्य में क्रोध बहुत होता है। पिता का यह उत्तर सुनकर उस लड़के का क्रोध उमड़ पड़ा। उसने कहा– ''तुम मेरे बाप क्यों हुए? पुत्र पर दया नहीं आती और उसकी जान देने को तैयार हो। क्या तुम्हीं ऐसे अनोखे बाप हो या दुनिया में और भी किसी के ऐसे भी बाप हैं? अच्छी सत्य की पूँछ पकड़ रखी है कि लड़का चाहे बचे या मर

जाए किन्तु आप अपने सत्य की पूँछ ही पकड़े रहेंगे।''

पिता– ''पुत्र! तुम पर मेरी अत्यन्त दया है, लेकिन तेरे सिर पर इस समय क्रोध का भूत सवार है। इसी से मेरा अच्छा स्वरूप भी तुझे बुरा दिख रहा है और तू ऐसा बोल रहा है। यदि ऐसा न होता तो तू स्वयं ही समझता कि मैं तुझे बचाने के लिए असत्य भाषण कर दूँ कि यह उस दिन नगर नहीं था, तो मेरा 'सत्य-व्रत' भंग हो जाएगा।''

पुत्र– ''तुम्हीं मेरी जान ले रहे हो।''

पिता– मैं तेरी जान नहीं ले रहा हूँ, किन्तु तेरा पाप तेरी जान ले रहा है। मैं तो तेरी रक्षा करना चाहता हूँ। इसलिए मैं बचपन से ही बुरे कर्म से बचने का उपदेश देता रहा, लेकिन तू मेरी शिक्षा की उपेक्षा करता रहा। अब भी मैं तुझे यही आदेश देता हूँ कि सत्य की शरण जा, सत्य ही तेरी रक्षा करेगा। यदि असत्य से प्राण बच भी गए तब मृतक के ही समान है और सत्य से प्राण गए, तब भी जीवन श्रेष्ठ है।

निश्चित समय पर श्रावक को राजा ने बुलाया और गवाह के कठघरे में खड़ा करके पूछा- ''कहिए सेठजी! जिस दिन राज्य-भण्डार में चोरी हुई, उस दिन क्या तुम्हारा लड़का यहाँ नहीं था? और उसने चोरी नहीं की है?''

सेठ– ''उस दिन वह नगर में ही था और चोरी उसने ही की है।''

धन्य है इस श्रावक को, जिसने अपने पुत्र के लिए झूठ बोलना उचित न समझा। यदि वह चाहता तो झूठ बोलकर अपने लड़के को निपराध सिद्ध कर सकता था, लेकिन उसने अपने लड़के से ज्यादा सत्य को विशेष उच्च माना। यह श्रावक तो अपने लड़के लिए ही झूठ नहीं बोला, लेकिन आज के लोग कौड़ी-कौड़ी के लिए झूठ बोलने में नहीं हिचकिचाते। इतना ही नहीं बल्कि अकारण ही हँसी-मजाक और अपनी या दूसरे की प्रशंसा तथा निन्दा के लिए भी झूठ को ही महत्त्व देते हैं। कहाँ तो यह श्रावक, जिसने प्राण-प्रिय सन्तान को भी सत्य से तुच्छ समझा और कहाँ आज के लोग जो सत्य को कोड़ियों से भी तुच्छ समझते हैं।

अस्तु, यदि श्रावक चाहता तो झूठ बोल सकता था, लेकिन वह इस बात को जानता था कि पुत्र की रक्षा वास्तव में सत्यवादी ही कर सकता है, मिथ्यावादी नहीं।

सेठ का उत्तर सुनकर राजा धन्यवाद देता हुआ सेठ से कहने लगा- तुम्हारे जैसे सत्यवान सेठ मेरे नगर में मौजूद हैं, यह जानकर मेरे आनन्द की सीमा नहीं रही। मेरे नगर में जैसे चोर हैं, वैसे ही सर्वथा सत्य बोलने वाले मनुष्य भी मौजूद हैं, यह कितने आनन्द की बात है! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। अतः तुम इच्छानुसार याचना कर सकते हो। मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने की प्राणप्रण से चेष्टा करूँगा।

सेठ प्रतिक्षा कर रहा था कि देखें लड़के को उसके अन्याय का क्या दण्ड मिलता है? किन्तु राजा के मुख से यह सान्त्वनापूर्ण वचन सुनकर वह एकान्त में जा बैठा और अपने लड़के को बुलाकर उससे बातचीत करने लगा।

पिता– ''तुझ पर चोरी का अपराध प्रमाणित हो गया है, अब तुझे जीने की इच्छा है या मरने की? तू मुझे कहता था कि झूठ बोलकर बचाओ, किन्तु अब देख कि सत्य बोलकर भी मैं तुझे बचा सकता हूँ। धर्म रहे तो जीवित रहना उत्तम है किन्तु यदि धर्म जाने की स्थिति उत्पन्न हो जाए तो धर्म जाने से पूर्व मृत्यु श्रेष्ठ है। यदि तुझे जीवित रहने की इच्छा हो तो पापकर्मों को छोड़कर सत्यमार्ग ग्रहण कर। यदि तू मेरे धर्म का अधिकारी बनना चाहे तो मैं राजा से तुझे छोड़ देने की प्रार्थना करूँ। इसके पश्चात् यदि मैं तेरा आचरण अच्छा देखूँगा तो तुझे अपना उत्तराधिकारी बनाऊँगा, अन्यथा नहीं।''

पुत्र– ''आपने पहले भी मुझे यही उपदेश दिया था, किन्तु मैं बराबर कुमार्ग पर चलता रहा। यदि अब मैं जीवित बच जाऊँगा तो सदैव अच्छा आचरण रखूँगा। पिताजी! थोड़ी देर पहले आप मुझे पिशाच के समान मालूम होते थे, किन्तु अब आपके वचन सुनकर मेरी दृष्टि ऐसी स्वच्छ हो गई है कि आप मुझे ईश्वर के समान पवित्र मालूम होते हैं। ''जहाँ सत्य है वहीं ईश्वर है'' यह बात मैं आज समझ सका। आप धन्य हैं जो सत्य-व्रत के सम्मुख पुत्र-प्रेम को हेय समझते हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ और प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में मैं सत्य का पालन करूँगा। यदि मैं अपने इस व्रत का पालन ठीक तरह से न कर सकूंगा तो

प्राण त्याग दूंगा। अब आपकी इच्छा पर निर्भर है, कि आप चाहे जीवन दो या मृत्यु।''

राजा ने कहा- ''हम अपराधी को इसीलिए दण्ड देते हैं कि वह भविष्य में अपराध न करे। किन्तु यदि कोई अपराधी सच्चे दिल से अपने अपराध पर पश्चात्ताप कर ले, तो हमें उसे छोड़ देने पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। मैं तुम्हारे विश्वास दिलाने पर इसे छोड़ता हूँ कि यह अब तुम्हारे आदर्श से पवित्र बन जाएगा।''

पहले के राजा लोग अपराधी को कुमार्ग से सन्मार्ग पर लाने के लिए दण्ड दिया करते थे। आजकल की तरह जेलों में ठूंसकर केवल बन्दियों की संख्या बढ़ाना उन्हें अभीष्ट नहीं था। वे राज्य में शान्ति और प्रजा को सुखी बनाने के इच्छुक रहा करते थे। यदि अपराधी सच्चे हृदय से अपने अपराध का पश्चात्ताप करने, भविष्य में फिर अपराध नहीं करने की प्रतिज्ञा करता तो उसे क्षमा कर दिया जाता था। ऐसी उदारता का प्रभाव मनुष्य के मन पर पड़ा करता है और भविष्य में वह कुमार्ग पर चलने की इच्छा नहीं करता। इसके विरुद्ध आधुनिक समय के लिए सुना जाता है कि प्रमाणाभाव से अपराधी को अपराध करते हुए भी चाहे छोड़ दिया जाए किन्तु अपराधियों के पश्चात्ताप और भविष्य में अपराध न करने की प्रतिज्ञा की कोई सुनवाई नहीं होती, बल्कि उन्हें जेल भेजकर या शारीरिक और आर्थिक दण्ड देकर निर्लज्ज बना दिया जाता है। निर्लज्ज हो जाने पर अपराध करने से भय नहीं होता और प्राय: अपराधी की आयु अपराध करने में ही व्यतीत होती है। सारांश यह है कि ऐसा होने पर न तो राजा को ही शान्ति मिलती है, न प्रजा को ही और जिस अभिप्राय से अपराधी को दण्ड दिया जाता है, फल उसके विपरीत होता है।

अस्तु, राजा ने सेठ को नगर-सेठ बनाया। राजा को यह विश्वास था कि आवश्यकता पड़ने पर यह सेठ मुझे सच्ची सम्मति ही देगा, झूठी नहीं।

पूर्वकाल में राजा लोग सत्यवादी की ही प्रतिष्ठा करते थे। झूठे की नहीं, लेकिन आजकल तो विशेषत: वे ही लोग राजा के प्रतिष्ठा-पात्र हो सकते हैं जो झूठ बोलने में निपुण हों, झूठी प्रशंसा करना, हाँ में हाँ मिलाना और दूसरे की निन्दा करना जिन्हें अच्छी तरह आता हो।

सत्य के प्रताप से सेठ ने नगर-सेठ का पद प्राप्त किया, दण्ड पाते हुए पुत्र को बचा लिया और अपने दुराचारी पुत्र को सदाचारी भी बना लिया।

सत्य मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान कठिन और फूलों के बिछौने पर सोने के समान सरल है। इसमें प्रकृति की भिन्नता का अन्तर है। ऐसे मनुष्य भी हैं जो अकारण ही असत्य बोलते हैं और सत्य-व्यवहार को तलवार की धार पर चलने के समान कठिन मानते हैं। उनका विश्वास है कि सत्य व्यवहार करने वाला मनुष्य संसार में जीवित ही नहीं रह सकता। दूसरे ऐसे भी मनुष्य हो चुके हैं और हैं जो असत्य व्यवहार करने की अपेक्षा मृत्यु को श्रेष्ठ मानते हैं। सत्य-व्यवहार उनके लिए फूलों की सेज है, फिर उस मार्ग में उन्हें चाहे कितने ही कष्ट हों, उनकी परवाह किए बिना ही प्रसन्नतापूर्वक अपने मार्ग पर चलते जाते हैं।

साभार- उदाहरण माला भाग-1

प्रिय पाठको,

सादर जय जिनेन्द्र!

आप सभी को सूचित किया जाता है कि श्रमणोपासक में प्रकाशन हेतु किसी भी जानकारी व आपके क्षेत्र के समाचार प्रेषित करने हेतु मोबाइल नम्बर- **8955682153** पर सम्पर्क करें। यह मोबाइल नम्बर सिर्फ श्रमणोपासक प्रकाशनार्थ सामग्री भेजने हेतु उपयोग में लेवें। अगले अंक हेतु आपके क्षेत्र के समाचार इसी मोबाइल नम्बर पर ही भिजवाने का कष्ट करें। आप अपने समाचार हमें ई-मेल : **news@sadhumargi.com** द्वारा भी भेज सकते हैं। श्रमणोपासक के लिए उपरोक्त मोबाइल नम्बर व ई-मेल पर भेजे गए समाचार ही मान्य होंगे।

-सह-सम्पादिका

15-16 मार्च, 2022

महावीर-वाणी का अनन्त आनन्द

–परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री नानालालजी म.सा.

श्री महावीर नमो वरनाणी,
शासन जेहनो जाण रे प्राणी।
धन-धन जनक सिद्धारथ राजा,
धन त्रिशलादे मात रे प्राणी।
ज्यां सुत जायो गोद खिलायो,
वर्धमान विख्यात रे प्राणी।
प्रवचन सार विचार हिया में,
कीजे अर्थ प्रमाण रे प्राणी।

प्रार्थना के माध्यम से शासनाधीश प्रभु महावीर को स्मृतिपटल पर लाने का प्रसंग आ गया है। प्रभु महावीर का इस जगतीतल पर जो उपकार है, वह अवर्णनीय है। मानव-जाति आज जो-कुछ भी शान्ति का यत्किंचित् अनुभव कर रही है, परिवार, समाज और राष्ट्र के बीच यत्किंचित् भी जो शान्ति की मात्रा एवं सहयोग की भावना चल रही है, वह सब प्रभु महावीर की महिमामय वाणी की देन है।

स्वयं कठोर संयम एवम् तप के मार्ग पर चल कर महावीर ने परम आत्मशुद्धि प्राप्त की तथा उस शुद्धि के साथ उन्होंने देशनाएँ दी। **ये देशनाएँ ही वह मार्गदर्शन है जिसे समझ कर आज की भव्यात्माएँ दृढ़प्रतिज्ञ बन कर आत्म-विकास की यात्रा पर प्रयाण कर सकती हैं। उन देशनाओं को, उन सत्सिद्धान्तमय उपदेशों को गणधरों ने सुरक्षित रखा और बाद में आचार्यश्री सुधर्मा स्वामी की परम्परा ने इन पवित्रतम सिद्धांतों की सुरक्षा की। इसी के परिणामस्वरूप आज महावीर-वाणी से सारा संसार प्रभावित हो रहा है।**

'महावीर-वाणी' सैद्धान्तिकता एवं वैज्ञानिकता का मक्खन है

जैन सिद्धांतों में जिस रूप में दार्शनिक तत्त्वों का वर्णन एवम् विश्लेषण आया है तथा जिस प्रकार से उनका वैज्ञानिकता और युक्तिसंगतता के साथ विवेचन किया गया है, वैसा वर्णन, विश्लेषण और विवेचन अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता है। जिन महानुभावों को वंश-परम्परा से इन सिद्धांतों का परिचय मिला है, उन्हें कितना प्रसन्न होना चाहिए ! उन्हें कितना हर्षोल्लास का अनुभव होना चाहिये कि एक दुर्लभ वाणी उन्हें सहज ही में प्राप्त हो गई है ?

जहाँ महावीर-वाणी का अनन्त आनन्द सारे संसार को प्रेरित कर रहा है, वहाँ महावीर के परम्परागत अनुयायियों को तो आगे बढ़कर इस वाणी के गहरे तत्त्वों का अध्ययन करना चाहिये, उनको हृदय में उतारना चाहिये तथा अपने आचरण- आदर्श से संसार के सन्तप्त मानवों को प्रभावित बनाकर महावीर-वाणी के माध्यम से शान्ति प्राप्त कराने का प्रयास करना चाहिये। आज पूर्व और पश्चिम के समस्त दार्शनिक साहित्य को टटोलें, तब भी उसमें वह कल्याणकारी तत्त्व नहीं मिलेगा, जो महावीर-वाणी के शब्द-शब्द और अर्थ-अर्थ में समाया हुआ है।

सच पूछें तो महावीर-वाणी सदाशय की ओर उन्मुख सैद्धान्तिकता एवं वैज्ञानिकता का मक्खन है- सारभूत है। महावीर के अनुयायियों के लिये यह दयनीय और चिन्तनीय स्थिति है कि ऐसी आत्मोत्कर्षकारी वाणी को न तो वे स्वयं गहराई से समझ कर अपने जीवन में उतारने का गंभीर अभ्यास कर रहे हैं और न ही वे उसके समुचित प्रसार का सुन्दर प्रबन्ध कर पा रहे हैं जिससे कि संसार के जिज्ञासु एवम् विकासाकांक्षी जीवों को मार्गदर्शन मिल सके। कई विद्वान साहित्य का निर्माण कर रहे हैं और पुस्तकें लिख रहे

हैं, वे गन्ने के समान हैं जिसमें कचरा ज्यादा और रस अत्यल्प होता है, जबकि महावीर-वाणी के एक सूत्र में जितना जीवन्त सार मिलता है, उतना हजारों पुस्तकों में भी नहीं। ऐसे मक्खन की तरफ नहीं जाकर जो कचरे की तरफ बढ़ता है, उसकी बुद्धि को क्या कहें ?

महावीर-वाणी उस स्वतंत्र खोज का परिणाम है, जो उनके अपने जीवन के सर्वांगीण विकास से उद्भूत हुई। कठोर साधना से उन्होंने अनन्त आत्मिक शक्तियों का प्रकटीकरण किया और उन शक्तियों के प्रकाश में केवलज्ञान की प्राप्ति करके उन्होंने अपना स्वतंत्र दर्शन दिया। **केवलज्ञान के प्रकाश में उन्होंने संसार के समस्त दृश्य एवं अदृश्य पदार्थों का तथा तत्त्वों का अवलोकन किया, उनके वास्तविक स्वरूप को समझा तथा आत्मा की यथार्थ उन्नति के लिये सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। वे परिपूर्ण सिद्धान्त न केवल दर्शन की कसौटी पर खरे उतरे हैं, बल्कि विज्ञान की कसौटी पर भी खरे उतरे हैं।** इसी कारण उनमें सामयिकता नहीं, बल्कि शाश्वतता है। वे सदाकाल सच्ची शान्ति चाहने वाले जीवों को सही मार्गदर्शन देते रहेंगे।

अनन्त ज्ञान एवं अनन्त शक्ति से उद्भूत वाणी : महावीर-वाणी

आज किसी व्यक्ति को जातिस्मरण ज्ञान हो जाता है तो चारों ओर आश्चर्य फैल जाता है। जातिस्मरण ज्ञान का तात्पर्य है पूर्वजन्म की बातों को बतलाने वाली ज्ञान की पद्धति। आये दिन अखबारों में समाचार निकलते हैं कि अमुक बच्चे ने अपने पूर्वजन्म की बातें बतलाई हैं। इसके संबंध में काफी गहराई से जाँच-पड़ताल होती है और तथ्यों की सत्यता स्थापित की जाती है। इस विज्ञान को परा-मनोविज्ञान की संज्ञा दी गई है। इसे बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। जब परमाणु की खोज की गई तो उसे वैज्ञानिकों ने बहुत बड़ी खोज माना। ये सब चीजें अनन्त ज्ञान एवं अनन्त शक्ति के धारक महावीर प्रभु के लिये अत्यन्त साधारण थी। आज का यह सारा ज्ञान उनके समक्ष समुद्र में एक बूंद के तुल्य भी नहीं है।

महावीर ने अध्यात्म विज्ञान को इस परिपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया कि उसमें संसार के सारे विज्ञान समाहित हो जाते हैं। इसको देखने और समझने की दृष्टि होनी चाहिये। यह दृष्टि भी आत्मानुभूति से प्रबुद्ध बनी हुई हो। फिर कोई प्राकृत भाषा में लिखित महावीर-वाणी के सूत्रों का पाठ करे, उनके भावार्थ की गहराई में उतरे तो वह ज्ञान की प्रखर ज्योति में सच्चे आन्तरिक आनन्द को प्राप्त कर सकता है। जो इनमें आनन्द नहीं ले पाता है, वह आधुनिक साहित्य को टटोलता है और आगम की अमूल्य निधि को छोड़कर इधर-उधर भटक जाता है। यह उसके विवेक का दोष होता है क्योंकि जिस व्यक्ति को उस वाणी को साधने की विधि मालूम नहीं हो तो वैसा व्यक्ति उनका अध्ययन कैसे कर सकता है तथा कैसे आन्तरिक आनन्द ले सकता है ?

एक दुःखी व्यक्ति को दुःख में झूलते हुए किसी समझदार पुरुष ने देखा तो कहने लगा– 'भाई! इस प्रकार रोता-चिल्लाता क्यों है? तुझे क्या दुःख है?' 'उसने कहा–दुःख एक हो तो बताऊं, यहाँ तो हजार दुःख हैं।' तब समझदार पुरुष ने कहा-बसन्तपुर के नरेश बड़े दयालु हैं, वे सबका दुःख दूर करते हैं, तुम भी वहीं चले जाओ। वह दुःखी व्यक्ति बसन्तपुर पहुँच गया और राजा के सामने गिड़गिड़ाकर कहने लगा–मुझे चारों ओर से दुःख ही दुःख हैं, महाराज आप मुझे सुखी बना दीजिये। राजा ने भंडारी को उससे एक बहुमूल्य रत्न देने का आदेश दिया। भंडारी ने बहुमूल्य रत्न उसे दे दिया। वह वहाँ से वापिस चला तो बड़ा दुःखी हो रहा था कि मैं इसका क्या करूंगा ? मेरे दुःख मिटने का तो कोई लक्षण ही दिखाई नहीं दे रहा है। सबसे पहले भूख मिटाने की गरज से उसने रत्न को दाँतों से चबाना चाहा, मगर उल्टा उसका दाँत टूट गया। वह तो और अधिक दुःखी हो गया। तब उसको एक जौहरी मिल गया। उसने सारी कहानी जानकर कहा कि यों भूख कैसे मिटेगी ? इसके लिये विधि से चलो। यह रत्न तो सवा

लाख का है मगर इसको गिरवी रख दो और 20-30 हजार रुपये लेकर अपनी भूख भी मिटाओ तथा व्यापार शुरू कर दो। इस एक रत्न से तो तुम अत्यन्त समृद्धिशाली बन जाओगे। इसलिये कोई भी कार्य विधि से सम्पन्न होता है। भोजन की सारी सामग्री हो मगर विधि नहीं हो तो क्या उस सामग्री का सही तरीके से उपभोग किया जा सकेगा ? उसी प्रकार महावीर-वाणी का विधि से अध्ययन-मनन किया जायेगा तो ज्ञान के कई रत्न उपलब्ध हो सकेंगे।

महावीर-वाणी अनन्त ज्ञान और अनन्त शक्ति से उद्भूत वाणी है तथा इसको जो भी गंभीरतापूर्वक आत्मसात् कर लेता है, वह भी अनन्त ज्ञान एवं अनन्त शक्ति का स्वामी बन सकता है। विकास-सूत्रों से परिपूरित यह वाणी ऐसी अमूल्य है कि इसे जीवन में उतार कर आत्मा परमात्म पद तक पहुँच सकती है।

आत्म-विकास के पथ पर शान्ति और आनन्द कहाँ ?

क्या आज की दुनिया सुखी बनना चाहती है ? क्या वह सच्चा आनन्द लेना चाहती है। ज्ञानी और सन्तजन बतलाते हैं कि इस महावीर-वाणी में अपार आनन्द भरा हुआ है। यह महावीर-वाणी ही वीतराग-वाणी है–जिन्होंने अत्यंत कठिनाई से त्याज्य राग को भी समाप्त कर दिया, उन आप्त पुरुषों की वाणी है। इस वाणी की, इसके गूढ़ ज्ञान की क्या किसी से तुलना की जाय ? इस वाणी से जागृति ग्रहण करके जो आत्म-विकास के पथ पर चल पड़ता है, वह उत्कृष्टता की सीमा पर पहुँच कर सच्ची शान्ति और सच्चे आनन्द को प्राप्त कर लेता है। सिवाय वीतराग-वाणी के आत्म-विकास के पथ पर शान्ति और आनन्द कहाँ ?

महावीर-वाणी के अमृत को जो अपनी आत्मा के कण-कण में रमा लेता है, वह एक जन्म के क्या, जन्म-जन्मान्तरों के दुःखों को नष्ट कर देता है। इस बात को लेकर मेरे भाई कभी शास्त्रों को लेकर बैठ जाते हैं और उनका अध्ययन करते हैं–उनको कंठस्थ भी कर लेते हैं। फिर किसी से पूछें कि क्या तुम्हें शान्ति मिली ? वह उत्तर देगा मैंने शास्त्रों को कंठस्थ भी कर लिया, फिर भी जो शान्ति चाहता था, वह नहीं मिली–जिस उल्लास को पाने के लिये मन आतुर था, वह उल्लास नहीं आया। जानते हैं, ऐसा क्यों हुआ ? जिस विधि से शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिये, उस विधि से जब तक उनका अध्ययन नहीं किया जायगा, तब तक वांछित शान्ति और उल्लास की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। कंठस्थ करने से ही शास्त्राध्ययन नहीं हो जाता है। शास्त्रों के अर्थ की गहनता में जाना चाहिये तथा चिन्तन के माध्यम से खोज करनी चाहिये कि मूल तत्त्व कहाँ और किस रूप में छिपा हुआ है। यह ज्ञान की ऐसी विशाल निधि है, जिसका सम्पूर्ण उद्घाटन बड़े-बड़े आचार्य भी नहीं कर पाये।

ठाणांग सूत्र की टीका आरंभ करते हुए टीकाकार ने लिखा है कि मेरे पूर्वपुरुष इस सूत्र का उद्घाटन नहीं कर पाये, वे डरते रहे, लेकिन मैं साहस करके, धृष्टता करके इसका उद्घाटन कर रहा हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि शास्त्रों का भाव, भाषा व शैली को समझकर उनके गूढार्थ में गहरे उतरने वाले विरले ही मिलते हैं। इसी कारण सामान्य दृष्टि से शास्त्र-वाचन एवं आत्म-विकास का सच्चा ज्ञान दुर्बोध होता जा रहा है। परिणामस्वरूप जीवन की वृत्तियां बिखर रही हैं तथा मन चंचल बनकर भटक रहा है। सामान्य जन त्राहिमाम्-त्राहिमाम् कर रहे हैं। जहाँ कल्पवृक्ष के समान महावीर-वाणी है, विधि एवं विवेक के अभाव में उसका सही उपयोग नहीं हो पा रहा है–यह वैसा ही है जैसा कि पानी पास में होते हुए भी प्यासे मरना। महावीर-वाणी के अनुसार आत्म-विकास के पथ पर चलें तो शान्ति और आनन्द का पार नहीं है।

महावीर-वाणी के चार मुख्य मुद्दे

वैसे तो महावीर प्रभु ने संसार, आत्मा तथा परमात्मा के स्वरूप पर अनेकानेक सिद्धान्तों को स्पष्ट किया है,

सारी प्रक्रियाओं का सूक्ष्मता से विवेचन किया है, किन्तु यहाँ अतिसंक्षेप में चासनी के तौर पर महावीर के चार मुख्य मुद्दों पर हल्की-सी रोशनी डालें जिससे यह ज्ञात हो सके कि यह वाणी कितनी रत्नगर्भा है ? ये चार मुख्य मुद्दे ले रहे हैं-कर्मवाद, अपरिग्रह, अहिंसा तथा अनेकान्तवाद।

कर्मवाद का सिद्धान्त बहुत ही गहरा सिद्धान्त है। इसके माध्यम से संसार में जड़-चेतन के स्वरूप, कर्मबंध, उदय एवं क्षयोपशम की प्रक्रिया तथा मोक्ष के लक्ष्य का गंभीर अध्ययन हो जाता है। इसको सरलता से समझिये कि संसार में केवल दो तत्त्व हैं- जड़ और चेतन (अजीव और जीव)। संसार में जो हलन-चलन और रौनक दिखाई देती है वह जड़ और चेतन के सम्मिलन से है। कोरा जड़ तो निर्जीव होता है लेकिन चेतन के साथ लग कर वह क्रियाशील हो जाता है। कार्मण वर्गणा के पुद्गल (कर्म) जड़ होते हैं जो आत्मा की शुभता और अशुभता के अनुसार उससे संलग्न हो जाते हैं तो उनके फलस्वरूप आत्मा शरीर धारण करती है। जीव और अजीव मिलते हैं तो यह जीव के लिये बन्धन होता है। उनकी सक्रियता से कर्मों का बंध होता है। बंध शुभ हुआ तो वह पुण्य तथा अशुभ हुआ तो पाप होता है। आश्रव की प्रक्रिया से कर्म आते हैं तो संवर से रोके जा सकते हैं। निर्जरा के माध्यम से कर्मों का उपशम और फिर क्षय भी होता है। कर्मों के संपूर्ण क्षय के साथ ही जड़ से चेतन मुक्त हो जाता है–बन्धन से छूट जाता है-यही मोक्ष है। मोक्ष को ही आत्मा का लक्ष्य माना गया है तथा जब आत्मा मोक्ष पा लेती है तो परमात्मा बन जाती है।

आत्मा बन्धनों से छूटेगी तो कैसे ? उसका सबसे बड़ा बन्धन होता है ममता का। ममता यानी मोह और मोहनीय कर्म ही आठों कर्मों का राजा कहा है। यही कर्म बहुत चिकना होता है। ममता मूर्च्छा होती है और मूर्च्छा का ही नाम परिग्रह है।

'मुच्छा परिग्गहो'- मूर्च्छा ही परिग्रह है और अगर मूर्च्छा न रहे तो सारा द्रव्य-परिग्रह सोना-चांदी धन, सम्पत्ति आदि धूल बराबर हो जाते हैं। इसीलिये महावीर ने परिग्रह त्यागने की बात कही, मूर्च्छा को छोड़ने का उपदेश दिया। यह सिद्धान्त अपरिग्रहवाद कहलाता है। भावना से परिग्रह का मोह त्यागें। द्रव्य-परिग्रह को साधु पूर्णरूप से छोड़े, श्रावक उसकी मर्यादा बांधे। ममता छूटेगी तो आत्मा में समता जागेगी, व्यक्ति का जीवन नैतिकता और त्याग वृत्ति पर आधारित बनेगा और परित्याग करने व मर्यादाएँ ग्रहण करने से पदार्थों का सारे समाज में सुखद विकेन्द्रीकरण हो सकेगा। अपरिग्रहवाद से व्यक्ति साम्ययोग की तरफ बढ़ेगा तो समाज समतामय बन जायेगा।

व्यक्ति एवं समाज का अभ्युदय आचरण से होगा और आचरण का मूल माना है महावीर ने अहिंसा को। यह अहिंसा पद्धति बहुत गहरी है। अहिंसा के दो पहलू हैं—निषेध रूप और विधि रूप। हिंसा नहीं करना- यह निषेध रूप है तो इसका विधि रूप है रक्षा करना। किसी के प्राणी का व्यतिरोपण मत करो, सबके प्राणों को सच्चा सुख पहुँचाओ, जीओ और जीने दो- यह अहिंसा का सन्देश है। महावीर ने अहिंसा को काया की सीमा तक ही नहीं रखा है, बल्कि उसका वचन और मन में भी समावेश किया है। वचन से किसी को क्लेशकारी बोल न कहो तो मन से भी किसी को कष्ट देने की मत सोचो। मन, वचन और काया में अहिंसा रम जाय तो वह अहिंसक यथार्थ में छः काया के जीवों का प्रतिपालक बन जायेगा।

आचरण में ऊँचे सोपानों पर चढ़ते हुए सत्य का दर्शन करने की ललक जागती है तथा सत्य के सर्वांश का दर्शन कराने वाला महावीर का अनुपम सिद्धान्त है अनेकान्तवाद, स्याद्वाद या सापेक्षवाद का सिद्धान्त। अन्धों द्वारा हाथी का वर्णन करने की कहानी आप जानते होंगे। जितना एकान्तवाद है-यह ऐसा ही है, वह सब अन्धापन है। ऐसा भी है-यह सत्य जानने की जिज्ञासा है। प्रत्येक के कथानक में कुछ-न-कुछ सत्यांश होता है किन्तु दुराग्रह में पटक दिये जाने से वह सत्यांश भी मिथ्या हो

जाता है और यदि विचारों को समझने की चेष्ठा की जाय तो कई सत्यांशों के मिल जाने से पूर्ण सत्य के दर्शन किये जा सकते हैं। यह विचार-समन्वय का सिद्धान्त है जो विचार-संघर्ष को टालता है। सबके विचारों को सुनो, जानो और अच्छाइयों को ग्रहण करो। यह सत्य की ओर गति करने की प्रेरणा है।

इस प्रकार महावीर-वाणी का एक-एक सिद्धान्त इतना गहरा, इतना कल्याणकारी और इतना सारभूत है कि सच्चे हृदय से आत्मा यदि एक सिद्धान्त को भी अपना ले तो वह अपार आनन्द से लाभान्वित हो सकती है।

महावीर के सिद्धान्तों पर व्यापक शोध और अन्वेषण

प्रभु महावीर की वाणी का जिन्होंने अधिक गहराई से अध्ययन किया है और उसमें व्यापक शोध और अन्वेषण जो आज भी कर रहे हैं, वे स्वयं जैन धर्मानुयायियों एवं भारतीयों से भी अधिक विदेशी लोग हैं। मुझे श्री जेठमलजी ललवाणी ने बताया (जो विदेशों में रहते हैं) कि जर्मनी में जैन ग्रंथों पर व्यापक रूप से शोध और अन्वेषण हो रहा है तथा वे अपने गंभीर अध्ययन के निष्कर्ष भी निकाल रहे हैं। विदेशों में अधिकांशतः तो भौतिकवेत्ता हैं, लेकिन कहा जाता है कि वे जिस क्षेत्र में भी शोध करना आरंभ करते हैं, उसमें बड़ी बारीकी और गहराई से काम करते हैं। भारत में भी कई अध्येता जैन शास्त्रों में गहरी रुचि ले रहे हैं तथा प्राचीन ग्रंथों की शोध का कार्य भी चल रहा है।

कर्मवाद, अपरिग्रहवाद, अहिंसा, अनेकान्तवाद आदि प्रमुख सिद्धान्तों के अलावा भी महावीर के इतने अन्य प्रभावकारी सिद्धान्त हैं जिन पर गहरी शोध की जाय तो नई-नई तात्त्विक समीक्षाएं ज्ञान में आ सकती हैं। मूलतः शास्त्रों को पढ़ने, समझने और गहरे उतरने की वृत्ति मंद पड़ती जा रही है और विशेष रूप से उन लोगों में, जो वंश-परम्परा से अपने को महावीर के अनुयायी मानते हैं। यह एक विडम्बना जैसी बात है। जो भी बुद्धिशाली व्यक्ति एक बार महावीर के किसी भी सिद्धान्त के बारे में जानकारी प्राप्त करता है, वह सारे सिद्धान्तों के बारे में अधिक से अधिक जानने की इच्छा करता है, किन्तु उसे यथायोग्य सामग्री नहीं मिल पाती है।

आज इस कर्तव्य को प्राथमिक कर्तव्य के रूप में देखना चाहिए कि महावीर-वाणी का अधिकाधिक प्रसार किया जाय-उसके सिद्धान्त के सम्बन्ध में व्यापक शोध एवं अन्वेषण की सुगम सुविधाएँ उपलब्ध कराई जायं। कई जैन संस्थाओं ने अब इस दिशा में भी रुचि लेनी प्रारंभ की है, किन्तु संगठित प्रयासों की आवश्यकता है ताकि सर्वसम्मत साहित्य का प्रकाशन हो, जिस से आधुनिक युग में महावीर के सिद्धान्तों से वर्तमान समस्याओं का सुन्दर समाधान निकाला जा सके और संतप्त मानवता को शान्ति प्रदान की जा सके।

कोई भी राष्ट्र या समाज दीर्घजीवी तभी बनता है जब वह अपनी ज्ञान-निधि की सुरक्षा भी करता है तथा उसकी प्रभाविकता को भी फैलाता है। **मनुष्य एक गतिशील प्राणी है और जो भी गति वह करता है, यदि उसके साथ उसका सम्यग्ज्ञान जाग्रत बना रहता है तो उसकी गति सदा स्वस्थ एवं श्रेष्ठ होती है।** फिर महावीर के सिद्धान्त तो स्थान और समय की सीमाओं से परे हैं। उनका प्रभाव सदाकाल एक-सा रहता है तो उनका क्षेत्र सम्पूर्ण मानव-जाति ही नहीं, समस्त प्राणी वर्ग है। ऐसे सिद्धान्तों के प्रसार में कार्य करना बहुत बड़ी धर्म दलाली है। इस कार्य से सारे विश्व की सेवा होती है।

स्वयं समाधान लें, दूसरों को समाधान दें !

यह महावीर-वाणी जिन्हें भी विरासत में मिली है, वे सब और वे सहृदय व्यक्ति भी, जो इस वाणी में गहरी अभिरुचि रखते हैं–विश्व के कल्याण की भावना से महावीर के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में कोई जिज्ञासा या शंका उत्पन्न हो तो अपने से विशिष्ट ज्ञानी के पास जावें और

संतोषजनक समाधान प्राप्त करें तथा निर्द्वन्द्व हृदय से उनका प्रचार-प्रसार करें एवं दूसरे लोग जो भी जिज्ञासाएँ या शंकाएँ प्रस्तुत करें, उनका वे उनको सुन्दर समाधान दें।

किन्तु समाधान की स्थिति तभी आवेगी, जब पहले शास्त्रों और सूत्रों का स्वयं गहराई से अध्ययन कर लेंगे। पहले स्वयं ज्ञान लेंगे तभी ज्ञान का प्रसार कर सकेंगे। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक छोटा-बड़ा, तरुण-वृद्ध ज्ञान-पिपासु बन कर महावीर-वाणी के अन्तस्थल में प्रवेश करने का प्रयास करें। आज जो अपने-आप को महावीर-वाणी के अधिकारी मानते हैं, सोचिये कि कहाँ जाकर खड़े होंगे ? आज की दुनिया भौतिक विज्ञान की प्रगति के साथ छोटी हो गई है। कल्पना करें कि आप किसी जर्मनी के अध्येता के सामने खड़े हों और उसे मालूम हो जाय कि आप जैन हैं, तो वह तत्त्वों की अधिक गहराई जानने के लिये आपको जैन फिलॉसफी के बारे में प्रश्न पूछे, तब बताइये कि आप कैसा अनुभव करेंगे ? आज की आपकी ज्ञान-दशा पर आपको ही चिन्तन करना चाहिये। वह जर्मन शोधकर्ता आप को पूछे कि जैन फिलॉसफी का मूल मंत्र क्या है तो आप उस को क्या बता पायेंगे ? ज्यादा से ज्यादा शब्दों का उच्चारण कर देंगे कि णमो अरिहंताणं आदि और वह भी शुद्ध कर पायेंगे या अशुद्ध-यह आप जानें। नमस्कार मंत्र में कितना सार और तत्व भरा हुआ है और उसके गूढ़ अर्थ की किस रूप में मीमांसा की जा सकती है-यह तो आप बिना अपने गहरे अध्ययन के दूसरों को भला कैसे बता पायेंगे ?

आवश्यकता आज गहरी हो गई है कि आप जैन सिद्धान्तों के विषय में आपको प्राप्त परम्परागत ज्ञान से आगे बढ़ें। यह एक सामान्य स्थिति है और उसमें आवश्यक गतिशीलता का अभाव आ गया है। अब इस दिशा में नये प्रयत्न अनिवार्य बन गये हैं। विस्तृत ज्ञानाभ्यास में आपका परम्परागत ज्ञान भी पृष्ठभूमि का काम करेगा, किन्तु नियमित अध्ययन का नियमित अभ्यास डालना होगा तथा उसके साथ ही चिन्तन की प्रणाली का विकास करना होगा। पढ़ेंगे और उस पर सोचेंगे तो स्वाभाविक रूप से नई-नई जिज्ञासाएँ उत्पन्न होंगी। इन्हीं जिज्ञासाओं का स्वयं समाधान लेते हुए चलेंगे तो आगे जाकर ऐसी ही जिज्ञासाएँ दूसरे लोग आपके सामने रखेंगे, तो आप उनके सन्तोष के अनुसार उनका समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति को सर्वत्र प्रसारित करने की आवश्यकता

महावीर-वाणी के स्वस्थ प्रसार का सुन्दर उपाय यही है कि **स्वाध्याय की नियमित प्रवृत्ति सर्वत्र प्रसारित की जाये। प्रत्येक ग्राम-नगर में आत्मार्थी व्यक्ति इस प्रवृत्ति का संचालन करें तथा प्रत्येक भावनाशील व्यक्ति स्वाध्यायी बने। नियम बना लिया जाये कि प्रतिदिन प्रातःकाल अमुक समय के लिये एक शान्त और एकान्त स्थान पर शास्त्रों का अध्ययन और मनन किया जायेगा।** इस स्वाध्याय की प्रवृत्ति का सीधा प्रभाव होगा कि ज्ञान-चर्चा की प्रवृत्ति भी चल पड़ेगी। स्वाभाविक रूप से पठित विषय पर चर्चा करने की वृत्ति जगेगी और फिर पारस्परिक विचारों के आदान-प्रदान से ज्ञान में अभिवृद्धि होगी।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति मन्द पड़ जाने से ही वर्तमान ज्ञान-दशा में मन्दता दिखाई दे रही है। स्वाध्याय के अभाव में ज्ञान दृष्टि में नवीनता और परिपक्वता नहीं आ पाती है। तब पारम्परिक ज्ञान भी कुछ-कुछ रूढ़-सा हो जाता है। नमस्कार मंत्र की माला फेरेंगे, तब भी शुद्ध-अशुद्ध उच्चारण भले कर लें, उस मंत्र के मर्म में जानने की चेष्टा कितने लोग कर पाते होंगे ? कई लोग नमस्कार मंत्र के पदों के साथ भी और कुछ जोड़कर उच्चारण करते हैं जैसे वे अपनी विद्वत्ता दिखा रहे हों। एक बाई ने मुझे मांगलिक देने को कहा—मैंने मंगल-पाठ सुना दिया तो वह बोली कि आपने तो मुझे छोटी मांगलिक ही दी—बड़ी मांगलिक नहीं दी। मैंने बाई को समझाया कि मूल मंगल-पाठ तो मैंने सुना दिया है, अब उसके साथ कई दूसरे बातें जोड़ कर सुनाई जाती हैं, वे मैं नहीं सुनाता हूँ, जो विधि है

उसमें मैं अपनी विधि नहीं लगाता हूँ। कहने का अभिप्राय यह है कि महावीर-वाणी की मौलिकता की रक्षा करते हुए उसकी आन्तरिकता का व्यापक रूप से प्रसार किया जाना चाहिये और उसकी तैयारी इस स्वाध्याय की प्रवृत्ति से तुरन्त शुरू कर देनी चाहिए।

स्वाध्याय की प्रवृत्ति स्वयं अपनाने से और सब तरफ फैलाने से महावीर-वाणी की आप शुद्ध सेवा कर सकेंगे। मैं आपको यह संकेत इसलिये दे रहा हूँ कि भगवान महावीर ने अपने उपदेशों से संपूर्ण जगत् का जो उपकार किया है, वह उपकार फिर सक्रियता ग्रहण करे तथा संसार के मुमुक्षु प्राणी इस वाणी के अमृत का रसास्वादन करके अपनी कल्याण-साधना संपादित कर सकें। इस दृष्टि से आप चिन्तन करें एवं क्रियाशील बनें।

श्री महावीर नमो 'वरनाणी', शासन जेहनो जाण रे प्राणी !

कवि ने प्रार्थना में आपको उद्‌बोधित किया है कि आप महावीर प्रभु को नमस्कार करें, लेकिन कैसे महावीर को ? ये महावीर वरनाणी हैं अर्थात् श्रेष्ठ ज्ञानी हैं। श्रेष्ठ ज्ञान की ऐसी प्रगतिशील दिशा उन्होंने दुनिया को दिखाई कि आज भी उनका धर्मशासन चल रहा है। आज हम सभी उनके शासनस्थ होकर जो चल रहे हैं, उसकी मूल प्रेरणा उनके श्रेष्ठ ज्ञान की प्रेरणा है।

श्रेष्ठ ज्ञान का उत्कृष्ट प्रतीक केवलज्ञान होता है। उससे बढ़कर और कोई ज्ञान नहीं होता; उसी तरह जैसे कि सूर्य के प्रकाश से बढ़कर और कोई प्रकाश नहीं होता। सूर्य के प्रकाश के सामने दीपक, बल्ब, ट्यूबलाइट, तारों और चन्द्र का प्रकाश भी फीका दिखाई देता है। वास्तव में तो श्रेष्ठ ज्ञानी को सूर्य की उपमा देना भी उनके योग्य नहीं है। इसीलिए मानतुंगाचार्य ने भक्तामर स्तोत्र में कहा है कि अनन्त सूर्यों के प्रकाश से भी श्रेष्ठ ज्ञान के दिव्य प्रकाश की तुलना नहीं की जा सकती। सूर्य का प्रकाश ताप देने वाला होता है और अधिक सूर्यों का ताप इकट्ठा हो जाय तो मनुष्य भस्म हो सकता है। लेकिन भगवान् का ज्ञान रूपी सूर्य ऐसा है, जिसका प्रकाश पाने पर आह्लाद उत्पन्न होता है, उल्लास जागता है और आन्तरिक आनन्द की वृष्टि होती है।

अनन्त आनन्द के सरोवर में

महावीर-वाणी के ज्ञान-चिन्तन से जब अनन्त आनन्दानुभव की श्रेष्ठता तक पहुँचा जा सकता है तो क्यों नहीं प्रत्येक ज्ञान-पिपासु उस सरोवर में अवगाहन करने का सुन्दर प्रयास करें ? जिस शीतलता से आपको आनन्द का अनुभव हो, उस शीतलता की दिशा में आगे बढ़ना स्वयं आपके लिये पहले हितावह है। आप शीतलता का अनुभव करेंगे तो दूसरों को भी अपने विषय-विकारों का शमन करके शीतलता की ओर बढ़ने की प्रेरणा दे सकेंगे।

ऐसे श्रेष्ठ महावीर भगवान के चरणों में भावपूर्वक वन्दन करें और श्रद्धा के साथ उनकी अमूल्य वाणी के अध्ययन और अन्वेषण में लगें। यदि ऐसा आह्लाद और उल्लास के साथ करेंगे तो आपको अमित और अनन्त आनन्द की प्राप्ति भी हो सकेगी।

साभार- मन की माला

श्रमणोपासक सूचना

देशभर में स्थापित समता भवनों हेतु श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक के पुराने अंकों को उपलब्ध करवाया जा रहा है। जिन समता भवनों में पुराने श्रमणोपासक अंकों की आवश्यकता हो तो मोबाइल नं. **9799061990** पर सम्पर्क करने का कष्ट करें। आपकी आवश्यकता अनुसार पुराने अंक नि:शुल्क उपलब्ध करवाने का प्रयास रहेगा। श्रमणोपासक संग्रहणीय पत्रिका है। इसके अध्ययन से सामाजिक, नैतिक उत्थान के साथ-साथ सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। अत: अतिशीघ्र ही सम्पर्क करने का कष्ट करें। **–श्रमणोपासक टीम**

महावीर का मंगल पथ

-परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा.

धर्म जिनेश्वर गाऊं रंग सूं,
भंग न पडशो हो प्रीत जिनेश्वर...

एक प्रश्न पूछा गया कि धर्म क्या करता है? यदि आपसे ही पूछ लें कि धर्म क्या करता है, धर्म का कार्य क्या है तो क्या जवाब होगा? मैं ही उत्तर दे देता हूँ। धर्म के दो काम हैं-मिटाना और यथावत् रखना।

इसे थोड़ा समझेंगे हम। **आत्मा पर पड़े मैल को मिटाना है। जो मैल लगा है, उसको हटाना और उसको साफ रखना, धर्म के दो काम हैं। जैसे मलीन वस्त्र को साबुन से साफ करके आलमारी वगैरह में रख देते हैं तो वह साफ बना रहता है, वैसे ही कर्मों की निर्जरा से आत्मा साफ होती है और संवर से वह सुरक्षित रहती है। उस पर कर्म रज लगती नहीं है।**

थोड़ा और बारीकी से विचार करेंगे। दीवार पर तेल लगा हुआ है। अभी नया-नया रंग, ऑयल पेंट लगाया जा रहा है। इतने में आँधी आए तो उसमें मिट्टी चिपकेगी या नहीं चिपकेगी? (प्रतिध्वनि-चिपकेगी) और एक ऑयल पेंट सूख चुका है। अब कितनी भी आँधी आ जाए, उस पर मिट्टी नहीं चिपकेगी। मिट्टी लगेगी पर चिपकेगी नहीं। जो मिट्टी लगेगी वह हवा के दूसरे झोंके से साफ हो जाएगी, हट जाएगी। वह मिट्टी झड़ जाएगी। तीसरा है कि उस पर ग्लास लगा दिया गया। अब दीवार को मिट्टी लगती नहीं है। ग्लास पर लगी मिट्टी दीवार पर नहीं लगेगी। ऐसा ही कार्य धर्म का है। हमारा एक पारिभाषिक शब्द है- संवर। इसका अर्थ होता है, कवर करना। आत्मा को ढक लेना। आत्मा को ढकने से कर्मों की रज उस आत्मा पर नहीं लगेगी। दूसरा कार्य, जो पहले लगा हुआ है, कर्म उसको झटकेगा।

कर्मों के दारुण वेदन की झलक यदि देखना चाहें तो दु:खविपाक सूत्र देखें। उसके एक अध्ययन में मृगालोढ़ा का वर्णन है। दुनिया में हमने भी बहुत-से स्थान देखे होंगे, बहुत-से लोगों को देखा होगा। धनाढ्य लोगों को भी देखा। सुख में जीने वाले लोगों को भी देखा है और दु:खी प्राणियों को भी देखा है। शोषण करने वालों को भी हमने सुना है। हम जान भी रहे हैं कि किस-किस प्रकार से लोग किस-किस का शोषण करते हैं। पोषण करने वाले पोषण भी करते हैं। हम जो भी क्रियाएं कर रहे होते हैं, मन से, वचन से, काया से, यह मत समझो कि केवल काया की प्रवृत्ति का ही कर्मबंधन होता है। मन से जो विचार किया जाता है और वचन से जो बोला जाता है, उससे भी कर्मों का बंध होता है।

हम भी कभी-कभी बड़े भयंकर कर्मबंध कर जाते हैं। हो सकता है कि काया से कोई प्रवृत्ति ही नहीं करें किंतु मन से जिसकी भयंकर प्रवृत्ति चल रही हो, किसी को मारने, प्रताड़ित करने, दु:खी करने, जैसे विचार चल रहे हों तो मानसिक रूप से भी वह कर्मों का बंध करने वाला होता है।

आचार्य पूज्य गुरुदेव जब दीक्षा के लिए तत्पर हुए। मुमुक्षु भाव जगा और घर में आग्रह होने लगा कि मेरा आज्ञा पत्र होना चाहिए, दीक्षा फाइनल होनी चाहिए। परिवार वाले करने को तैयार नहीं। मोह होता है, ममत्व होता है और जब तक अपना वश चलता है, उसे चलाया जाता है। गुरुदेव ने तेला कर लिया और कहा कि मैं पारणा तब तक नहीं करूंगा जब तक आज्ञा पत्र नहीं हो जाए। घर वालों ने लिख दिया आज्ञा पत्र। लिखकर उनको दे दिया।

उन्होंने पॉकेट में रख लिया। ठीक है, गुरु महाराज को ले जाकर सौंप दूंगा और वे पारणा करने के लिए बैठ गए। जैसे ही एक-दो घूंट लिया होगा भाई ने पॉकेट से आज्ञा पत्र को निकाला और फाड़ दिया। वे उठ गए।

उन्होंने कहा कि मेरा जब तक विधिवत् आज्ञा पत्र नहीं हो जाता है तब तक इस घर का अन्न-जल भी नहीं लूंगा। यह निश्चित है कि शरीर को टिकाने के लिए खुराक देनी पड़ेगी। जब तक चलेगा ठीक है। जिस दिन खाने की आवश्यकता होगी, खाना खाना ही होगा तो गाँव के दूसरे घरों से लाकर भोजन कर लूंगा। दूसरे घरों में भोजन कर लूंगा पर इस घर से कुछ भी नहीं खाऊंगा। वापस आज्ञा पत्र हो गया। अब क्लियर हो गया, अब स्पष्ट हो गया। हो सकता है उनकी कोई विशेष बात नहीं रही हो। एक विनोद की बात रही होगी कि चलो इसका पारणा हो गया, आगे देखेंगे अब।

एक छोटी-सी बात है यह किंतु ऐसे ही हम कितनी बातें मजाक-मजाक में, विनोद-विनोद में कर लेते हैं। मजाक में यदि कोई बात कही जाती है, उसके भी दुष्परिणाम होते हैं। एक घर में बेटा आया और माँ से कहता है कि माँ भूख लगी है, मुझे भोजन परोस दो। माँ कहती है कि बेटा छींके में पड़ा है, तू ही उतार कर ले ले। बेटे को खीझ आ गई। उसने खीझ में कहा कि तू उठकर नहीं दे सकती क्या, तुम्हारे पैर टूट गए? माँ भी जवाब देती है कि तुम्हारे हाथ टूट गए क्या जो तू छींके से भोजन नहीं उतार सकता? समझ नहीं होती है तो ऐसा बोला जाता है या यूं कहें कि ग्रामीण इलाकों में ऐसी भाषा सामान्य है। ऐसी भाषा भी कर्म बंधन कराने वाली होती है।

गुरु और शिष्य जा रहे हैं। दो अपराधियों को न्यायालय से न्याय मिलता है। दो अपराधी लगभग समान अपराध करने वाले किंतु एक को दंड दिया जाता है कि इसके हाथ काट दिए जाएं और दूसरे को दंड दिया जाता है कि इसके पैर काट दिए जाएं। आज ऐसी दंड विधा नहीं है। शारीरिक प्रताड़ना या शारीरिक अवयव के छेदन-भेदन का विधान नहीं है। मृत्युदंड अलग बात है किंतु शरीर से अपाहिज करने का मेरे खयाल से कानून में प्रावधान नहीं है। आप उसको जेल में रख सकते हो। आप उसको फाइनेंशियली, आर्थिक दृष्टि से दंड दे सकते हो किंतु अवयव का छेदन-भेदन नहीं कर सकते हो। किंतु एक जमाना ऐसा भी था। मेरे खयाल से बाहर कई देशों में ऐसा प्रावधान आज भी होगा। (सभा में ध्वनि- अरब देशों में अभी भी ऐसा प्रावधान है) बाहर के देशों में ऐसी भी स्थितियां बनती होंगी।

शिष्य ने गुरुदेव से पूछा, गुरुदेव दोनों का समान अपराध है फिर भी दंड में भिन्नता क्यों है? गुरु ने कहा, वत्स! हम केवल पेड़ के फलों को देख रहे हैं, उसके बीज को नहीं देख रहे हैं। हमको दिख रहा है कि यह दंड दिया गया है। हम केवल वर्तमान अपराध का ही महत्त्व समझ रहे हैं, किंतु केवल वर्तमान अपराध ही प्रधान नहीं होता है। उसके पीछे के कारण भी होते हैं। हम कई बार यह देखते हैं, लोगों को कहते हुए भी सुनते हैं कि मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया किंतु कुछ लोगों ने मुझे फँसा दिया है। सुनते हैं ना? (प्रतिध्वनि- हाँ) लोग बोलते हैं ना? (प्रतिध्वनि- हाँ) फँसा दिया है। तुमने अभी कुछ नहीं किया, फिर भी सरकार की दृष्टि में गुनहगार हो गए। इसका कारण क्या है? जब वर्तमान में मैंने कुछ भी नहीं किया फिर भी गुनहगार सिद्ध होता है तो इसके पीछे कोई न कोई कारण होगा। बिना कारण गुनहगार क्यों बन गया? बहुत स्पष्ट है कि पहले उसने किसी पर झूठा दोषारोपण किया होगा।

हम गजसुकुमाल मुनि की कहानी सुनते हैं। हमने यह भी सुना होगा कि सिर पर जो अंगारे रखे गए, वह 99 लाख भव पहले किए गए कर्मों का उदय था। कितने पुराने भव के कर्म? (प्रतिध्वनि-99 लाख भव पहले के कर्म) आपके खाते-बही कितने साल चलते हैं? आपका रिकॉर्ड कब तक मान्य किया जाता है? (प्रतिध्वनि- सात साल तक) सात साल और उसके बाद पुराने खाते हटा दें तो कोई बात नहीं है। किंतु यहाँ सात वर्ष ही नहीं, सात जन्म ही नहीं, 99 लाख भव। 99 लाख भवों का कर्जा, उस समय चुकाना पड़ा। हम क्या कर रहे हैं? एक-एक पॉइंट्स नोट हो रहे हैं। सीसीटीवी कैमरा या सेटेलाइट, हम जो भी कर रहे हैं, वहाँ पर रिकॉर्ड हो रहा है। हो रहा है या नहीं हो रहा

है? (प्रतिध्वनि- हो रहा है) वहाँ हमें कैच किया जा रहा है। उसमें सब चीजें स्पष्ट हो रही हैं।

वैसे ही हमारे द्वारा जो भी किया जाता है - चाहे मन से करो, वचन से या काया से। माँ ने बेटे से कहा था कि क्या तुम्हारे हाथ टूट गए जो छींके से रोटी स्वयं नहीं उतार पा रहा है? उस जीव ने जो अपराध किया है, उसको दंड मिला है कि उसके हाथ काट दिए जाएं और बेटे ने कहा कि तुम्हारे पैर टूटे गए हैं क्या? तुम उठकर क्यों नहीं दे रही हो? उसके बेटे के जीव को यह दंड मिला कि उसके पांव काट दिए जाएं।

बोओगे जैसा बीज, तरु वैसा लहराएगा।
जैसा करोगे, वैसा ही फल आगे आएगा।।

दुःखविपाक सूत्र के 10 अध्ययन इसी प्रकार अशुभ कर्मों के विपाक से भरे हुए हैं कि जीव किस तरह से दुःखी होता है। व्यक्ति कई तरह से कर्म करता है। हम जब विहार करते हुए किसी गाँव विशेष से निकलते हैं तो कहीं-कहीं कत्लखानों में बेशुमार जीवों की घात होती है। लोग कत्ल करते हुए नजर आते हैं। अभी उनको कुछ भी नहीं लग रहा है। काट रहे हैं। एक दिन में पता नहीं कितने जीवों की घात होती है। **सन् 2000 में जो सर्वे हुआ था, उसके रिकार्ड के अनुसार बताया गया कि 44 हजार करोड़ पशु और पक्षी काटे गए थे। आज भी कितने कत्लखाने सुनते हैं? लगभग 36 हजार कत्लखाने हैं। (प्रतिध्वनि- 36 हजार कत्लखाने वैध हैं, बाकी अवैध भी होंगे)**

उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने आते ही अवैध कत्लखानों को बंद कराने की तैयारी की। एक कत्लखाना बंद होता है तो कितने ही पशुओं का बचाव हो जाता है और एक नया कत्लखाना यदि चालू होता है तो कितने ही पशुओं का वध उसमें होने लगता है। दिल्ली स्थित एक कत्लखाने की प्रतिदिन की क्षमता कानूनन अढ़ाई हजार बड़े पशुओं को काटने की है। ढाई हजार पशु प्रतिदिन काटने की उसकी क्षमता है। एक पौंड अनाज तैयार होने में जितना पानी खर्च होता है, उससे 100 गुना पानी एक पौंड मांस के बनाने में खर्च होता है।

भगवान महावीर के सिद्धांतों के अनुसार यदि जीवन जीया जाता है तो अमन-चैन आ जायेगा। एक शोध के आधार से कल ही बताया गया है कि मांसाहार यदि बंद हो जाए तो प्रदूषण बंद हो जाएगा। कितनी बड़ी बात है? हम इसको कितना प्रचारित कर पाते हैं और इसके लिए कितना प्रयत्न कर पायेंगे, यह अब आप लोगों पर निर्भर है। भगवान महावीर ने कहा कि वेस्टेज किसी पदार्थ का नहीं होना चाहिए। एक गिलास पानी पीने के लिए लेते हैं, आधा गिलास पी लिया और आधा गिलास फेंकेंगे तो भगवान इसका निषेध करते हैं। पीने के लिए चार गिलास पानी भी पी सकते हैं, कोई बात नहीं है, कोई मना नहीं है। अगर आधा गिलास पानी पीना है तो आधा गिलास पानी ही लें। पानी वेस्ट नहीं होना चाहिए। पानी व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। भगवान महावीर ने कहा कि किसी भी पदार्थ की अवज्ञा नहीं होनी चाहिए, अवहेलना नहीं होनी चाहिए। चाहे निर्जीव पदार्थ भी क्यों न हो। एक कागज भी व्यर्थ में नहीं फाड़ा जाना चाहिए। आपको मालूम है कि कागजों के निर्माण में कितनी वनस्पतियों का नाश होता है? कितने पेड़ों को काटा जाता है, कितने बाँस के पेड़ों को काटा जाता है, तब जाकर आपके लिखने के लायक कागज बनता है।

हम जितने पदार्थों का दुरुपयोग करेंगे, वह कभी भी लाभ देने वाला नहीं होगा। अपनी वृत्ति को संक्षिप्त करो अर्थात् अपनी आवश्यकताओं को कम करो। यह जीने का तरीका भगवान महावीर ने बताया। जीने के लिए जो मूलभूत आवश्यकताएँ हैं उनके लिए मनाही नहीं है किंतु आज व्यक्ति आवश्यकताओं को बढ़ाते हुए चला जा रहा है, जो उचित नहीं। जब आवश्यकताएं बढ़ाना भी उचित नहीं तो वस्तुओं या पदार्थों को अनावश्यक नष्ट करना कथापि उचित नहीं है।

मुझे नहीं मालूम कि जोधपुर में विवाह-शादी के प्रसंगों पर कितने पदार्थ होते हैं और कितनी आवश्यकता होती है। बड़े-बड़े शहरों में डेढ़ सौ, दो सौ पदार्थ, आइटम्स बनते हैं। क्या वस्तुतः इतनी आवश्यकता होती है? क्या उतनी अपेक्षा होती है? जितनी आवश्यकताएं

बढ़ाएंगे हम उतनी ही हिंसा को न्योता देंगे। उतना ही वेस्टेज होगा। इसलिए हमें अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना चाहिए। वृत्ति को संक्षिप्त करना भी बताया गया है। हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करते हैं, इससे हमें लाभ होता है। हमारे कर्मों की निर्जरा होती है और नए कर्म आते हुए रुक जाते हैं। हम आवश्यकताओं को जितना फैलाते हुए चले जाते हैं, उतना ही हिंसा को न्योता देते हैं। उतना ही प्राणी वध करने की दिशा में हमारे कदम बढ़ते हैं। इसलिए हमें वृत्ति संक्षेप की ओर ध्यान देना चाहिए।

शालिभद्र के पास अपार संपत्ति थी किंतु आवश्यकताएं सीमित थीं। अपेक्षाएं नहीं थीं। मौज-शौक की बात नहीं थी। सिर्फ जीवन जीने की बात थी। एक तरफ मृगालोढ़ा को देखें दूसरी तरफ शालिभद्र को देखें। दोनों का अंतर हम स्वयं अनुभव कर पाएंगे। यह किसकी बदौलत है? कर्मों के कारण।

कर्मों के खेल निराले हैं।

ऋषि मुनि भी इससे हारे हैं।

बंधुओ! अशोक का अर्थ होता है, शोक रहित। कोई शोक नहीं। यह व्यवस्था तब होती है, जब हमारी अपेक्षाएं, हमारी आवश्यकताएं सीमित होती हैं। उद्यान का पर्यायवाची आराम होता है। आराम यानी जिसमें आत्मा रमण करे। जिसमें आत्मा रमण करे उसको उद्यान कहा गया है। शोक रहित आत्मा आत्मरमणता की ओर गति करती है। आत्मरमणता की ओर, आत्म-लीनता की ओर, आत्म परिसंलीनता तप की ओर हम अपनी आत्मा को बढ़ाने में समर्थ होंगे। ऐसे जो अपने आपको समर्थ बना लेता है, हो सकता है वह बहुत सारे कर्मों से हल्का हो जाए।

जैसा मैंने बताया कि ऑयल पेंट हो रहा हो और आंधी का एक झोंका आये तो ढेर सारे रेत के कण, ढेर सारी धूल उस दीवार पर लग जाए। वैसे ही जब हम कषाय करते हैं, क्रोध करते हैं, मान करते हैं, माया करते हैं, लोभ करते हैं, राग-द्वेष, ईर्ष्या, डाह, जैसी किसी भी प्रवृत्ति में जाते हैं, तो उस समय हमारी आत्मा की दीवार पर ऑयल पेंट हो रहा होता है। उस समय कर्मों की रज बड़ी तीव्र गति से आती है और आत्मा के साथ चिपक जाती है। उसके कड़वे परिणाम, दारुण परिणाम आत्मा को भोगने पड़ते हैं।

श्रावक के 12 व्रत हैं। उस पर समीक्षा करेंगे तो संदेश मिलेगा कि अपनी आवश्यकताओं का परिमित करो, सीमित करो। अपना फैलाव सीमित करो। फैलाव ही करना है तो दिल का फैलाव करो। दिल की उदारता होनी चाहिए। दिल इतना उदार होना चाहिए कि सारा विश्व हमारे दिल में समा जाए। **'वसुधैव कुटुंबकम्।'** पूरी दुनिया, पूरा विश्व हमारे दिल में समा जाए। **हम अपनी अपेक्षाओं को इतनी सीमित करें कि इस सृष्टि से थोड़ा सा लेकर मैं अपने जीवन का निर्वाह कर सकूं। बस केवल मैं अपने लिए सीमित अन्न-जल-वस्त्र आदि ग्रहण करके अपने जीवन को चलाऊंगा। इस प्रकार का लक्ष्य वृत्ति संक्षेप से बनता है।**

भगवान महावीर ने दो प्रकार का धर्म बताया। एक तो अणगार धर्म, दूसरा आगार धर्म। स्थूल प्राणातिपात विरमण, यह आगार धर्म और अणगार धर्म में सर्वथा प्रकार से प्राणातिपात का त्याग करना होता है। अर्थात् सूक्ष्म से सूक्ष्म, छोटे से छोटे प्राणी की भी घात हमारी किसी भी प्रवृत्ति से नहीं होनी चाहिए। अब आज के युग की एकदम छोटी-सी बात है, किंतु एक फोटो क्लिक करने में तेउकाय के असंख्यात जीवों की घात होती है। दिन में मोबाइल कितनी बार चलता है? आवश्यकता से चलता है या बिना आवश्यकता के भी चलता है।

सोचने की बात है कि ये चीजें हमारी संवेदना को कम करने वाली हैं। जीवों के प्रति जो संवेदना हमारे भीतर होनी चाहिए, वह संवेदना हमारी क्षीण होती जा रही है। हम हरी घास पर बहुत खुले मस्तिष्क से, मस्ती से चलते हैं। मन में एक बार भी विचार नहीं आता है कि मैं कहाँ चल रहा हूँ। चलने के लिए जगह है तो फिर मैं हरी वनस्पति पर पाँव क्यों दूं?

ढेर सारे जीवों की घात करके हम क्या खाना गले उतारेंगे? एक छोटा-सा 12-13 वर्ष का बच्चा था। इंदौर

के सौरभ सिंघवी ने पच्चक्खाण ले लिया कि एक साल लॉन पर जाकर खाना नहीं खाऊंगा। एक जगह विवाह-शादी में ऐसा प्रसंग हुआ कि वहां विवाह के भोजन का आयोजन लॉन पर था। उसके अलावा दूसरी जगह ही नहीं थी जाने की। उसके पापा चले गए, मम्मी चली गई और उसको कहा कि अभी तो चले आओ, फिर आलोचना कर लेना, प्रायश्चित्त कर लेना। उसने कहा कि एक खाने के लिए मैं त्याग को छोड़ दूं और लॉन पर इतने सारे जीवों की घात कर दूं खाली खाने जैसी सड़ी चीज के लिए? मुझे ऐसा खाना नहीं खाना। ऐसा खाना ही नहीं खाना। उसके पापा बोले कि मैं लाकर दे दूं तो वह बोला कि आप लाकर भी दोगे तो मेरे लिए लाओगे। मैं ऐसा खाना नहीं खाऊंगा।

12-13 वर्ष के बच्चे के भीतर यह संवेदना है। 'छोटा छोटा बालूड़ा, आया धर्म की ओट' आप लोग बोल रहे हो तो किसको सुना रहे हो? कहते हैं कि सम्राट चन्द्रगुप्त को स्वप्न आये, जिसमें एक सपना था कि एक बैलगाड़ी माल से भरी हुई है और छोटे-छोटे बछड़े जुते हुए हैं। बड़े बैल नहीं हैं, छोटे-छोटे बछड़े जुते हुए हैं। उन्होंने भद्रबाहुस्वामी से उस स्वप्न का अर्थ जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि आने वाले समय में छोटे-छोटे लोगों में वैराग जगेगा। छोटे-छोटे बच्चों में वैराग जगेगा, भाव जगेगा और जिन शासन की गाड़ी को वे खींचने वाले बनेंगे। आप कहोगे कि इसीलिए बावजी हम तो बोलते ही नहीं हैं।

'छोटा छोटा बालूड़ा, आया धर्म की ओट' जो कहा गया है, वही बता रहा हूं मैं। वह छोटा बालक 12 वर्ष का, उस समय उम्र 12 वर्ष की थी। वह कहता है कि लॉन पर जाकर इतने जीवों की घात करके खाऊं? ऐसा खाना मुझे नहीं खाना। बोलो, 12 साल के बच्चे में यह समझ है किंतु हमारी समझ? सोचते ही नहीं हैं एक बार भी। विचार भी नहीं आता है कि पाँव रखूँ या नहीं रखूँ? जूते पहने हुए हैं और चलते हैं तो जूते से कट-कट मर जाते होंगे बेचारे जीव। कितने जीवों की घात होती है? क्या ऐसा खाना जैनियों के और श्रावक के गले उतरेगा? इतने जीवों की घात करके?

यह संवेदना कम क्यों पड़ी? साफ है कि **हमने अपेक्षाओं को धीरे-धीरे इतना बढ़ा लिया कि संवेदना विलीन होती जा रही है।** ये आकांक्षाएं जितनी बढ़ाई हैं, ये सारी की सारी हमारे लिए घातक बनी हैं। हमारे जीवन के लिए घातक बनी हैं। इसलिए हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करें। कोई फर्क नहीं पड़ेगा यदि आपने प्रतिज्ञा ले ली तो। आप कहोगे कि बावजी नहीं जाएंगे तो लोग क्या कहेंगे? पच्चक्खाण है कि मैं लॉन पर चलकर खाना नहीं खाऊंगा। लॉन पर चलकर लाकर देंगे तो भी खाना नहीं खाऊंगा। क्या फर्क पड़ेगा? किंतु लॉन पर चलकर हिंसा करके ऐसा खाना कैसे खाएं?

पहले जब मोबाइल नहीं था तो उस समय भी काम चलता था या नहीं चलता था? (प्रतिध्वनि- चलता था) फोन भी कभी-कभार लगा लेते थे, पड़ा रहता था पर अब तो जैसे ही थोड़ा आदमी फ्री हुआ नहीं कि मोबाइल चालू कर दिया। एक बार भी मन में विचार नहीं आता कि इससे कितने जीवों की घात कर रहे हैं! आता है विचार? नहीं कुछ तो गेम खेलेंगे। अन्य कोई कार्यक्रम देखने लग जाएंगे। पता नहीं क्या-क्या करने के लिए चालू कर देंगे? यह ढेर सारी हिंसा, यह प्राणी वध अनावश्यक ही हो रहा है। उसको भगवान ने अनर्थ हिंसा कहा है। दो प्रकार की हिंसा बताई है। एक अर्थ हिंसा और दूसरी अनर्थ हिंसा। अर्थ हिंसा उसे कहा गया है जो जरूरी है, जिसके बिना काम नहीं चल सकता।

खाना शरीर के लिए जरूरी है। रहने के लिए मकान की आवश्यकता हो सकती है। पहनने के लिए वस्त्रों की आवश्यकता हो सकती है तो खाना, पहनना, रहना आदि ये सारी चीजें यदि कोई श्रावक उपलब्ध करता है तो वह जरूरी है। वह उसके लिए आवश्यक है किंतु हर समय मोबाइल चलाते रहना जरूरी नहीं है। हर समय लॉन पर टहलते रहें, यह जरूरी नहीं है। यह अनर्थ हिंसा है। जो चीजें जरूरी नहीं हैं, उनका उपयोग यदि श्रावक करता है तो वह अनर्थ दंड का भागी बनता है। अनर्थ हिंसा का भागी होगा। श्रावक को ऐसी अनर्थ हिंसा से बचना चाहिए। आठवां व्रत आपका क्या है? अनर्थ दंड विरमण। अनर्थ

दंड का मैं सेवन नहीं करूंगा। किंतु अर्थ का ध्यान नहीं होता है और हम प्रतिक्रमण कर देते हैं, **'मिच्छा मि दुक्कडं'** बोलते जाते हैं। उसकी सार्थकता कितनी सिद्ध होती है?

बंधुओ! थोड़ा सा ही चला मृगालोढ़ा का वर्णन। मूल बात है कि हम कर्मों के खेल नहीं समझ पाते हैं और क्रिया करते हुए चले जाते हैं। हिंसा, झूठ, छल, कपट और पता नहीं क्या-क्या करते हुए चले जाते हैं। उन सारी क्रियाओं से बंधने वाले कर्मों का परिणाम हमारी आत्मा को ही भोगना पड़ेगा। इसलिए हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करें। अपने जीवन को मर्यादित करें। भगवान महावीर के सिद्धांतों के अनुसार, सिद्धांत के धरातल पर जीने का प्रयत्न करें। इससे हमें शांति मिलेगी, समाधि मिलेगी। केवल हमको ही शांति और समाधि नहीं मिलेगी बल्कि पूरे विश्व को शांति और समाधि का संदेश जाएगा। पूरा विश्व शांति और समाधि की दिशा में गति करेगा। हम ऐसा प्रयत्न करें व अपने आपको धन्य बनाएं। इतना ही कहते हुए विराम।

18 नवम्बर, 2019

साभार- सूर्य नमस्कार

1. इंदौर निवासी और तीर्थंकर पत्रिका के सम्पादक डॉक्टर नेमिचन्द जैन ने शाकाहार क्रांति अंक (जनवरी 2001) में लिखा है कि एक पौंड गेहूं के उत्पादन में जितना जल लगता है, उससे 100 गुना जल एक पौंड मांस उत्पादन में लगता है। इसी अंक में उन्होंने सरकारी आंकड़ों के अनुसार बताया है कि आंध्र प्रदेश स्थित अलकबीर (रुद्रार) कत्लखाने की सालाना पेयजल की खपत 48 करोड़ लीटर है। इसी प्रकार मुंबई स्थित देवनार कत्लखाना प्रतिवर्ष 44,58,000 करोड़ लीटर पेयजल का उपयोग कर रहा है। उनके अनुसार देश में अधिकृत कत्लखानों की संख्या 4000 है एवं अवैध कत्लखानों की संख्या लगभग 2 लाख है। आप विचार कर सकते हैं कि मांस उत्पादन में पेयजल की कितनी खपत होती है। जितने कत्लखाने खुलेंगे, पेयजल का संकट उतना ही गहरायेगा। इसके अतिरिक्त गाड़ियों की साफ-सफाई में केवल जोधपुर में ही लाखों लीटर पानी की खपत होती है।

भक्ति रस

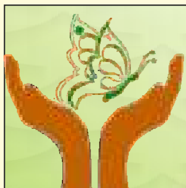

अहिंसा के अग्रदूत प्रभु महावीर

-चंदनबाला लूनिया, राजनांदगाँव

हे महावीर, तुम्हारी तरह तुम्हारी जयन्ती के
संवादों का इतिहास पुराना है
युगत्रेता युगप्रणेता महावीर को जानते हैं
प्रतिपादित सिद्धान्तों, सत्य, हिंसा,
अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य का मंथन कर
महोत्सवों में वाणी विलास से,
अतिसूक्ष्म, तार्किक, दृष्टिमय स्वसुविधानुसार
मनोहारी पथ निकालते हैं।

आज फिर महावीर की जरूरत है,
गगनभेदी नारों से साधना के पथ के साधक से जान पड़ते हैं
हे वीर! राह में यदि तुम मिल जाओ
तो पहचानने से इन्कार करना ही होगा
तुम्हें पहचाना तो हमारे आयोजनों का क्या होगा?
क्योंकि कथनी-करनी में दूरी बनाए रखने के लिए
हमारे बीच तुम्हारी जयन्ती की उपस्थिति
किन्तु तुम्हारी अनुपस्थिति परमावश्यक है।

''ऐसी वाणी बोलिए'' का धारावाहिक आपके समक्ष प्रतिमाह आ रहा है। प्राय: दैनिक व्यवहार के भाषाचार में हम जाने-अनजाने असत्य कथनों का उपयोग कर लेते हैं। ऐसे असत्य कथनों से कैसे बचा जा सकता है उसका सही तरीका ग्रहण करने हेतु प्रस्तुत है। आप सुधी पाठकगण असत्य कथन के 7 बिन्दु पढ़ चुके हैं, कुछ और ध्यातव्य बिन्दु इस प्रकार हैं-

गतांक 15-16 फरवरी 2022 से आगे...

8 मिथ्या दोषारोपण करना

एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेढेंति अक्खाइयबीएणं अप्पाणं कम्मबंधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावा।

असत्य भाषण करने में कुशल, दूसरों के दोषों को (मन से गढ़कर) बताने में निरत, वे विचार किए बिना बोलने वाले, अक्षय दु:ख के कारणभूत अत्यंत दृढ़ कर्म बन्धनों से अपनी आत्मा को वेष्टित-बद्ध करते हैं।

(प्रश्न व्याकरण सूत्र श्रु. 1. अ. 2. सूत्र-51 कुछ हिस्सा)

(A) घर पर पैसे आदि नहीं मिलने पर नौकर आदि पर शक करते हुए (बिना किसी प्रमाण के) कह देना - 'इसी ने उठाये हैं' अथवा उस व्यक्ति के मुँह पर कह देना - 'तुम्हीं ने वहाँ से पैसे उठाये हैं।'

(B) घर पर कोई चीज टूट गई, खराब हो गई अथवा कोई भी गड़बड़ हो गई तो बिना सोचे-समझे घर के किसी चंचल बच्चे का नाम ले लेना कि 'सब इसी का काम है' अथवा उस निर्दोष को व्यर्थ में डाँटना।

एक परिवार में 5 बहन व एक भाई कुल 6 बच्चे थे। एक बार उनकी भुआ भी उनके साथ रहने आई। एक दिन उनकी सामायिक बेग नहीं मिल रही थी, बहुत ढूंढा, बच्चों से पूछा पर नहीं मिली। एक बच्ची स्कूल गई थी, वह घर में सबसे चंचल थी। भुआ ने कहा - 'उसी ने मेरी बेग उठाई है, वही है सबसे बदमाश। आज उसके कारण मेरी सामायिक नहीं हुई...' वह कुछ देर तक बोलती ही रही। सुन-सुनकर उसकी मम्मी का गुस्सा तेज हो गया। वह बच्ची जैसे ही घर आई उसकी मम्मी ने न कुछ पूछा, न कुछ सोचा, जलती हुई लकड़ी हाथ में ली और जोर से पैर पर मार दी, उसका पैर जल गया। वह जोर-जोर से रोने लगी, उसे कुछ समझ में ही नहीं आया कि आज उसने ऐसा कौन-सा अपराध कर दिया। उसकी मम्मी उस पर चिल्लाती रही, पर उसकी एक बात नहीं सुनी।

कुछ देर बाद पता चला कि भुआ ने जहाँ बेग रखी थी वह उसी के पीछे गिर गई थी, इसलिए दिखाई नहीं दे रही थी।

Note - अपराधी भी गलत व्यवहार से दु:खी होता है तो निरपराधी कितना दु:खी होता होगा? बिना सोचे-समझे निर्दोष जीवों को टॉर्चर करना, तीव्र असाता वेदनीय कर्म बंधन का कारण बन जाता है।

सही तरीका- कुछ गड़बड़ हो जाए या कोई वस्तु नहीं मिले तो किसी पर भी शक करने के बजाय या हल्ला मचाने के बजाय शालीनता के साथ एक-एक से पूछा जा सकता है - 'आपने अमुक चीज देखी थी क्या? अथवा कहा जा सकता है कि 'मेरी अमुक चीज मुझे मिल नहीं रही है, क्या आप ढूंढ़ने में मेरी मदद करेंगे?' इस प्रकार कहने से किसी को बुरा भी नहीं लगेगा और सामने वाले ने इधर-उधर रखा होगा या देखा होगा, तो वो खुद ही बता देगा।

Note- श्रावक को बिना विचारे एकदम से किसी को दोषी ठहराने पर दूसरे व्रत में (सहसब्भक्खाणे) अतिचार लगता है। दोषी का पता लग जाए तो भी श्रावक को तो कम से कम Over react (अतिप्रतिक्रिया) नहीं करना चाहिए।

✶ सिचुएशन (Situation) : ऑफिस (Office) का टाइम हो रहा है और मोजे नहीं मिल रहे।

पहला तरीका (दोषारोपण युक्त)

Husband (हस्बेंड)	:	मेरे मोजे कहाँ छिपा दिये तुमने?
Wife (वाइफ) गुस्से में	:	अलमारी में छिपा दिये।
Husband (हस्बेंड)	:	मुझे ढूंढ़कर दो।
Wife (वाइफ)	:	तुम्हें सामने पड़ी हुई चीज दिखाई नहीं देती? मैं संभाल-संभाल कर रखती हूँ फिर भी मुझे ही दोष देते हो। जाओ खुद ढूंढ लो।

दूसरा तरीका (सहज)

Husband	:	मेरे मोजे कहाँ हैं?
Wife	:	टेबल पर ही रखे हैं, रुको मैं लाकर दे देती हूँ।

Note- किसी व्यक्ति को दोष देते हुए काम बताएंगे तो कौन सुनेगा। आजकल दादागिरी काम नहीं आती।

(C) घर पर किसी महिला द्वारा कुछ उलटा-सीधा कहने पर बोलना - 'तुम्हारी माँ ने ही तुम्हें ये सब सिखाया है' अथवा बेटे के द्वारा अपनी माँ को कुछ कहे जाने पर बोलना - 'पत्नी ने ही इसके कान भरे हैं, वरना मेरा बेटा कभी ऐसे बोलता ही नहीं था।'

सही तरीका- मौन रहना। किसी का नाम लेना कलह को बढ़ाने वाला काम है।

Note- जरूरी नहीं है कि कोई किसी के भड़काने पर ही उलटा-सीधा बोले। वह खुद परिस्थिति से परेशान होकर भी तो बोल सकता है।

(D) आपस में दो लोगों को अथवा किसी समूह को बात करते देखकर बिना प्रमाण कह देना - 'ये हमारे खिलाफ बातें कर रहे हैं' अथवा 'ये हमारे खिलाफ षड्यंत्र रच रहे हैं' अथवा 'ये निंदा विकथा ही कर रहे हैं, समूह में बैठकर यही काम किया जाता है'।

सही तरीका- मौन रहना। किसी का नाम नहीं लेना। हमारा शक गलत भी हो सकता है।

A, B, C तीनों आपस में रिश्तेदार हैं। एक दिन 'A' 'B' को समझा रही थी कि 'आपको C के साथ गलत व्यवहार नहीं करना चाहिए इससे उन्हें कितना दु:ख होता होगा।' C ने दूर से देखा, उसे वैसे भी 'B' पर भरोसा नहीं था। दोनों के बीच में आकर कह दिया - 'तुम A को मेरे खिलाफ भड़का रही हो मुझे सब मालूम है।'

इसका परिणाम क्या हुआ होगा? हम खुद इसका विचार कर सकते हैं।

Note- मनोविज्ञान के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि हमारे खुद के अंदर जो भरा होता है वही हमें बाहर नजर आता है।

- हमारी शंका कई बार अच्छे को भी बुरा बना देती है।

- एकांत में बात करते लोगों की बातों का गलत अनुमान लगाने से श्रावक के (रहस्सब्भक्खाणे) दूसरे व्रत में अतिचार लगता है।

(E) किसी ईमानदार सज्जन व्यक्ति को अनजाने में अथवा द्वेषवश कहना – 'ये बेईमान है, संघ समाज का पैसा खाता है' अथवा कहना 'इसके मन में पाप है' अथवा किसी के पैसों की बढ़ोतरी देखकर कहना – 'सब गलत रास्ते से कमाया हुआ पैसा है।'

सही तरीका- किसी के विषय में कुछ टीका-टिप्पणी नहीं करना।

Note - ऐसी चर्चाओं से विवाद बढ़ता है, समाधान कुछ भी नहीं होता।

(F) अपनी परिस्थितियों के लिए दूसरों को दोष देना – 'तुम्हारे कारण ही मैं दु:खी हूं', 'तुमने मेरी जिन्दगी बर्बाद कर दी' 'तुम्हारे कारण ही मैं आगे नहीं बढ़ पाया/पायी। 'तुम्हारे कारण ही मुझे कोई नहीं चाहता, सब तुम्हें ही चाहते हैं' 'तुम्हारा पगफेरा अच्छा नहीं है। तुम्हारे आने से ही हमारे घर की लक्ष्मी चली गई' इस प्रकार सुना-सुनाकर दूसरों को दु:खी करना।

Note - कल असाता पहुँचाई थी तो आज दु:खी हैं।

आज पुन: असाता पहुँचायेंगे तो कल पुन: दु:खी होना पड़ेगा।।

ज्ञानियों ने इस श्रृंखला को तोड़ने का उपाय फरमाया - 'किसी का कोई दोष नहीं है। मात्र मेरे राग द्वेष की परिणति का ही दोष है', 'मेरे ही कर्म उदय में आते हैं (My karmic account only comes back to me)

(G) अपनी गलती को छुपाने के लिए अथवा द्वेषवश किसी निर्दोष व्यक्ति को कोर्ट केस में फंसा देना, झूठी गवाही देना। तलाक लेने के लिए लड़का/लड़की द्वारा अथवा उनके परिवार वालों द्वारा पिण्ड छुड़ाने के लिए झूठे आरोप लगाना और अच्छे लोगों को जेल भेज देना।

Note - जान-बूझकर निर्दोष को दोषी कहने से श्रावक के व्रतों में अतिचार ही नहीं लगता, बल्कि उसके व्रत ही टूट जाते हैं। यह सब श्रावकाचार के विरुद्ध है।

प्रेरक प्रसंग

पूज्य आचार्य श्री नानेश के चातुर्मास की विनती चल रही थी। दो क्षेत्रों की सबसे अधिक विनती थी। आचार्य भगवन् ने संघ वालों को फरमाया कि आप आवागमन की क्रिया न लगाएं। चातुर्मास जहाँ भी खुलेगा, वहाँ समाचार पहुँच जायेंगे। आचार्य भगवन् ने पंडित लालचंद जी को कहा कि 'राणावास संघ को चातुर्मास की स्वीकृति का पत्र लिखें, परन्तु यह समाचार जब तक संघ वालों को न मिल जाए इसे किसी को नहीं बताएं', उन्होंने वैसा ही किया। एक श्रावक स्थानक में आए और संतों को बोले-'गुरुदेव का चातुर्मास तो राणावास खुल गया।' संतों ने गुरुदेव से पूछा-'भगवन् चातुर्मास खुल गया।' आचार्य भगवन् ने उस समय यह नहीं सोचा कि 'लालचंद जी ने बात बाहर कर दी', आचार्य भगवन् ने उनसे पूछा-'आपको किसने कहा? संत ने कहा-अमुक श्रावक ने। उन्हें बुलाकर पूछा-'आपको किसने कहा?' उन्होंने कहा-'अमुक श्रावक ने।' उनको बुलाकर पूछा-'आपको किसने कहा? उन्होंने कहा-मैंने तो अपने मन से कह दिया, क्योंकि 'मुझे विश्वास है, चातुर्मास हमें ही मिलेगा।' **'न य पाव-परिक्खेवी'** सभ्य, शिष्ट और सुशिक्षितों^ के लिए कहा गया है कि वे किसी पर दोषारोपण नहीं करते।

^ **(बहुश्रुत)** **श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 11/12**

-क्रमश:

श्रीमद्भगवती सूत्र

गतांक 15-16 फरवरी 2022 से आगे... संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

पुद्‌गलों का प्रयोग परिणत आदि स्वरूप श. 8 उ. 1

पूर्वापर संबंध– पुद्‌गलों को ग्रहण करके तेजोलेश्या का प्रयोग किया जाता है। अत: पुद्‌गलों के प्रकारों का वर्णन किया जा रहा है।

प्र. 2273 क्या नैरयिक, देवता को उत्तर वैक्रिय करते समय पुन: पर्याप्तियाँ बाँधनी पड़ती हैं?

उत्तर नहीं बाँधनी पड़ती हैं, क्योंकि 'पूर्वबद्ध पर्याप्तियों' (उत्पत्ति के समय वाली) से ही कार्य हो जाता है।

प्र. 2274 औदारिक, वैक्रिय और आहारक शरीर की पर्याप्तियों के पूर्ण होने के काल का वर्णन कीजिए।

उत्तर 1. औदारिक शरीरी प्रथम आहार पर्याप्ति एक समय में पूर्ण करता है। उसके बाद प्रत्येक पर्याप्ति अन्तर्मुहूर्त्त-अन्तर्मुहूर्त्त बाद पूर्ण करता है।

2. वैक्रिय और आहारक शरीर की प्रथम आहार पर्याप्ति एक समय में पूर्ण होती है। उसके बाद शरीर पर्याप्ति अन्तर्मुहूर्त्त में तथा शेष 4 पर्याप्तियाँ अनुक्रम से एक-एक समय बाद पूर्ण होती हैं।

ज्ञातव्य बिंदु- देवता पाँचवीं-छठी पर्याप्ति एक साथ पूर्ण करते हैं।

प्र. 2275 छहों पर्याप्तियाँ युगपत् प्रारंभ होती हैं किन्तु अनुक्रम से समाप्त होती हैं, क्यों? पंचसंग्रह भा. 1 परिशिष्ट के उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर पर्याप्तियाँ उत्तरोत्तर सूक्ष्म हैं। आहार पर्याप्ति से शरीर पर्याप्ति सूक्ष्म है यावत् मन पर्याप्ति सूक्ष्मतम है। जैसे-

1. मोटा सूत और बारीक सूत कातने वाली एक साथ सूत कातना प्रारंभ करती है किन्तु बारीक सूत कातने वाली लंबे समय में कार्य पूर्ण करती है।

2. मोटी कारीगरी का काम थोड़े समय में पूर्ण होता है, जबकि महीन कारीगरी का काम लंबे समय में पूर्ण होता है।

इस प्रकार पर्याप्तियों का भी समझना चाहिए।

प्र. 2276 एक द्रव्य में कितने प्रकार के परिणमन होते हैं?

उत्तर द्रव्य 3 प्रकार से परिणत होता है। यथा-

1. प्रयोग-परिणत 2. मिश्र-परिणत 3. विस्रसा-परिणत

एक द्रव्य में इन तीनों में से कोई भी प्रकार का परिणमन हो सकता है। इनके असंयोगी 1057 भंग थोकड़े में देखें।

प्र. 2277 दो द्रव्य में कितने प्रकार के परिणमन हो सकते हैं?

उ. दो द्रव्य में भी तीनों प्रकार के परिणमन हो सकते हैं। असंयोगी 1057 भंग और दो संयोगी 5,58,096 भंग थोकड़े में देखें।

प्र. 2278 तीन द्रव्य में कितने प्रकार के परिणमन हो सकते हैं?

उ. तीन द्रव्य में - असंयोगी 1057, दो संयोगी 11,16,192, तीन संयोगी 19,62,63,760 भंग होते हैं। इसी प्रकार 4 यावत् 10, संख्यात्, असंख्यात् एवं अनंत द्रव्यों के भंगों की संयोजना कर लेनी चाहिए। भंग निकालने की विधि श. 9 उ. 32 'गांगेय अनगार के भंगों' में देखें।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला -क्रमश:

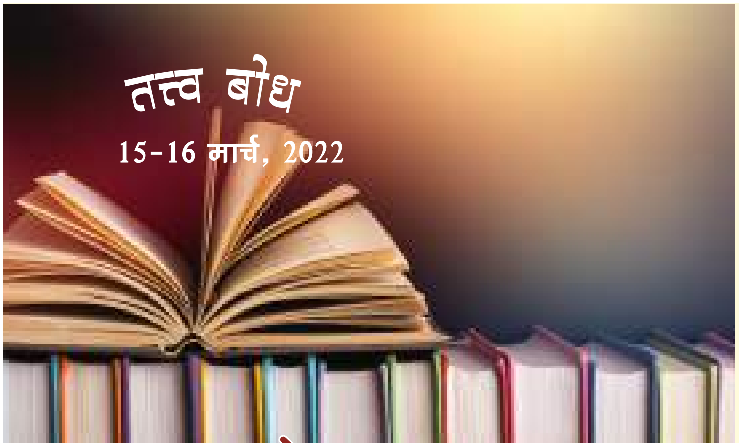

तत्त्व बोध

गतांक 15-16 फरवरी 2022 से आगे...

तत्त्व बोध-16

लवसप्तम- लवसप्तम देवों का अर्थ क्या है, इस विषय में विभिन्न व्याख्या ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न उल्लेख हैं। श्री व्यवहार सूत्र के भाष्य गाथा 2414 (उद्देशक 5), श्री सूत्रकृतांग सूत्र की शीलांकाचार्यकृत वृत्ति पृ. 151 एवं श्री सूत्रकृतांग चूर्णि पृष्ठ 186 में पाँचों अनुत्तर विमानों के तैंतीस सागरोपम की स्थिति वाले देवों को लवसप्तम बताया है, जबकि श्री भगवती सूत्र चूर्णि पृ. 52, श्री भगवती सूत्र की अभयदेवसूरि कृत वृत्ति पृ. 651 तथा दानशेखरसूरिकृत टीका पृ. 214 में मात्र सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देवों को ही लवसप्तम कहा है।

अपनी साम्प्रदायिक धारणा में सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देवों को ही लवसप्तम मानना योग्य लगता है, क्योंकि श्री सूत्रकृतांग सूत्र की व्याख्याओं में जो वर्णन किया गया है, वह **'ठिईणसेट्ठा लवसत्तमा वा'** के आधार पर होने से वहाँ स्थिति की उत्कृष्टता की अपेक्षा लवसप्तम की व्याख्या की है, जबकि श्री भगवती सूत्र में मूलपाठ में स्थिति आदि वर्णन नहीं होने से वहाँ निरपेक्षतया लवसप्तम का अर्थ स्पष्ट किया गया है।

सर्वार्थसिद्ध के देवों को ही लवसप्तम देव कहना इस बात से भी पुष्ट होता है कि वे ही निश्चित एक भवावतारी होते हैं। तैंतीस सागर की स्थिति वाले चार अनुत्तर विमानों के देवों का एक भवावतारी होना आवश्यक नहीं है, यह श्री भगवती सूत्र शतक 24 (गमक) से स्पष्ट है। अत: अपनी धारणा सर्वार्थसिद्ध देवों को ही लवसप्तम मानने की समझनी चाहिए।

तत्त्व बोध-17

कोई भी बादर स्थावर किसी भी ऐसे स्थान पर उत्पन्न होता है जहाँ पहले से वह बादर स्थावर नहीं है अर्थात् बादर पृथ्वीकाय उत्पन्न हो रहा है तो पहले से बादर पृथ्वीकाय नहीं हो, वैसी स्थिति में सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला बादर जीव लब्धि पर्याप्त ही होगा, लब्धि अपर्याप्त नहीं। श्री प्रज्ञापना सूत्र पद 1 में बादर स्थावरों का वर्णन करते हुए पुन: पुन: **'पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति'** कहा है अर्थात् अपर्याप्त (लब्धि से) स्थावर पर्याप्त की निश्रा में ही उत्पन्न होते हैं। इससे यह फलित है कि किसी भी क्षेत्र में सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला बादर स्थावर जीव लब्धि पर्याप्त ही होता है।

तत्त्व बोध-18

आगमों में अनेक स्थलों पर स्पर्श के भेदों में **'कक्खड़े'** शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका संस्कृत एवं हिन्दी अर्थ 'कर्कश' किया जाता रहा है। वस्तुत: इसका भाषान्तर 'कक्खट' होता है। 'अभिधान चिन्तामणि नाममाला', 'आप्टे संस्कृत-हिन्दी शब्दकोष' आदि कोशों में कक्खट का अर्थ 'कठोर' किया गया है। सिद्धहैम शब्दानुशासन में 'टो उ:' से भी 'कक्खट' ही सिद्ध होता है। यह भी ज्ञातव्य है कि 'कर्कश' का प्राकृत रूपान्तरण 'कक्कस' होता है यथा 'अणवज्जमकक्कसं' (श्री दशवैकालिक सूत्र 7/3)

तत्त्व बोध-19

विषय- श्री प्रज्ञापना सूत्र के द्वितीय पद में समागत 'उपपाद' के अन्तर्गत लिया जाने वाला क्षेत्र।

पूर्वभव की आयुष्य की पूर्णता के पश्चात् वर्तमान भव के उत्पत्ति स्थान का क्षेत्र एवं वहाँ तक पहुँचने में जीव मार्ग में जहाँ-जहाँ रहा, उन क्षेत्रों को अर्थात् उत्पन्न होते समय जिन आकाश प्रदेशों पर स्थित है तथा उत्पत्ति के पूर्व विग्रहगति के एक या दो समय में जीव जिन आकाश प्रदेशों पर रहा है, उन आकाश प्रदेशों को 'उपपाद' के अन्तर्गत लिया जाता है। चूंकि

यह आगमानुसार निश्चित है कि पूर्वभव की आयु को छोड़ने के पश्चात् जीव अगले भव में पहले समय या दूसरे समय या तीसरे समय में अवश्य उत्पन्न होगा यानी अगले भव में दो समय तक ही अनाहारक रह सकता है। अतः उपपाद में अधिकतम तीन समयों तक जीव द्वारा स्पृष्ट क्षेत्र को लिया जा सकता है।

प्रस्तुत 'तत्त्वबोध' का प्रमुख प्रयोजन मात्र यह स्पष्ट करना है कि तीन समयों में जीव द्वारा स्पृष्ट क्षेत्र ही उपपाद के अन्तर्गत ग्रहित होगा, मार्गवर्ती सम्पूर्ण क्षेत्र नहीं।

इसे चित्रानुसार इस प्रकार समझा जा सकता है–

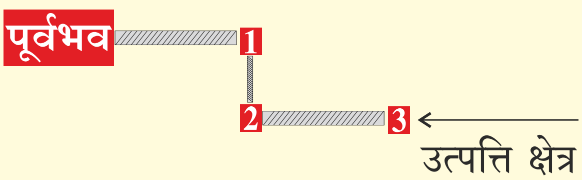

उपर्युक्त चित्र में 1 तथा 2 तथा 3
– ये तीन क्षेत्र ही 'उपपाद' में ग्रहित होंगे किन्तु पूर्वभव से 1 तक के मार्गवर्ती आकाश प्रदेश तथा 1 से 2 एवं 2 से 3 तक के मार्गवर्ती आकाश प्रदेश उपपाद में गृहित नहीं होंगे। आगमकार मार्गवर्ती क्षेत्र में किसी भी समय जीव की स्पर्शना स्वीकार नहीं करते। आगमिक दृष्टि से चित्र कुछ इस तरह समझा जा सकता है–

पूर्वभव **1**

आगम मार्गवर्ती क्षेत्रों में जीव की स्पर्शना स्वीकार नहीं करते, यह इन आगमिक उल्लेखों से समझा जा सकता है–

1. एक परमाणु पुद्गल (एक समय में) धर्मास्तिकाय के अधिकतम सात प्रदेशों की ही स्पर्शना करता है, जबकि परमाणु पुद्गल एक समय में लोक के एक छोर से दूसरी छोर तक जा सकता है।

–श्री भगवती सूत्र 13/4 व श्री प्रज्ञापना सूत्र पद 16, पुद्गलोभवोपपादगति

2. सम्पूर्ण लोक के पुद्गलों से सुव्याप्त होने पर भी पुद्गलों का स्पर्श किए बिना अफुसमाण गति बतलाई है, जिससे यह व्यक्त है कि एक समय की गति में मध्यवर्ती पुद्गलों का स्पर्श नहीं होता।

–श्री प्रज्ञापना सूत्र पद 16, अफुसमाण गति का अर्थ

3. उत्पत्ति के समय जीव की अवगाहना अंगुल के असंख्येतम भाग ही मानी है। चाहे कोई स्थावर जीव ऋजुगति से अधोलोकान्त से काल करके ऊर्ध्वलोकान्त में उत्पन्न हो रहा हो।

–श्री भगवती सूत्र शतक 24, श्री प्रज्ञापना सूत्र पद 5, जीव पर्याय आदि

तत्त्व बोध–20

'जीव पर्याय' के थोकड़े में 'जघन्य अवगाहना वाले नैरयिक' आदि में नौ 'उपयोग' कहे जाते हैं, जिनमें 'चक्षुदर्शन' भी सम्मिलित हैं। ज्ञातव्य है कि आगमकार यहाँ 'उपयोग' शब्द का प्रयोग नहीं करके अभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन आदि पदों का प्रयोग करते हैं। तथ्य यह है कि जघन्य अवगाहना वाले नैरयिक में 'चक्षुदर्शनोपयोग' नहीं होता। श्री प्रज्ञापना सूत्र के पंचम पद में जीव पर्याय वर्णन के प्रसंग से जघन्य अवगाहना वाले नैरयिक आदि में जो चक्षुदर्शन माना है, वह लब्धि रूप है, उपयोग रूप नहीं।

साभार– जैन सिद्धान्त मंजूषा

हु – आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा.
शि – आचार्य श्री शिवलालजी म.सा.
उ – आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा.
चौ – आचार्य श्री चौथमलजी म.सा.

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना

राम चमक रहे भानु समाना

श्री – आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा.
ज – आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.
ग – आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा.
नाना – आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

धैर्य की देवी दमयन्ती

गतांक 15-16 फरवरी 2022 से आगे...

भयानक जंगल में अनजाने रास्ते, कहीं पहाड़, कहीं नदी-नाले। घाटियाँ सिंहों की गर्जना से गूँज रही थी। जंगली पशुओं की डरावनी आवाजें कानों से टकरा रही थी, पर अब दमयन्ती को किसी से कुछ भय नहीं लग रहा था। मन से जब भय निकल जाता है तो संसार में कहीं कुछ भय नहीं रहता। वह बिल्कुल निर्भय होकर प्रात:काल की सूर्य किरणों के साथ-साथ अपने पथ पर चलती गई। कहीं रात हुई तो वह किसी गुफा में जाकर अकेली ही ठहर गई। नवकार मंत्र का जाप करते-करते भयानक रात को भी प्रभात की तरह मंजुल बना दिया। कहीं हिंसक जानवरों से भी उसकी नजरें मिली, पर आँखों से बरसती दया और करुणा की अमृतधारा से उनकी हिंसक भावनाएँ भी स्नेह से भीग गई। जंगल में डाकू-चोर-राक्षस और न जाने क्या-क्या दुष्ट जीव उसकी राह में आए, पर उसके सतीत्व के तेज ने सबको शान्त कर दिया। उसकी निर्भय मुखमुद्रा और करुणा बरसाती आँखों में जिसने झाँका उसकी दुष्टता दूर हो गई। इस महासती के चरणों से जंगल भी मंगलमय बन गया। धरती की भीषण पगडंडियाँ भी पवित्र हो गई। चलती-चलती दमयन्ती एक नगर के बाहर पहुँची। सरोवर के किनारे कुछ नारियाँ पानी भर रही थी। दमयन्ती को अकेली जंगल से आती देखकर एक बार तो वे चौंक पड़ी। पनिहारियाँ दिव्य तेज से दमकता मुख देखकर सोचने लगी- शायद कोई वनदेवी क्रीड़ा के लिए सरोवर पर आई है, पर निकट पहुँचकर देखा तो लगा कोई मानवी है। आँखों में तेज के साथ रास्ते की थकान भी धुंधला रही थी। शान्त और निर्भय चेहरे पर भूख-प्यास से आई मलिनता भी थी। वे आश्चर्यपूर्वक दमयन्ती के पास आई। दमयन्ती ने भी प्रेमपूर्वक उन्हें पास बिठाकर पूछा- ''बहिनो! यह कौन-सा नगर है? इस नगर के रक्षक महाराज का शुभ नाम क्या है?'' उन स्त्रियों ने बताया- ''यह अचलपुर नगर है। महाराज ऋतुपूर्ण यहाँ की प्रजा के प्यारे स्वामी हैं। उनकी महारानी चन्द्रयशा अपने रूप-लावण्य के लिए ही नहीं, अपितु उदारता, करूणा आदि गुणों के कारण भी दूर-दूर तक प्रख्यात हैं।''

''चन्द्रयशा!'' दमयन्ती ने आश्चर्यपूर्वक पूछना चाहा किन्तु दूसरे ही क्षण अपने भावों को छुपाती हुई वह पूर्ववत् स्थिर होकर बैठ गई। सोचा- ''घर तो जाना ही है, बीच में मौसी की राजधानी आ गई है तो मिलती चलूँ। बचपन में जब बहुत छोटी थी तब मिली थी। आज बहुत वर्षों बाद मिलेंगी, कितनी खुशी होगी उन्हें भी!''

दमयन्ती अपनी धीर-गम्भीर चाल चलती हुई रानी चन्द्रयशा के महलों में पहुँची। दासियाँ इस दिव्य नारी को इस प्रकार के फटे-पुराने मलिन परिवेश में देखकर आश्चर्य में डूबी हुई घेरकर खड़ी हो गई। रानी चन्द्रयशा ने भी दमयन्ती को नहीं पहचाना, किन्तु फिर भी अतिथि के नाते उसका सत्कार किया और नाम पूछा।

दमयन्ती ने सहसा अपने को सम्हाल लिया और सोचा- ''जब मौसी पहचानती ही नहीं है तो मैं क्या अपना

परिचय दूँ। जो संकट आया है, उसको कहने से क्या लाभ? दु:ख कहने से नहीं, सहने से ही घटता है।'' वह बोली– ''महारानीजी! मैं तो अयोध्या से आ रही हूँ। महाराज नल की रानी दमयन्ती का नाम आपने सुना होगा?''

''दमयन्ती!'' चन्द्रयशा ने चौंककर पूछा। ''ओह! वह तो मेरी भानजी है, किन्तु अब तो कुछ समय से पति-पत्नी दोनों ही वनवासी हो गए हैं। कुछ पता ही नहीं कहाँ हैं?'' –कहते हुए रानी की आँखों में आँसू भर आए। ''तो तुम?'' चन्द्रयशा ने दमयन्ती की ओर प्रेमपूर्वक निहार कर पूछा।

''हाँ, महारानीजी! मैं उनकी सेविका हूँ। बचपन से ही उनकी सेवा में रही, अब दुर्भाग्य ने उनको संकट में डाल दिया और पता नहीं कहाँ-कहाँ भटक रहे हैं। मैं निराश्रित हो गई, इसलिए आपकी सेवा में आई हूँ। अब महारानी दमयन्ती की नहीं, तो आपकी चाकरी करूँगी।''

चन्द्रयशा के मन में स्नेह उमड़ आया। उसने दासी के अपूर्व रूप-लावण्य को देखकर मन ही मन सोचा– ''क्या वैभव और क्या ऐश्वर्य होगा मेरी भानजी दमयन्ती का, जिसकी दासी भी किसी महारानी से कम सुन्दर नहीं है और कितनी सभ्य! कितनी चतुर और कितनी मधुरभाषिणी है! ऐसी सेविका की स्वामिनी कैसी महान होगी! ऐसी चतुर सेविका को पाकर तो मैं स्वयं को भाग्यशालिनी समझती हूँ।'' रानी ने विचार कर दासी को सम्मान और प्रेम के साथ अपने महलों में रख लिया। दमयन्ती कुछ ही दिनों में रानी की अत्यन्त विश्वासपात्र और प्रिय बन गई। रानी ने उसे अपनी दानशाला की देख-रेख की सब जिम्मेदारी सौंप दी। दमयन्ती राजकीय दानशाला में बाहर से आने वाले सैंकड़ों यात्रियों को प्रतिदिन भोजन व स्थान देती। दीन, गरीब, अनाश्रितों को दान देती और उनके बीच सदा खोजती रहती अपने जीवन धन को, जो शायद कभी इन्हीं यात्रियों में भटकता-घूमता हुआ आ पहुँचे उनकी दानशाला में।

विचारों की उथल-पुथल में लड़खड़ाता नल बिना किसी लक्ष्य के अज्ञात पथ पर बढ़ा जा रहा था। कुछ ही दूर चला कि सामने आग की भयंकर लपटें दिखाई दी। नल के पैर ठिठक गए और वह देखने लगा कि आग किधर बढ़ रही है। तभी उन लपटों में झुलसता एक नाग दिखाई दिया। नाग की करुण-दशा से नल का मन द्रवित हो रहा था, तभी नाग ने मनुष्य की भाषा में पुकारा– ''हे नल! मैं आग में जल रहा हूँ, मुझे बचाओ।'' नाग के मुँह से नल ने अपना नाम सुना तो उसे बड़ा विस्मय हुआ। सोचा– ''इसमें कोई छल-प्रपंच तो नहीं है।'' पर तभी नाग ने पुन: पुकारा– ''नल! विलम्ब मत करो। यह अग्नि मुझे भस्म किए जा रही है। शीघ्र आओ और मुझे बचाओ।'' नल का हृदय नाग की पुकार से पसीज उठा। उसने आव देखा न ताव, झट से अग्नि में छलांग लगाई और जलते नाग को बाहर खींच लाया। नाग को भूमि पर छोड़ने के लिए नल थोड़ा-सा आगे बढ़ा कि नाग ने जोर से डंक मारकर काट लिया। नल का रोम-रोम तिलमिला उठा। उसका शरीर काला स्याह हो गया। नल विद्रूप और कुबड़ा बन गया। नल चकित होकर सोचने लगा– ''यह सब क्या लीला है? जिस साँप को आग से बचाने के लिए मैंने अपना जीवन जोखिम में डाला, उसने इस उपकार का यह कैसा बदला चुकाया?'' तभी नाग वहाँ से अदृश्य हो गया और एक दिव्यमूर्ति उसके सामने उपस्थित हुई। क्षणभर के लिए चारों ओर प्रकाश फैल गया। आश्चर्यचकित नल कुछ भी नहीं समझा कि यह क्या माया है? तभी देव ने प्रसन्न होकर कहा– ''वत्स नल! चिन्ता मत करो, भलाई का बदला भला ही होता है। जिस नाग ने तुम्हें काटा वह मैं ही तुम्हारा पिता निषध देव हूँ। अभी पूर्व कर्मों के कारण संकट की घनघोर घटाएँ तुम्हारे सिर पर मंडरा रही हैं। दुश्मन तुम्हें कष्ट पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील हैं। अत: मैंने ही अभी तुम्हें काला व कूबड़ा बना दिया है ताकि शत्रु तुम्हें पहचान कर कष्ट न पहुँचा सकें। बारह वर्ष बाद तुम पुन: अपने मूल रूप को प्राप्त करोगे। दमयन्ती भी मिलेगी और अयोध्या का राजसिंहासन भी। दमयन्ती स्वयं सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाएगी। तुम सावधान होकर साहस के साथ विपत्तियों से लड़ते जाओ।'' यों कहकर देव ने रूप परिवर्तन की दिव्य विद्या दी और फिर अन्तर्ध्यान हो गया।

कूबड़े के रूप में नल जंगल की भयंकर घाटियों को

पार करता हुआ सुंसुमारपुर नामक नगर में पहुँचा। वहाँ राजा दधिपर्ण राज्य करता था। राजा का एक हाथी पागल होकर नगर में उत्पात मचा रहा था। बड़े-बड़े योद्धा भी उसे पकड़ने में हार गए थे। नल जैसे ही नगर के द्वार पर पहुँचा तो वहाँ भयंकर शोर सुनाई दिया। लोग चिल्ला रहे थे- ''हट जाओ! हट जाओ! पागल हाथी आ रहा है।'' नल उसी रास्ते नगर में प्रवेश कर रहा था। सामने आते उन्मत्त हाथी को देखते ही एक बार वह ठिठक गया। बिफरे हुए हाथी के सामने जाना तो मौत का मुकाबला करने जैसा था, पर दूसरे ही क्षण नल ने साहस के साथ हाथी को ललकारा। हाथी उसके पीछे दौड़ा तो नल मौका पाकर बन्दर की तरह उछला और उसकी पीठ पर जा बैठा। हाथी के कुम्भस्थल पर जैसे ही उसके अंकुश लगाया, हाथी का नशा उतर गया और वह पालतू जानवर की भाँति सीधा गजशाला की ओर चल पड़ा। कूबड़े का यह अद्‌भुत साहस और शौर्य देखकर जनता चकित रह गई। राजपुरुष उसे ससम्मान राजा के समक्ष लेकर आए। राजा ने कूबड़े का स्वागत-सत्कार किया और आश्चर्य के साथ कहा- ''हे कुब्ज वीर! तुमने नगर का उपद्रव शान्त कर जनता पर महान उपकार किया है। तुम अपना परिचय दो और कहो कि हम तुम्हारी क्या सेवा करें?''

कूबड़े ने विनम्रतापूर्वक कहा- ''महाराज! मैंने हाथी को वश में करके कोई बड़ा भारी उपकार नहीं किया है। मैंने जो विद्या अपने स्वामी से सीखी है, उसका जनहितार्थ उपयोग नहीं करूँगा तो उनसे उऋण कैसे हो पाऊँगा?''

राजा ने प्रसन्न होकर कहा- ''सचमुच तुम्हारा स्वामी भी कोई महान पुरुष होगा, जिसने उपकार करके भी अहंकार नहीं करने की शिक्षा तुम्हें दी है? बताओ। तुम कौन हो और कौन है महाभाग्यशाली तुम्हारा स्वामी?''

कूबड़े ने कुछ उदासी के साथ कहा- ''महाराज! अयोध्या नरेश महाराज नल का नाम आपने सुना होगा। कर्मों के कारण उनको राज्य छोड़कर वनवास लेना पड़ा है। मैं हतभागी उनका रसोइया हूँ। जब स्वामी वनवासी हो गए तो हमारा आश्रय भी छूट गया। अब आश्रय की खोज में घूमता हुआ आपकी कीर्ति सुनकर सेवा में उपस्थित हुआ हूँ। उन्हीं की कृपा से हाथी को वश में करना और सूर्यपाक रसोई बनाना मैंने सीखा है।''

कूबड़े की सभ्य और मधुर भाषा सचमुच उसके उच्च संस्कारों का परिचय दे रही थी। उसकी चतुरता, स्वामिभक्ति और वीरता देखकर राजा को लगा जैसे कोई अद्‌भुत नररत्न उसके राज्य में आश्रय पाने को आ गया है। राजा ने प्रसन्न होकर कूबड़े को बहुत-सा पुरस्कार दिया और अपना खास रसोइया बना लिया।

रानी चन्द्रयशा की दानशाला का काम पाकर दमयन्ती की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। उसे लगा दुर्भाग्य के दिनों में भी उसके कुछ पुण्य शेष रहे हैं, जिनके कारण ही उसे यह कार्य मिला। सुबह से शाम तक अतिथि, दीन, गरीब एवं अनाश्रितों की सेवा भोजन आदि की व्यवस्था करना और परदेशी यात्रियों को भोजन, निवास आदि की सुविधा देना। बचपन से ही दमयन्ती को सेवा का शौक था। इसलिए यह कार्य उसे बड़ा आनन्दप्रद लगा और दुःख की घड़ियों में भी वह सुख का अनुभव करने लगी। आए-गए प्रवासी लोगों के झुण्ड में दमयन्ती खोजती रहती, हो सकता है कभी उसके प्राणेश्वर भी घूमते-घूमते उसके द्वार पर आ जाए, पर बहुत दिन बीत जाने पर भी आज तक नल के विषय में उसे कहीं कोई जानकारी नहीं मिली। इसी चिन्ता में वह एक दिन उदास बैठी थी कि एक प्रवासी ब्राह्मण कुण्डिनपुर से चलकर अचलपुर आया। दानशाला में जैसे ही उसने दमयन्ती को देखा तो वह तुरन्त पहचान गया। आश्चर्य के साथ उसने पूछा- ''राजकुमारी दमयन्ती! आप यहाँ कैसे?''

दमयन्ती ने भी गौर से देखा तो वह अपने नगर के उस वृद्ध ब्राह्मण को पहचान गई। सकुचाती हुई धीरे से बोली- ''विप्रवर! आप कब आए? पिताजी-माताजी आदि सब प्रसन्न तो हैं?''

साभार- जैन कथामाला-1

क्रमशः

WORLD AT WAR: GLOBAL DARKNESS

-Urja Mehta, Indore

Very few sayings are as true as: “In spite of temporary victories, violence never brings permanent peace.” Russia’s recent invasion into Ukraine is an unjustifiable act. This war brings violent evil to the forefront and threatens to reshape our global future in darker ways. Human selfishness and greed are among the sins that spawn wars. Russia’s attack on Ukraine is extremely heinous. Its plan to kill so many innocent people, to flaunt and proudly glorify the act, portrays their atrocious capabilities. The attack is a mere act of arrogance and greed.

There is something uniquely horrible about the violence of the modern era. Moreover, the alarming fact is that we are becoming used to it; it is becoming normal. Today, mankind has forgotten the values of ahimsa, ultimately leading to violence, hatred and disharmony among people.

Jain Dharma teaches that all living beings around us are striving for peace. Non-violence is the ultimate power that Lord Mahaveer bestowed on us. Non-violence (ahimsa) tops the list of Mahaveer’s 5 principles (Mahavrats). It is the true essence of dharma; it sustains society and nurtures reverence, giving honour and dignity to all life forms. Our aim is to develop moral values instead of acquiring material objects. Today there is a yearning need to understand and imbibe the life values of non-violence, restraint of desires, equality and non-absolutism taught by Lord Mahaveer not so long ago.

Lord Mahaveer in Acharanga sutra proclaimed “Atthi sattham parenaparam, Natthi asattham parenaparam” i.e. There are weapons superior to each other, but nothing is superior to disarmament or non-violence. It is the selfish and aggressive outlook of an individual that gives birth to war and violence.

Greed instigates violence. Our disposition towards desire for acquiring wealth, fame, power and possession is uncontrollable. If we control our greed, and are respectful to everything around us, we can begin to restrain ourselves from actions based on anger, ego, arrogance, and deceit, and our violent tendencies start to diminish. Self-control and contentment are the most important traits to have for a broader cultivation of non-violence. We need to develop a sense of unity and oneness. This is the only way we can build a more peaceful world. In the modern age of horrific acts of violence, this message of nonviolence is more important than it has ever been.

लघु गौतम पृच्छा

केवलज्ञान के धारक श्री भगवान महावीर स्वामी से श्री गौतम स्वामी ने विनयपूर्वक प्रश्न किए। उन प्रश्नों में से कुछ इस प्रकार हैं–

प्रश्न 1. भगवन्! चौदह पूर्व का सार क्या है?

उत्तर गौतम! चौदह पूर्व का सार नमस्कार मंत्र है।

प्रश्न 2. प्रभो! मनुष्य निर्धन और कंगाल किस पाप के उदय से होता है?

उत्तर गौतम! जिसने दूसरे के धन को चुराया हो, दान देते हुए को मना किया हो वह मनुष्य निर्धन और कंगाल होता है।

प्रश्न 3. भगवन्! भोग-उपभोग की सामग्रियाँ सभी स्वाधीन होते हुए भी जो मनुष्य उन्हें भोग नहीं सकते, यह किस पाप के उदय से?

उत्तर गौतम! जो मनुष्य दान-पुण्य कर फिर उसका पश्चात्ताप करता है कि मैंने बहुत बुरा किया है, वह जीव भोग (वह वस्तु जो एक वक्त ही काम में आ सकती हो जैसे- भोजन वगैरह) और उपभोग (जो बार-बार काम में आ सकती है जैसे वस्त्र, आभूषण वगैरह) की सामग्री स्वाधीन होते हुए भी उन्हें भोग नहीं सकता है।

प्रश्न 4. भगवन्! मनुष्य एक आँख से काणा किस पाप से होता है?

उत्तर गौतम! जो हरी सब्जी (वनस्पति) का अयतना एवं अविवेकपूर्वक शस्त्र आदि से छेदन-भेदन करता है, वह मनुष्य एक आँख से काणा होता है।

प्रश्न 5. भगवन्! मनुष्य किस पाप से अन्धा होता है?

उत्तर गौतम! शहद के छत्ते के नीचे धूम्र वगैरह का प्रयोग करता हुआ मक्षिकाओं को जलाकर छत्ता गिरा देने से मनुष्य अंधा होता है।

प्रश्न 6. भगवन्! मनुष्य किस पाप के उदय से गूंगा होता है?

उत्तर गौतम! छिद्रान्वेषी बनकर जो देव, गुरु की निंदा करता है, वह मनुष्य गूंगा होता है।

प्रश्न 7. भगवन्! मनुष्य किस पाप के उदय से बहरा होता है?

उत्तर गौतम! जो लुक-छिपकर दूसरे की निंदा सुनने में रत रहता हो और कपटयुक्त मीठे शब्द बोलकर दूसरे के हृदय का भेद जानने में प्रयत्नशील हो वह मनुष्य बहरा होता है।

प्रश्न 8. भगवन्! मनुष्य इतना स्थूल शरीर वाला, जो कि किसी प्रकार से अपना शारीरिक कार्य भी अपने हाथों से न कर सके; ऐसा बेडोल शरीर किस पाप से होता है?

उत्तर गौतम! अपने सेठ की चोरी करने से तथा अपने आप ही साहूकार बन दूसरे का धन हड़प लेने से मनुष्य बे-डील-डोल वाला स्थूल शरीरी होता है।

प्रश्न 9. भगवन्! मनुष्य कुष्ठ (कोढ़) रोग वाला किस पाप कर्म के फल से होता है?

उत्तर गौतम! मयूर, सर्प, बिच्छू आदि को मारने से तथा जंगल में दावाग्नि लगा देने से मनुष्य कोढ़ी होता है।

साभार– जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-6

–क्रमश:

समकित के 67 बोल

-शकुन्तला लोढ़ा, ब्यावर

प्रिय पाठकों.....

पूर्व में 12 व्रतों के अतिचार आप सभी के ज्ञानवर्धन हेतु अत्यन्त सरल व श्रेष्ठ भाषा में दिया गया अत: 12 व्रतों के पश्चात् जन-जन को सम्यक्त्व की दृढ़ता व प्रेरणा हेतु आप सभी के समक्ष समकित के 67 बोल का धारावाहिक प्रस्तुत है।

इस संसार में जीव अनादिकाल से जन्म-मरण करता आ रहा है। इसका मूल कारण स्वयं का स्वयं के प्रति रहा हुआ अज्ञान व मिथ्यात्व है। जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पाने के लिए सम्यक्त्व अमोघ उपाय है, क्योंकि मिथ्यात्व संसार चक्र में फँसाए रखता है, जबकि सम्यक्त्व मोक्ष के परम सुखों को दिलाने वाला है।

सम्यक्त्व के दो भेद हैं-

1. व्यवहार सम्यक्त्व :- जो अठारह दोषों से रहित हैं, वह सुदेव है। जो पाँच महाव्रतों के धारक हैं, वह सुगुरु है तथा जो केवली प्ररूपित हैं, वह सुधर्म है। ऐसे सुदेव, सुगुरु, सुधर्म पर श्रद्धा करना व्यवहार सम्यक्त्व है।

2. निश्चय सम्यक्त्व :- आत्मा की अनुभूति अर्थात् जड़-चेतन का भेद विज्ञान होना दूसरे अर्थ में अनंतानुबंधी कषाय को दूर करना अर्थात् अनंतानुबंधी कषाय व मिथ्यात्व मोहनीय का क्षय, उपशम या क्षयोपशम करना, राग-द्रेष की ग्रन्थि का भेदन करना निश्चय सम्यक्त्व है।

जो जीव व्यवहार से सम्यक्त्व का पालन करता है, आचरण करता है, भगवान की वाणी पर श्रद्धा करता है, उसको व्यवहार समकिती कहा जाता है और यह जीव को निश्चय सम्यक्त्व की ओर ले जाने में सहयोगी बनता है। एक बार जो व्यक्ति निश्चय सम्यक्त्व का स्पर्श कर लेता है वह उत्कृष्ट देशोन ***अर्द्धपुद्गल परावर्तन** काल में अवश्य मोक्ष प्राप्त करता है।

सम्यग्द्‌र्शन रूपी गुण के बिना ज्ञान भी प्रमाणभूत नहीं गिना जाता है और चारित्र रूपी वृक्ष भी फलवान नहीं बनता है। इस गुण के बिना निर्वाण सुख की प्राप्ति नहीं होती है। अत: यह सम्यग्द्‌र्शन गुण अत्यन्त ही बलवान है।

सम्यग्द्‌र्शन के अभाव में समस्त ज्ञान, समस्त चारित्र, मिथ्या है। जैसे अंक के बिना शून्यों की लम्बी लकीर बना देने पर भी उसका कोई मूल्य नहीं होता, वैसे ही सम्यग्द्‌र्शन के बिना ज्ञान और चारित्र का कोई अर्थ नहीं रहता। अगर सम्यक्त्व रूपी अंक है और उसके बाद ज्ञान और चारित्र के शून्य हो तो प्रत्येक शून्य से दस गुनी कीमत हो जाती है। सम्यग्द्‌र्शन से ही ज्ञान और चारित्र में निखार आता है।

जिस प्रकार हंस पानी से मिश्रित दूध को फाड़ देता है और दूध को पीकर पानी को छोड़ देता है उसी प्रकार सम्यक् दृष्टि आत्मा में कर्तव्य-अकर्तव्य, पेय-अपेय, भक्ष्य-अभक्ष्य का सतत् विवेक रहता है। संयोगवश पाप प्रवृत्ति करनी भी पड़े तो भी सम्यक् दृष्टि आत्मा भीतर से तो यही समझती है कि यह पाप प्रवृत्ति करने जैसी नहीं है। सर्वज्ञ वीतराग परमात्मा के वचन पूर्ण सत्य है, उनके वचनों में लेशमात्र भी शंका को स्थान नहीं है। ऐसी दृढ़ श्रद्धा सम्यक् दृष्टि के अन्तर्मन में होती है।

''कंदमूल में सुई के अग्र जितने भाग में भी अनंत जीव रहते हैं।''
''चौदह रज्जूलोक में निगोद के

***अर्द्धपुद्गल परावर्तन – एक पुद्गल परापर्वन में एक उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी होती है, उसके आधे समय को अद्धपुद्गल परावर्तन कहते हैं।**

जीव सर्वत्र ठूँस-ठूँस कर भरे हुए है।''
''एक निगोद के अनंतवें भाग
जितने जीव ही मोक्ष गए हैं।''

इत्यादि ऐसी कई सूक्ष्म बातें हैं जिन्हें एक मात्र आगम प्रमाण के बल पर ही स्वीकार किया जा सकता है। सम्यक् दृष्टि आत्मा के पास बुद्धि का क्षयोपशम कम हो सकता है, परन्तु श्रद्धा का क्षयोपशम तो जोरदार होता है।

इसी सम्यक्त्व की विशुद्धि के निमित्त उसके 67 स्थान जानकर जो पालने योग्य हैं उन्हें पालन करे, जो त्याग करने योग्य है उनका त्याग करे।

सम्यक्त्व के 4 श्रद्धान, 3 लिंग, 10 प्रकार का विनय, 3 प्रकार की शुद्धि अर्थात् निर्मलता तथा 5 प्रकार के दूषण से निवृत्त होना, 8 प्रभावना को जानना, 5 प्रकार का भूषण उसी प्रकार भूषण से सम्यक्त्व शोभित होता है, 5 लक्षणों से सम्यक्त्व दृढ़ होता है, 6 प्रकार की यतना है, 6 आगार हैं, **यह आगार अपवाद स्थान वाले जानने चाहिए।** सम्यक्त्व 6 भावना से भावित है और सम्यक्त्व के 6 स्थान हैं। इस प्रकार इन 67 बोलों से सम्यक्त्व विशुद्ध और निर्मल होता है। ऐसा सम्यक्वान शुद्ध सम्यक्त्वी कहलाता है। **जिस प्रकार पुरुष की 72 और स्त्री की 64 कलाएँ देखने में आती है उसी प्रकार शुद्ध सम्यक्त्वी में हेय-ज्ञेय-उपादेय रूप में सम्यक्त्व 67 प्रकार से देखने में आते हैं।**

''सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना संयम नहीं और संयम गुण को प्राप्त नहीं करने वाले जीवों को मोक्ष कभी प्राप्त होने वाला नहीं।''

समकित के 67 बोल क्रमशः आत्म कल्याण हेतु प्रस्तुत हैं-

पहले बोलें श्रद्धान-4

श्रद्धान- व्यक्ति की जिन बाह्य प्रवृत्तियों को देखकर सामान्यत: विश्वास किया जा सके कि इस व्यक्ति में सम्यक्त्व है अर्थात् यदि किसी व्यक्ति की पहचान करनी है तो उसके बाहर की क्रिया से ही उसके मन की भावनाओं का अंदाजा लगाया जा सकता है क्योंकि हमारे पास उतना ज्ञान नहीं है कि उसके मन की भावना को जान सके। जिन बातों को देखकर पता चले कि कोई जीव समकिती है या नहीं, उसे श्रद्धान कहते हैं। इसके चार भेद हैं-

1. परमार्थ संस्तव :- परमार्थ का परिचय करें अर्थात् नवतत्त्व का ज्ञान प्राप्त करें।

परमार्थ- तीर्थंकर भगवंतों ने मोक्ष मार्ग के स्वरूप के संबंध में तत्त्व प्ररूपणा की है। तत्त्व का स्वरूप समझाया है और यह तत्त्व स्वरूप परमार्थ है। परमार्थ का अर्थ होता है परम अर्थ अर्थात् नवतत्त्व के स्वरूप को जाने, नवतत्त्व का ज्ञान प्राप्त करें। नवतत्त्व का ज्ञान जो व्यक्ति प्राप्त करता है उसे हृदयंगम कर लेता है, आत्मगम्य कर लेता है तब उसे आत्मा की श्रद्धा होती है।

जीव-अजीव की श्रद्धा होती है इसमें से ग्रहण करने योग्य को ग्रहण करता है छोड़ने योग्य को छोड़ता है और सभी जानने योग्य होते हैं इसलिए सबसे पहले जानना और श्रद्धा करना उसी का नाम परमार्थ है।

जिसने परमार्थ का परिचय नहीं किया उसका लक्ष्य धन, दौलत या कुछ और होता है लेकिन जिसने तत्त्व के स्वरूप को समझ लिया वह सम्यक्त्वी जीव संसार में होने वाले परिवर्तन उसके सुख-दु:ख के हेतु नहीं हैं, यह जान जाता है। उसके अंतर में यह बात बैठ जाती है कि संसार के पुद्गलों व विषयभोगों से मुझे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है। उसका एक मात्र लक्ष्य होता है कि मुझे मोक्ष जाना है। मैं धर्म केवल आत्म कल्याण के लिए कर रहा हूँ, इस लक्ष्य के बिना जितना भी धर्म करो संसार कम नहीं होगा, हम वहीं के वहीं रहेंगे।

जो व्यक्ति तत्त्व ज्ञान के अभाव में धन के लिए सुख, शांति, मोक्ष सब छोड़ने के लिए तैयार होता है वही व्यक्ति तत्त्व स्वरूप को जान लेने के बाद मन की शांति को प्रमुखता देता है।

कथा- मथुरा नगरी में जिनदास नामक श्रावक की साधुदासी नामक पत्नी थी। दोनों ने श्रावक व्रत का पालन करते हुए परिग्रह परिमाण व्रत ग्रहण करते समय गाय, भैंस आदि पशु नहीं रखने का नियम लिया था। अच्छा दूध, दही

देने वाली एक अहीरन से साधुदासी का बहिन के समान स्नेह हो गया। अहीरन के घर विवाह का प्रसंग आया तो सेठ-सेठानी ने वस्त्रालंकार देकर विवाह को शोभायमान बनाया। अहीरन खुश होकर सेठ-सेठानी को दो खेत व सुन्दर वृषभ की जोड़ी अर्पण करने लगी। त्याग के कारण मना करने पर भी अहीरन सेठ के घर वृषभ की जोड़ी बाँध गई। सेठ ने विचार किया कि इन्हें छोड़ देने से तो इनकी दुर्गति हो जाएगी। ऐसा सोच कर सेठ उनका पोषण करने लगा। अष्टमी-चतुर्दशी के दिन सेठ 30 उपवास करके पौषध व्रत लेकर बैल सुने इस प्रकार धर्म सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ते थे। सेठ भोजन नहीं करते तो बैल भी घास-पानी नहीं लेते। तब सेठ सोचता कि अब तो ये धर्म सुनने से बड़े भद्रिक भावी बन गए हैं। अत: अब तो यह मेरे साधर्मी बंधु हैं। इस बुद्धि से मुझे इनका पोषण करना चाहिए। यक्षदेव उत्सव पर वाहनों की होड़ लगती है। जिनदास का मित्र बिना पूछे बैलों को प्रतिस्पर्धा हेतु ले गया। बैल प्रतिस्पर्धा में विजयी तो हुए परन्तु उनका शरीर चाबुकों की मार से छिल गया और बल टूट गया तथा उनका खाना-पीना बंद हो गया। जिनदास अपने मित्र की निर्दयता पर खेदित हुआ। उन्होंने खाना-पीना बन्द कर दिया। सेठ ने भाव जानकर उन्हें चारों आहार का पच्चक्खाण कराया। नमस्कार मंत्र सुनते हुए दोनों वृषभ भव्य स्थिति का चिन्तन करते हुए समाधि से मृत्यु पाकर नागकुमार देव रूप में उत्पन्न हुए और कालान्तर में मोक्ष पधारेंगे। दोनों वृषभों ने तत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर व्रतों को अंगीकार किया। मिथ्यात्व को दूर कर सम्यक्त्व को प्राप्त किया और भवभ्रमण को रोक दिया।

2. सुदृष्ट परमार्थ सेवन :- नवतत्त्व को जानने वालों की संगति करें। पहले बोल में कहा गया है कि परमार्थ का परिचय करें यह परिचय मिलेगा कैसे, कहाँ से होगा तब कहा गया **सुदिट्ठ परमत्थसेवणा वावि** अर्थात् नवतत्त्व को उसके मूल स्वरूप को, सभी नय और प्रमाणों से, द्रव्य और भाव से, हर दृष्टि से समझ लिया है, अनुभव कर लिया है वह सुदृष्ट कहलाते हैं। ऐसे जो महापुरुष हैं, गुरु हैं उनकी सेवा में रहें उनका सान्निध्य प्राप्त करें। आज की भाषा में कहा जाए तो जो विशेषज्ञ हैं उन विशेषज्ञों के सान्निध्य में रहकर प्रशिक्षण प्राप्त किया जाए।

जैसे किसी व्यक्ति को डॉक्टर बनना होता है तो वह मेडिकल कॉलेज में जहाँ विशेषज्ञ डॉक्टर और विशेष मेडिकल टीम होती है, उनके पास रहता है। किसी को क्रिकेटर बनना होता है तो जो बहुत अच्छे खिलाड़ी होते हैं या अच्छे कोच होते हैं, उनके सान्निध्य में प्रशिक्षण प्राप्त करता होता है।

उसी प्रकार जब व्यक्ति की चाह-अभिलाषा मोक्ष की है, मुक्ति की है तो जो मोक्ष मार्ग के विशेषज्ञ हैं उन विशेषज्ञों के सान्निध्य में, नेश्राय में रहकर मोक्षमार्ग को, नवतत्त्व को अच्छी तरह से जाना जा सकता है आचरण किया जा सकता है। जिन महापुरुषों के पास सैद्धांतिक व प्रायोगिक दोनों प्रकार का अनुभव है, ज्ञान (नवतत्त्व, धर्म, आत्मा) मोक्ष है उनके नेश्राय में रहकर उनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है इसलिए कहा गया है कि परमार्थ को जानने वालों की सेवा भक्ति करें।

गुरु का एक वाक्य भी हमारे मन में प्रकाश करने वाला होता है। उनकी वाणी सीधे अंतरंग में उतर जाती है। गुरु को पता होता है कि किससे कैसे बात करना, किस तरीके से समझाना, कितनी डोज देना जिससे वो सीधा गले में उतर जाए। गुरु के शब्दों में वात्सल्य प्रेम व हित की इच्छा होती है जिससे वह सुनने वाले के जीवन में उतर जाती है। पुस्तक से धर्म के बारे में पढ़ने से वो भाव नहीं आते जो गुरु वचनों से आएंगे।

एक व्यक्ति को घी, शक्कर, आटा आदि खाना अच्छा नहीं लगता है लेकिन जब उसका हलवा बनाकर दिया जाए तो बड़े शौक से खाता है। पुस्तक में भी शब्द तो वही है पर उसमें वात्सल्य नहीं होता है जो गुरु के शब्दों में होता है अत: गुरु जो परमार्थ को जान चुके हैं, उन्हें पता है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए कौन सा मार्ग सही है। किस मार्ग पर आत्मिक सुख मिलेगा, इसलिए गुरु के सम्पर्क में बार-बार रहने से हमारे भीतर ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सम्यक्त्व का विकास होगा और जीवन में धर्म रम जाएगा।

श्री पुष्पचूला साध्वीजी की कथा-

पुष्पभद्र नगर में पुष्पकेतु नाम का राजा राज्य करता था। उस राजा की रानी का नाम पुष्पवती था। रानी ने एक पुत्र व पुत्री के युगल को जन्म दिया। कालान्तर में राजा ने विचार कर उन दोनों का परस्पर विवाह करने का निर्णय लिया। महारानी का निषेध होने पर भी राजा ने दोनों का विवाह करा दिया। महारानी पुष्पवती ने भगवती दीक्षा अंगीकार कर रत्नत्रय की सुन्दर आराधना की, फलस्वरूप साध्वी पुष्पवती समाधिपूर्वक मृत्यु को प्राप्त कर देवलोक में देव रूप में उत्पन्न हुई। समय बीतने पर राजा पुष्पकेतु भी मृत्यु को प्राप्त हुए और पुष्पचूल राजा बना।

देव बनी पुष्पवती ने सोचा- ''मुझे किसी भी उपाय से अपने पुत्र-पुत्री के अपकृत्य को रोकना चाहिए''। इसके लिए उसने एक बार पुष्पचूला को स्वप्न में भयंकर नरक के दर्शन कराए। नरक के दृश्य को देखकर पुष्पचूला रानी भयभीत हो उठी। एक बार उसने सभी धर्मों के आचार्यों को बुलाकर नरक का स्वरूप पूछा। किसी ने गृर्भावास, दरिद्रता, परतंत्रता, रोग आदि को ही नरक कहा। उसके बाद उसने अर्णिका पुत्र आचार्य भगवन् के पास जाकर नरक का स्वरूप पूछा। रानी ने स्वप्न में नरक का जो स्वरूप देखा था वैसे ही नरक के स्वरूप का वर्णन आचार्य भगवन् ने पुष्पचूला को बतलाया। रानी ने आचार्य भगवन् से पूछा- ''आपने नरक के यथार्थ स्वरूप का वर्णन किस आधार पर किया?'' आचार्य भगवन् ने कहा- ''जिनेश्वर भगवान ने अपने केवलज्ञान के बल से देखकर नरक के यथार्थ स्वरूप का वर्णन किया है। जिनेश्वर देव की उस वाणी को आगम ग्रंथों के रूप में गूंथा गया है। उन्हीं आगम ग्रंथों के आधार पर मैंने नरक के यथार्थ स्वरूप का वर्णन किया है।''

कुछ समय बाद पुष्पवती देव ने पुष्पचूला को स्वप्न में देवगति का स्वरूप दिखलाया। पुष्पचूला के अन्य धर्माचार्यों को देवगति का स्वरूप पूछा, परंतु किसी ने संतोषजनक जवाब नहीं दिया। उसके बाद उसने अर्णिका पुत्र आचार्य भगवन् को देवगति का स्वरूप पूछा तो उन्होंने पुष्पचूला ने अपने स्वप्न में देवभव का जैसा स्वरूप देखा था वैसे ही स्वरूप का वर्णन आचार्य भगवन् ने पुष्पचूला को बतलाया। रानी प्रसन्न हो गई। नरक व देवगति के स्वरूप को स्पष्टतया जानने पर पुष्पचूला को इस संसार के प्रति वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ और अपने पति पुष्पचूल से अनुमति मांगी। पुष्पचूल ने कहा- ''मैं तेरा वियोग सहन नहीं कर पाऊंगा, अत: दीक्षा अंगीकार कर यदि इसी नगर में रहने का वचन देती हो तो मैं दीक्षा दिलाने के लिए तैयार हूँ।'' रानी ने सोचा- ''दीक्षा के बिना आत्मा का कल्याण नहीं है। यदि राजा विहार के लिए अनुमति नहीं देता है तो एक ही स्थान पर अनासक्त भाव से रहकर भी मैं निरतिचार संयम धर्म का पालन करूंगी।'' रानी ने भगवती दीक्षा अंगीकार कर ली। पुष्पचूला साध्वी अत्यंत ही आत्म-जागृतिपूर्वक संयम धर्म का पालन करने लगी। समय का प्रवाह आगे बढ़ने लगा। अर्णिका पुत्र आचार्य भगवन् ने अपने श्रुतज्ञान के बल से देखा कि निकट भविष्य में भयंकर अकाल पड़ने वाला है। भयंकर अकाल में साधुओं को भिक्षा प्राप्ति दुर्लभ जानकर अर्णिका पुत्र आचार्य भगवन् ने अपने समस्त शिष्य परिवार को अन्यत्र विहार करने की आज्ञा कर दी। धीरे-धीरे आचार्य भगवन् अशक्त होने लगे। पुष्पचूला साध्वीजी आचार्य भगवन् के लिए बयालिस दोष से रहित निर्दोष भिक्षा लाने लगी। इस प्रकार अप्रमत्त भाव व वैयावच्य गुण के प्रभाव से पुष्पचूला साध्वी क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ हुई और समस्त घाति कर्मों का क्षय हो जाने से उन्हें केवलज्ञान हो गया। इस प्रकार परमार्थ की संगति से साध्वी श्री पुष्पचूला सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हुई।

क्रमश:

-संकलित

परमात्मा का सान्निध्य तो क्या, हम यदि परमात्मा की मुद्रा ही बना लें, पद्मासन और सिद्धासन ही बना लें तो भी हमारे भीतर हिंसा के, आक्रमण के, विरोध के भाव नहीं जन्मेंगे।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

भीतर से करूणा-हीन बनता मानव

-पदमचंद गांधी, जयपुर

परिस्थिति से मन:स्थिति के प्रभावित होने की मान्यता का नाम भौतिकवाद है। आज भौतिकवादी जीवन दर्शन ने मानवीय सत्ता को पूरी तरह अपने शिकंजे में कस कर रखा है। इसलिए मानसिक स्तर को ऊँचा उठाने की आवश्यकता नहीं समझी जाती है। आज भौतिकवाद की आंधी अपने प्रवाह में सभी को उड़ाते चली जा रही है। बुद्धि तो बढ़ी है लेकिन भाव संवेदनाएं एवं श्रद्धा खत्म या क्षीण हो गयी है। उपभोगवादी संस्कृति ने इन्हें एक प्रकार से अमान्य कर दिया गया है। आज के युग का हलाहल है- अहंकार, स्वार्थ, संकीर्णता एवं तृष्णा का व्यामोह। इसी हलाहल के प्रभाव से इतने समर्थ एवं सक्षम चिन्तनशील ऋषि की भूमिका निभाने वाला मनुष्य पाशविक एवं पैशाचिक प्रवृतियों में तल्लीन हो रहा है वह संवेदनहीन होकर अपनी सारी ऊर्जा को इसी में खपा कर नष्ट कर रहा है।

नवयुग का सृजन भाव संवेदनाओं की पृष्ठभूमि पर निर्भर है। भाव संवेदनाएं ही करूणा को जन्म देती है, और करूणा से उत्पन्न होती है अहिंसा, दया और अनुकम्पा! अहिंसा कोई थोपी हुई या क्रय करके दी जाने वाली वस्तु नहीं है इसका सीधा सम्बन्ध आत्मीयता से है इसके लिए धर्म पर श्रद्धा, आध्यात्म पर अटूट विश्वास तथा सद्गुरू के प्रति समर्पण का भाव जरूरी है। इसके लिए जरूरी है, मन में त्याग एवं तप की तितिक्षा तथा दिल में परमार्थ भावना की बयार। लेकिन देखने में आता है आज मानव का लक्ष्य मात्र अपने स्वार्थ एवं निजी महत्वाकाक्षांओं की पूर्ति तक सीमित हो गया है। तथा उसका उद्देश्य भी क्षुद्र बन गया है, एवं मानसिकता भी संकीर्ण बन कर रह गयी है। इस प्रकार की संकीर्णता एवं स्वार्थपरकता को धीरे धीरे व्यक्तित्व का विनाश करने का अवसर मिल जाता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य केवल मात्र विलास, वैभव, एवं भोग मान बैठते है और अपने आत्मोन्नति के मार्ग को अवरूद्ध कर लेते है। इन्हीं निकृष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसे व्यक्ति अपने शरीर, स्वस्थ मन एवं विचारों को तबाह करते दिखाई पड़ते हैं। क्षुद्र विचारों के निरन्तर प्रहारों से उनका मस्तिष्क शमशान की तरह मनोविचारों की जलती चिताओं से भरा रहता है। जिस जीवन को शान्ति सुख एवं आनन्द के साथ जिया जा सकता है उसी जीवन को वह दु:ख का जखीरा बना लेते हैं। क्षुद्रता, संकीर्णता, स्वार्थपरता, व्यक्ति के मौलिक गुण नहीं हैं, मौलिक गुण है, करूणा, धृति, क्षमा, दया, अस्तेय, इन्द्रिय, संयम, सत्य, अहिंसा इत्यादि जो आन्तरिक प्रगति का आधार है जो सर्वभौम है, जिनसे मानवता का जन्म होता है। लेकिन ये सभी तभी संम्भव है जब व्यक्ति उत्कृष्ट विचारों का चिन्तन करें। आदर्श विचारों में ही व्यक्ति की आत्मा का बिम्ब, प्रतिबिम्ब होता है। विचार व्यक्ति की प्रवृत्ति के अनुसार होते है क्योंकि जो जैसा सोचता है वह वैसा ही करता है। अत: अपनी सोच एवं विचारों को शुद्ध रखना जरूरी है। क्योंकि विचार ही व्यक्ति को करूणामयी बनाते है तथा चरित्र का निर्माण करते हैं।

आज व्यक्ति की लालसा एवं स्वार्थपरता ने उसे संकीर्ण बना दिया है वह अपनी सारी मर्यादाएँ तोड कर अपने स्वार्थों को पूरा करना चाहता है, इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। यह सच है, उफनती हुई नदी जब तक अपनी मर्यादाओं की सीमा में बहती है चहुं और हरियाली व खुशहाली लाती है परन्तु सीमा का अतिक्रमण करते ही चहुँओर बरबादी और विनाश का आलम छा जाता है। क्योंकि जब-जब मर्यादाएँ टूटी है तब-तब विनाशकारी घटनाएँ घटित हुयी है।

अगर हम देखें कि मनुष्य के स्वार्थ ने क्या किया है? उसके अहंकार ने क्या किया है? तो स्पष्ट होता है स्वार्थ ने मनुष्यता को निगल लिया है, इसने संवेदनाओं को निगल लिया है और यदि हमारे अन्दर अगर संवेदना जगती भी है तो हम डर के कारण, भय के कारण उसको दबा देते है। हमारी भावनाएँ भय के बोझ के कारण दब गयी है। आज अरिहन्तों के वचन, सिद्धों की आवाज तथा गुरुभगवन्तों

की देशना हमें समझाती है, जिनवाणी हमें समझाती, आगम हमे समझाते हैं, लेकिन ये सभी हमारे सिर के ऊपर से निकल जाते हैं। आज के दौर में संवेदित होने का, संवेदनशील एवं करूणामयी बनने का कोई स्थान नहीं। संवेदनाएँ अब शब्दों में सिमट गयी है।

आज सुर्खियों में आता है आदमी करूणा हीन बन कर एक दूसरे से अनीति से फायदा लेने में जुटा हुआ है। इसके फायदे के लिए ही सबके अपने-अपने स्वार्थ हैं, अपने-अपने ढंग है अपनी-अपनी रीति है। लेकिन यह जीवन का अपमान है; सम्मान नहीं है। आज हमारे हृदय केन्द्र को जाग्रत करने की आवश्यकता है। जीवन में सबको प्यार की तलाश है, सभी प्यार पाना चाहते हैं और आचारांगसूत्र में कहा गया है कोई भी जीव मरना नहीं चाहता है सबका अपना-अपना अस्तित्व है, सब को जीने का अधिकार है, लेकिन आज हर कोई शोषण करता है, गुलाम बनाता है अपने अधीन रखना चाहता है निर्बल एवं कमजोर को तुच्छ समझता है, उन पर चोट करता है, ये सभी हिंसा की श्रेणी में आते हैं। महावीर ने कहा सभी को अपना जीवन प्रिय है, उसके जीने में सहायक बनो, यदि आप जीवन दे नहीं सकते तो उसे मारने एवं मानसिक प्रताड़ना पहुँचाने का हक भी नहीं है।

''**मित्ति मे सव्व-भूएसू वेरं मज्जं न केणइ**'' अर्थात् मेरे सभी मित्र है कोई शत्रु नहीं है, मेरा किसी से वैरभाव नहीं हैं। ऐसी भावना से मैत्री विकसित होती है। जब सभी जीव मित्र है तो वैर नहीं होगा और हिंसा होगी ही नहीं। इससे सभी के प्रति प्रेम भाव होगा। यह सच है जीवन संवेदना से सिंचित होता है किन्तु व्यक्ति इसे सिंचित करना ही नहीं चाहते, वह केवल सिंचित होना चाहते हैं, प्रेम पाना तो चाहते हैं लेकिन प्रेम करना नहीं चाहते। हम पुण्य करे बगैर, पुण्य का फल पाना चाहते हैं। शुभ कार्य करना नहीं चाहते है सत्कर्म करना नहीं चाहते किन्तु सत्कर्मों के परिणाम पाना चाहते है। हम पाना चाहते है कि हमारे साथ अच्छा-अच्छा होता चला जाये लेकिन हम अच्छे कर्म करें, अच्छे भाव रखें व अच्छे विचार रखें इसकी आवश्यकता महसूस नहीं होती।

संवेदनशीलता तो वह है, जो दूसरों की पीड़ा एवं परेशानी में अपने को देखे, उसे अपनी समझे, उसके दर्द में अपने स्वरूप को देखें। दूसरों का दु:ख जब अपना लगने लगे तभी करूणा का जन्म होता है। संवेदनहीनता मानवता की पराकाष्ठा को पार कर गई है, समाज को आज फिर से संवेदनशील व सृजनशीलता की आवश्यकता है, ऐसे में हमें गुरुभगवन्तों की अत्यन्त आवश्यकता महसूस होती है, जो समाज पर प्रेम का, एकता का, सरलता का, हृदय की विशालता का ज्ञान का, कौशल का, कर्त्तव्य परायणता का, करूणा का एवं संवेदनाओं का संचार कर सके। इन्हीं से समाज में फिर से '**सत्यम् शिवं सुन्दरम्**' के स्वर गुंजायमान हो सकेंगे तथा जन जन की पीड़ा को महसूस कर अपने भीतर की करूणा को प्रस्फुटित कर अपनी मानवता अपनी इन्सानियत को जिन्दा कर सकेंगे जो प्राय लुप्त या मर चुकी है।

प्रभु महावीर ने कहा मैत्री और करूणा की परिपालना ही मानवता को श्रेष्ठ बनाती है। जैन दर्शन में आत्म चेतना को सम्यग्द्‌र्शन की संज्ञा दी है तु सम्यग्द्‌र्शन के 5 लक्षण सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था बताये गये हैं। जिस की आत्मा में अनुकम्पा का भाव नहीं करूणा की धारा नहीं, किसी पीड़ित और संतप्त आत्मा को देखकर सहानुभूति की स्फुरणा नहीं होती तो उसमें सम्यग्द्‌र्शन का प्रादुर्भाव भी नहीं हो सकता। सद्गुणों एवं गुणीजनों के प्रति प्रमोद भावना का गुण भी विकसित किया जाये जिससे दूसरों को हँसते देखकर स्वयं भी खुश हो सके। मानव चेतना की मुख्यधारा है, मैत्रीभाव, करूणाभाव और प्रमोदभाव। यही चेतना की विराटता है इसलिए अनुकम्पा और करूणा को सम्यग्दर्शन का मुख्य लक्षण माना है। **अत: भीतर से करूणाहीन बनते मानव को करूणाशील एवं संवेदनशीलता के लिए प्रयास करना है, इसकी पात्रता के लिए सम्यग्दर्शन को समझना होगा। जिसका आधार जिनवाणी है, आगमवाणी है, गुरु के अमृतमयी प्रवचन हैं जिनके माध्यम से भीतर में दबी हुयी करूणा के स्रोत बहने लगे और चहुँओर प्रेम, मैत्री का वातावरण बन सके। इसी तरह मानव करूणाशील एवं संवेदनशील बनकर 'मानवता' एवं 'इन्सानियत' का इतिहास पुन: सृजित कर सकता है।**

भारतीय संस्कृति की मर्यादा बनाम पाश्चात्य संस्कृति की अशिष्टता

–आभाकिरण गांधी, धागड़मऊ

संस्कृति इंसान को आरोग्यता, समृद्धि, सफलता, माधुर्य, सहयोग और आध्यात्मिक सुख प्रदान करती है। संस्कृति हमारे पाँवों की पायजेब, हाथों की ऊर्जा, गले का हार, आँखों की रोशनी, मन का मीत व हृदय का गीत है। इसी के सहारे जिन्दगी का नवनीत है। राष्ट्र देशभक्ति का मधुर संगीत है।

हम मानसरोवर के हंस बनें
कुएँ के मेढ़क नहीं
जीवन के मूल्यों को जानें
अपनी संस्कृति को पहचानें
चिराग जलाएँ भीतर में
स्वबोध प्रकाश को फैलाएँ
अपनी संस्कृति में जीएँ
पाश्चात्य संस्कृति को दूर हटाएँ
मन से मिटाएँ।

भारतीय संस्कृति त्याग-प्रधान संस्कृति है। यह भूमि राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, ऋषि-मुनियों की है, जहाँ अनेकता में भी एकता के गीत गाए जाते हैं। दीन-दुखियों को गले से लगाया जाता है। उनके दु:ख-दर्द मिटाए जाते हैं। आपस में मैत्री, भाईचारे का सन्देश दिया जाता है। करुणा का निर्झर अन्त:करण में बहता है। त्याग व बलिदान के लिए यह भारत भूमि सदियों से पूजी जाती है। उसी संस्कृति पर विकृति की गहरी चोट आई है। जिस संस्कृति में विकृति आती है वहाँ के नागरिकों का जीवन उत्थान की ओर नहीं अवसान की ओर जाता है। संस्कृति में विकृति आते ही संस्कार विकृत होने लगते हैं। संस्कारों में विकृति नारकीय जीवन की प्रस्तुति है। दो शब्द हैं- संवेग और उद्वेग। ये हमारे मन के दो रूप हैं।

संवेग– सम+वेग। हमारे विचारों का वेग सम्यक् होता है तो हमारी सोच सकारात्मक होती है। सकारात्मक सोच हमारी संस्कृति की पहचान है, हमारा मूलाधार है। मूल सुरक्षित है तो फूल-पत्ते, फल सुरक्षित रहते हैं, चारों तरफ खुशहाली रहती है।

उद्वेग– चंचलता का प्रतीक है। चंचल चित्तवृत्ति व्यक्ति को दु:खी व अशांत करती है। पाश्चात्य संस्कृति का उद्वेग हमारे मन में आया है, जिससे हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। यह ह्रास परिहास हमारी जीवन शक्ति को नष्ट करता है। जीवन को सुन्दर बनाना है तो संस्कृति की सुरक्षा महत्त्वपूर्ण है। संस्कृति बचेगी तो सभ्यता संस्कारों का विकास होगा। किसी भी देश की आज पहचान है तो उसकी संस्कृति सभ्यता के कारण है। हमारी भारतीय संस्कृति महान है। यह भोग प्रधान नहीं, त्याग प्रधान

संस्कृति है। जहाँ त्याग है वहाँ आनन्द ही आनन्द है, लेकिन आज हमारा आनन्द न जाने कहाँ खो गया? जहाँ देखो वहाँ अशान्ति, बेचैनी, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, उद्वेग भरा वातावरण, इसका कारण पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण है। यह संस्कृति व्यक्ति को सभ्य तो बनाती है, पर शालीन व शान्त नहीं। आज मनुष्य ने शिक्षा की बहुत डिग्रियाँ प्राप्त कर ली, लेकिन मन में शान्ति नहीं। मन बेचैन-सा रहता है, क्यों? क्योंकि शिक्षा के साथ दिशा नहीं मिल रही है। दिशा के अभाव में जीवन मूल्यहीन बनता जा रहा है।

मानवीय मूल्यों को पहचानें, जीवन की अनन्त संभावनाओं को उद्घाटित करें, पाश्चात्य संस्कृति के उद्वेग को मन से मिटाएँ एवं संस्कृति को अपनाएँ। प्रदर्शन में नहीं, स्वदर्शन में जीएँ।

आज हमारी संस्कृति तो जैसे धूमिल हो गई
हमारे मानव होने की पहचान ही मुश्किल हो गई
पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में
मानवता कातिल हो गई
शान्ति की जगह जगत् में अशान्ति शामिल हो गई

हमारी संस्कृति को भूलकर हम पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में भाग रहे हैं। यह दौड़ होड़ की है, स्व-मोड़ की नहीं। जहाँ स्व का मोड़ नहीं, वहाँ की दौड़ कभी खत्म नहीं होती। दौड़ते-दौड़ते कब तक दौड़ेंगे? आखिर ठहरने पर ही विश्राम मिलेगा। सम्यक् दिशा में सम्यक् समझ जिस दिलो-दिमाग में रहती है, वहाँ आनन्द व खुशी की वृष्टि होती है।

देखो! सारा संसार ही झंझटों से भरा पड़ा है
हर कदम-कदम पर देखो तो झंझट खड़ा है
जिसने झंझट को झटका दिया वो वीर बड़ा है
कोई महावीर ही संसार के झंझटों से लड़ा है।

हमें दु:ख, मुसीबतों, झंझटों से लड़ना है। भारतीय संस्कृति कहती है- दु:ख व परिश्रम से प्रेम करो, जिससे तुम मजबूत बनोगे। वही मजबूती हमारे दिलो-दिमाग में लानी है। कागज के फूल कभी खुशबू नहीं देते, सुन्दर जरूर लग सकते हैं। ऐसे ही पाश्चात्य संस्कृति बाहर से सुन्दर दिखती हो, पर उसमें मधुरता, अपनत्व, भाईचारे के भाव गौण हैं। जब से मानव ने अपने भीतर की आवाज को सुनना बंद कर दिया तब से धर्म-संस्कृति जो मानवता के पाँवों की पायजेब था, वही पाँवों की जंजीर बन गया।

पशु और प्रभु दोनों मनुष्य के ही सिक्के के दो पहलू हैं। अगर वह मनुष्यत्व से गिरता है तो वह पशु है। अगर वह मनुष्यत्व से ऊपर उठता है तो वह मनुष्य के रूप में भी प्रभु हैं। अंग्रेजी में लिखे DOG को अगर उल्टा कर दें तो GOD बन जाता है। यदि इन्सान अपनी सोच व स्वभाव को सरल, सौम्य और उदार बना ले तो निश्चित ही हमारे कदम देवत्व की ओर होंगे। स्वार्थ आपसी छीना-झपटी, ईर्ष्या और क्रोध जैसे मनोविकारों से घिरकर तो मनुष्य पशु ही कहलाएगा। दिव्यता हो हमारे कर्म में, व्यवहार में, भाषा में, सोच और आत्मा में। जिसके पास दिव्यता है वह देवता है। इस दिव्यता को आज हम खोते जा रहे हैं।

ब्रह्ममुहूर्त्त में उठना ऊर्जा का संचय करना, दिल-दिमाग को ताजा रखना। आज हमारे उठने का, सोने का, खाने का, पीने का कोई नियम नहीं। जब चाहें, जैसे चाहें, वैसे मनमाना कार्य करते रहते हैं। फिर परिणाम भी अनचाहा ही आता है। उसे देखकर हम घबराते हैं कि यह क्या हो गया? आज चारों तरफ बेचैनी, टकराव, अशान्ति का वातावरण है। स्वयं व परिवार के लिए एक मिनट का भी समय नहीं। ऐसी अंधी दौड़ में कब तक खुद को दौड़ाते रहेंगे। अपनी संस्कृति महान है। उसका अनुशरण करते हैं तो बीमारी, लड़ाई-झगड़ा आदि कोसों दूर रहते हैं। बाहरी चकाचौंध में हम नहीं उलझें, अपने मूल अस्तित्व को पहचानें। किंपाक फल दिखने में बहुत सुन्दर होता है, लेकिन खाते ही व्यक्ति के प्राण चले जाते हैं। ऐसे ही पाश्चात्य संस्कृति हमारे दिलो-दिमाग में घर कर रही है। वही हमारे प्राणों का खतरा है। जीवन को स्वस्थ एवं शान्तिमय बनाना है तो स्व-संस्कृति को स्वीकार करना और इसका सम्मान करना होगा तभी जीवन का रथ सम्यक् दिशा में चलेगा।

पाश्चात्य संस्कृति अधोपतन की
स्व संस्कृति उत्थान की
दोनों से ऊपर उठकर
महिमा जानो अपने आपकी

अपनी संस्कृति को जानें, अपने आप से प्रेम करें। महापुरुषों के पद्चिन्हों को अपनाएँ। झुलसती हुई अग्नि में अपने आपको न झौंके। शान्ति के सरोवर में अपने आपको नहलाएँ तभी आनन्द का स्रोत हमारे भीतर प्रवाहित होगा। समाज, देश, राष्ट्रभक्ति की सुरक्षा में अपने आपको जोड़ें। विश्वकल्याण, मैत्री के भावों का निर्झर भीतर में बहाएँ, यही मंगलभावना।

POSITIVE REPORT की अब नहीं है बारी,
POSITIVE सोच कैसे रखें उसकी कर लो तैयारी!

राम शासन में ना कोई छोटा और ना ही कोई बड़ा है,
हमारी कल्पना से जो परे हो, इन महापुरुष ने वैसा युद्ध लड़ा है।
यहाँ सरलता की पूछ होती है,
वरना ये राम दरबार है ,यहाँ इन्द्र भी अपना ताज लिए खड़ा है।।

'Eye to I' बुक के लॉन्च से एक नई और ऐतिहातसक शुरुआत हो चुकी है। 'आई टू आई' एक उपन्यास या आत्मकथा नहीं है, परंतु एक ऐसी किताब है जिससे हम स्वयं की दृष्टि से अपने भीतर झांक सकते हैं। इस पुस्तक में आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के चिन्तनों से लिए गए 107 Quotations हैं जो सभी पाठकों को जीवन बदलने वाले अनुभव देगा। यह किताब कोई भी पढ़ सकता है। उम्र, लिंग, संस्कृति, धर्म का अंतर किसी भी पाठक को किताब पढ़ने से नहीं रोक सकता, यही कारण है की इस पुस्तक की प्रभावना अपने परिवारजनों और मित्रों में भी की जा सकती है।

अमेजन के माध्यम से पुस्तक का Pre&Order शुरू हो चुका है। Pre&Order शुरू होते ही कुछ ही समय बाद पुस्तक ने 1st रैंक इन Jainism और 1st रैंक इन Hindu Studies का स्थान प्राप्त किया। पुस्तक हिंदी और इंग्लिश दोनों भाषाओं में उपलब्ध है। यह पुस्तक 'Know & Grow Publication' का पहला प्रकाशन है। पुस्तक में विभिन्न प्रकार के Doodles भी है, जो इस पुस्तक को बाकी पुस्तकों से अलग बनाते हैं। इस पुस्तक की खास बात यह है की पुस्तक ऑर्डर करने वाले के नाम से कस्टमाइज्ड (customized) होकर आएगी, यानी पुस्तक के पहले पन्ने पर आपका स्वयं का नाम हस्तलिखित होगा।

पुस्तक की कीमत मात्र रू. 225 है और इसे बहुत सरलता से ऑर्डर किया जा सकता है। हम आशा करते हैं कि आप सभी पुस्तक का ऑर्डर देंगे और पुस्तक को पढ़ने के बाद आपको जीवन बदलने वाले अनुभव प्राप्त होंगे।

''सर्वशक्तिमान : वर्द्धमान के पाँच मौलिक सिद्धांत''

-कांता बैद, गाजियाबाद

समग्र विश्व को अपने ज्ञानलोक से प्रकाशित करने वाले जगद्गुरु, जगतपितामह, राग-द्वेष के विजेता, सर्वशक्तिमान वर्द्धमान ने लोक कल्याणार्थ शांति स्थापना हेतु अनेकानेक सूत्र प्रदान किए।

1. अहिंसा- **''मित्ती मे सव्वभूएसु''** भगवान महावीर ने कहा है- पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति ही क्यों न हो, सब प्राणी जीना चाहते हैं। अत: आत्मवत् देखने वाला ही सबके साथ मैत्री का व्यवहार कर सकता है, वही भागीरथ बन सकता है। पर्यावरण को असंतुलित करना, उसके साथ छेड़छाड़ करना उचित नहीं है।

''अहिंसा परमोधर्म:''- भगवान महावीर की अहिंसा हमें कायरता नहीं सिखाती अपितु वह अनीति और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। अहिंसा शांति प्राप्त करने का मार्ग है। अहिंसा से निर्मल संसार है। अपना लो अहिंसा आवश्यकता नहीं आभार है।

2. सत्य- भगवान महावीर का दूसरा सिद्धांत सत्य महाव्रत है। अहिंसा आराधना सत्य की आराधना के बिना नहीं हो सकती। अहिंसा की उर्वरा भूमि में ही सत्य का पौधा उग सकता है, पनप सकता है। सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सत्य की नींव पर ही अहिंसा व्रतों का प्रसाद सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी हो सकता है।

भगवान महावीर के अनुसार साधक के कदम जितने अहिंसा की ओर बढ़ें उतने ही सत्य की ओर बढ़ें। सत्य और अहिंसा विश्व का मूलाधार है। इनके बिना जो भी है शून्य है, मिथ्या है।

आचारांग सूत्र में कहा है **''सच्चम्मि धिइं कुव्वहा''**। **''एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावं कम्मं झोसई''** -हे साधको! सत्य में धृति और स्थिति करो। सत्य में संलग्न मेधावी सब पाप कर्मों को जला डालता है।

''सच्चस्स आणाए उवट्ठिओ मेहावी मारं तरइ''- सत्य की आज्ञा में उपस्थित रहने वाला मेधावी जन्म-मरण को पार कर सकता है। सत्य से ही व्रत, नियम, तप, त्याग, प्रत्याख्यान आदि सार्थक होते हैं। सत्य सारभूत तत्त्व है, संजीवनी है, जो सब सद्गुणों को जीवन प्रदान करती है। सत्य से ही सब विद्याएँ सिद्ध होती हैं।

सत्येन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपते रवि:।
सत्येन वाति वायुश्च, सर्व सत्ये प्रतिष्ठितम्।।

सत्य ने ही पृथ्वी को धारण कर रखा है, सत्य से ही सूर्य तपता है, सत्य से ही हवा चलती है, सब कुछ सत्य से ही स्थिर है। इससे ज्यादा सत्य की महिमा पर और कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं।

प्रश्न व्याकरण सूत्र- **''तं सच्चं खु भयवं''**- सत्य ही भगवान है।

''सत्यमेव जयते'' सत्य की हमेशा जीत होती है।

3. अचौर्य- भगवान महावीर का तीसरा सिद्धांत अचौर्य व्रत है- जिसको सरल नहीं समझना। साधु सम्पूर्ण अदत्तादान व्रत को अंगीकार करता है तो श्रमणोपासक स्थूल अदत्तादान का त्यागी होता है। द्रव्य चोरी और भाव चोरी दोनों ही वर्जनीय है।

दशवैकालिक सूत्र में तप का चोर, अवस्था का चोर, रूप का चोर, आचार भाव का चोर किल्विषिक (नीच) देव की योनि में उत्पन्न होते हैं, अत्यधिक संग्रह में दृष्टिगोचर होते हैं, यह एक दण्डनीय अपराध भी है, इससे आत्मा को कदापि शांति नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति हमेशा चिन्ता में निमग्न रहता है, गुणों का ह्रास हो जाता है। दया,

प्रेम, करुणा उससे कोसों दूर रहते हैं। अत: आत्मा की उन्नति चाहने वाला व्यक्ति चोरी का त्याग करता है। वह अचौर्य (अस्तेय) व्रत की आराधना करके आत्मा को पवित्र बना लेता है।

4. ब्रह्मचर्य– भगवान महावीर स्वामी ने जो पाँच महाव्रतों को दिए हैं उनमें ब्रह्मचर्य व्रत- उत्तम व्रत मोक्ष मार्ग का भूषण है और सर्वोत्तम मंगल मार्ग है। ब्रह्मचर्य का वास्तविक अर्थ आत्मा में रमण करना है अर्थात् सब इन्द्रियों और सम्पूर्ण विकारों पर पूर्ण अधिकार कर लेना है। भगवान महावीर ने साधु के लिए ब्रह्मचर्य व्रत महाव्रत के रूप में और श्रावक के लिए अणुव्रत के रूप में स्वीकार किया है। मन की पवित्रता ब्रह्मचर्य व्रत से ही सधती है। जप-तप-ध्यान की साधना के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना जरूरी है। विश्रृंखलित मन किसी भी साधना को ठीक से नहीं कर सकता।

सूयगडांग सूत्र अध्याय 6 में प्रभु ने फरमाया- **''तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं''** सब तपों में ब्रह्मचर्य सर्वोत्तम है जो यह आगम वाक्य है। ब्रह्मचर्य की महत्ता के लिए पर्याप्त है।

उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय 16 में कहा गया है–

देवदाणव गंधव्वा, जक्ख-रक्खस किन्नरा।
बंभयारिं, नमंसंति, दुक्करं, जे करंति तं।।

जो महान् आत्मा दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन करती है, उसके चरणों में देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर आदि भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं। ब्रह्मचर्य के प्रताप से व्यक्ति चिरायु, सुन्दर, सुदृढ़, तेजस्वी और महापराक्रमी बनता है। यह मानव का मेरूदण्ड है।

संसार सागर से पार होने के लिए ब्रह्मचर्य उत्कृष्ट साधन है।

ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार करना मानव जन्म को सार्थक करना एवं मोक्ष रूपी उत्तम फल को प्राप्त करना है।

5. अपरिग्रह– भगवान महावीर का स्पष्ट उद्घोष रहा है कि अहिंसा को विश्व के हृदय मंदिर में प्रतिष्ठित करना होगा। वही तृष्णा रूपी सहस्त्रबाहु को पराजित करने में सक्षम है। अपरिग्रह की साधना करने वाला साधक अपने अधिकार की वस्तुओं में संतुष्ट रहता है, अनाधिकृत चेष्टा नहीं करता। फलस्वरूप उसके मन में स्वत: ही अनाश्रितों और असहायों को आश्रय और सहयोग देने की तत्परता उद्बुध होती है। साधु भी वस्त्र, पात्र में मूर्च्छा न रखें तब ही वह अपरिग्रही कहे जा सकते हैं। परिग्रह सब पापों का केन्द्र है- **''अमरा किंकरायन्ते संतोषो यस्य भूषणम्''** संतोषी के लिए देव भी किंकर तुल्य है। तब ही तो कहा गया है- **''संतोषामृत पिया करो''**।

अपरिग्रही साधक मानव समाज में शांति स्थापना में नींव का पत्थर बन सकता है।

''सर्वशक्तिमान'' भगवान महावीर विशाल संस्कृति के पुरोधा हैं। भगवान महावीर जैन आचार और विचार परम्परा के चरम तीर्थंकर हैं, जिनका चिन्तन गहन, गंभीर और विशाल था। उनका आचरण उतना ही निर्मल और विशुद्ध था। उन्होंने व्यक्तित्व निर्माण पर विशेष बल दिया। व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास सिद्धांतों पर चलने से ही सम्भव है।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह -मोक्ष मार्ग के साधन हैं। अंतिम लक्ष्य मोक्ष पाना और जन्म-मरण से मुक्त होना है।

एक शब्द उद्वेलित कर सकता है, एक से महाभारत हो सकती है तो एक से जीवन में रामायण भी घटित हो सकती है। एक शब्द यदि जीवन में शांत सुधारस का झरना प्रवाहित कर सकता है तो एक शब्द बैर और क्षोभ की स्थितियां भी निर्मित कर सकता है।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

दो भाई

दो भाई परस्पर स्नेह-सद्भावपूर्वक रहते थे। दोनों भाई जब भी कोई वस्तु लाते तो एक-दूसरे के परिवार के लिए भी अवश्य ही लाते। दोनों भाई सदा एक-दूसरे को आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखते।

एक दिन किसी बात पर दोनों में कहासुनी हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि छोटे भाई ने बडे. भाई के प्रति अपशब्द कह दिए। बस फिर क्या था? दोनों के रिश्तों के बीच दरार पड़ गई। उस दिन से ही दोनों अलग-अलग रहने लगे और दोनों के बीच बोलचाल भी बंद हो गई। इस तरह कई वर्ष बीत गए। मार्ग में जब भी दोनों आमने-सामने हो जाते तो कतराकर दृष्टि बचा जाते।

कुछ वर्षों बाद छोटे भाई की कन्या का विवाह निश्चित हुआ। उसने सोचा कि बडे. आखिर बडे. ही होते हैं, जाकर मना लाना चाहिए। अब ऐसी भी क्या नाराजगी!

वह बड़े भाई के पास गया और पैरों में पड़कर पिछली बातों के लिए क्षमा माँगने लगा। बोला, ''अब चलिए और विवाह कार्य संभालिए!'' पर बड़ा भाई न पसीजा, उसके घर चलने से साफ मना कर दिया।

छोटे भाई को बहुत दु:ख हुआ। अब वह इसी चिंता में रहने लगा कि कैसे भाई को मनाया जाए। इधर विवाह में भी बहुत ही थोड़े दिन रह गए थे। बाकी सगे-संबंधी भी आने लगे थे। एक सम्बन्धी ने बताया कि ''तुम्हारा बड़ा भाई एक संत के पास प्रतिदिन जाता है और उनका बहुत आदर भी करता है तथा कहना भी मानता है।''

छोटा भाई उन संत के पास पहुँचा और पिछली सारी बातें बताते हुए अपनी गलती के लिए क्षमायाचना की तथा गहरा पश्चात्ताप व्यक्त करते हुए उनसे प्रार्थना की कि ''आप किसी भी तरह मेरे भाई को मेरे यहाँ आने के लिए राजी कर दें।''

दूसरे दिन जब बड़ा भाई सत्संग में गया तो संत ने उससे पूछा- ''क्यों तुम्हारे छोटे भाई के यहाँ कन्या का विवाह है? तुम क्या-क्या काम संभाल रहे हो?''

उसने कहा- ''मैं तो विवाह में सम्मिलित ही नहीं हो रहा गुरुदेव! कुछ वर्ष पूर्व मेरे छोटे भाई ने मुझे ऐसे कड़वे वचन कहे थे, जो आज भी मेरे हृदय में काँटे की तरह खटक रहे हैं।''

संतजी ने कहा- ''सत्संग के बाद मुझसे मिलकर जाना, जरूरी काम है।''

सत्संग समाप्त होने पर वह संत के पास पहुँचा तब संत ने पूछा- ''मैंने गत रविवार को जो प्रवचन दिया था उसमें मैंने क्या कहा था? जरा याद करके बताओ?''

अब बड़ा भाई बिलकुल मौन।

काफी देर सोचने के बाद हाथ जोड़कर बोला- ''माफी चाहता हूँ गुरुदेव! कुछ याद नहीं आ रहा कि कौन-सा विषय था?''

संत बोले- ''देखा! मेरी बताई हुई अच्छी बातें तो तुम्हें आठ दिन भी याद न रही और छोटे भाई के कड़वे बोल जो वर्षों पहले कहे गए थे, वे तुम्हें अभी तक हृदय में चुभ रहे हैं। जब तुम अच्छी बातों को याद ही नहीं रख सकते, तब उन्हें जीवन में कैसे उतारोगे। और जब जीवन नहीं सुधारा तब सत्संग में आने का लाभ ही क्या रहा? अत: कल से यहाँ मत आया करो। बेकार अपना समय व्यर्थ मत करो।''

अब बड़े भाई की आँखें खुली। उसने आत्मचिंतन कर स्वीकार किया कि "मैं वास्तव में गलत मार्ग पर हूँ।" उसके बाद वह अपने छोटे भाई के घर गया और उसे अपने गले से लगा लिया। दोनों भाइयों की आँखों में खुशी के आँसू थे।

हमारे साथ भी ऐसा ही होता है। अक्सर दूसरों की कही किसी बात का हम बुरा मान जाते हैं और बेवजह उससे दूरी बना लेते हैं। जबकि हमें चाहिए ये कि हम आपसी बातचीत से मन में उपजी कटुता को भुलाकर सौहार्द्रपूर्ण वातावरण बनाएँ। न स्वयं किसी से रूठें, न किसी को रूठने का मौका दें।

भक्ति रस

वर्तमान-वर्द्धमान के 5 मौलिक सिद्धांत

-दीपा नितिनकुमार जैन, खिरकिया

जैनत्व का रंग अपने आप में ही इतना गहरा है
अहिंसा परमो धर्म का जहाँ रहता पहरा है
जियो और जीने दो का सिद्धांत प्रभु महावीर फरमा गए
प्राणी मात्र पर अपनी करुणा महर बरसा गए।।1।।
सत्य की राह पर चलना भी कहाँ इतना आसान है
महापुरुषों ने सत्य के खातिर, न्यौछावर कर दी अपनी जान है
सत्यवादी राजा हरिशचंद्र अपने नाम का इतिहास रच गए
सत्य की रक्षा हेतु स्वयं बाजार में बिक गए।।2।।
चौर्य कर्म से कहाँ, कभी किसी का भला हुआ है
संतुष्टि करें उसी में, जो हमें मिला हुआ है
चोरी करने गए थे प्रभव चोर लेकिन
जंबूजी के आगे चला न उनका जोर
पैर चिपक गए, जब ले जाने लगे धन की गठरिया
सुनकर जंबूजी का वार्तालाप, साथियों संग चले, संयम की डगरिया।।3।।
ब्रह्मचर्य की महिमा जग में सबसे न्यारी,
शीलवंत के चरणों में नतमस्तक दुनिया सारी
ब्रह्मचर्य सम तप नहीं, सभी तपों में श्रेष्ठ है, सर्वोत्तम है
विजय सेठ, विजया सेठानी का उदाहरण अति उत्तम है।।4।।
घोर परिग्रह के कारण, मम्मण सेठ पहुँचे नरक के द्वार
माया जोड़ी बेशुमार, तृष्णा का नहीं आया पार
मानव भव किया बेकार, खाई योनियों की मार
वर्द्धमान के सिद्धांतों को अपनाएँ हम,
मानव जीवन सफल बनाएँ हम।।5।।

सत्य
अहिंसा
अचौर्य
ब्रह्मचर्य
अपरिग्रह

भारतीय शिक्षा पद्धति बनाम पाश्चात्य शिक्षा पद्धति

–सजग, नीमच

प्राचीनकाल में भारत को विश्व गुरु की उपाधि प्रदान की गई थी, क्योंकि भारत में हजारों वर्ष पूर्व जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन कर दिया गया था। आधुनिक विज्ञान भी उनका अनुसरण करता है। भारत प्राचीनकाल में ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध था। यहाँ आर्यभट्ट, पतंजलि, सुश्रुत, पाणिनी, चाणक्य, भास्कराचार्य, कणाद जैसे अनेक विद्वानों ने जन्म लिया तथा अपनी प्रतिभा के बल पर विश्व में भारत के सम्मान को बढ़ाने का कार्य किया।

प्राचीन समय में विज्ञान, कला, गणित, भूगोल, चिकित्सा, राजनीति, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र जैसे अनेक विषयों का उच्चस्तरीय ज्ञान भारतीय गुरुकुल में प्रदान किया जाता था। पाश्चात्य आधुनिक विज्ञान जिन प्रश्नों के उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं कर पाया उनके उत्तर भारतीय विद्वानों ने हजारों वर्ष पूर्व खोज लिए थे।

लेकिन विगत कुछ वर्षों से भारत में पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। युवाओं के पास डिग्री तो होती है, लेकिन उस डिग्री से उनको नौकरी नहीं मिलती है। कहने को तो वे डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए., एम.बी.ए. बन गए हैं, लेकिन उनको कोई नौकरी नहीं मिल रही है और अगर मिल भी जाए तो वह भी अत्यन्त कम वेतन और अस्थाई अर्थात् कभी भी नौकरी जा सकती है।

इस परिस्थिति के उत्पन्न होने के मुख्य कारण निम्न हैं- 1. पाश्चात्य शिक्षण प्रणाली

2. अभिभावकों की विचारधारा

3. नकल करने की अंधी दौड़

1. पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली :- प्राचीनकाल में भारत में गुरुकुल परम्परा थी। यहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती थी। गुरुकुल में किताबी ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने पर बल दिया जाता था। इसके साथ ही गुरुकुल में विद्यार्थी की प्रतिभा का पता लगाकर उसकी प्रतिभा को परिष्कृत करने का कार्य किया जाता था, जिसके कारण विद्यार्थी अपने कार्य में प्रवीण हो जाता था। किन्तु वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा पद्धति का स्थान पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने ग्रहण कर लिया है, जिसके फलस्वरूप पिछले कई वर्षों से शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति में बच्चों को किताबी कीड़ा बनाने पर जोर दिया जाता है, जिसके कारण बच्चों में रटने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है और वे ठीक तरीके से किसी अवधारणा को समझ नहीं पाते हैं। मूल्यांकन पद्धति में भी अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को अधिक

प्रतिभावान माना जाता है। विद्यार्थी का व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने पर बल नहीं दिया जाता है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के दुष्परिणाम स्वरूप भारत की शिक्षा का स्तर नीचे गिरता जा रहा है।

2. अभिभावकों की विचारधारा :– पिछले कुछ दशकों से अधिकांश लोगों तथा अभिभावकों की विचारधायरा अत्यन्त संकीर्ण हो गई है। अभिभावकों को लगता है कि केवल डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए., एम.बी.ए. आदि बनने पर ही उनके बच्चों का भविष्य उज्वल होगा अन्यथा उनका जीवन घोर अंधकार से भर जाएगा, वे अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर पाएँगे। इस कारण कभी कोई बच्चा उपरोक्त क्षेत्र के अलावा अपनी रुचि के किसी क्षेत्र में कार्य करना चाहता है तो अधिकांश अभिभावकों, परिवारजनों तथा अन्य जान-पहचान के लोगों द्वारा उसे हतोत्साहित किया जाता है। आजकल अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों के रिपोर्ट कार्ड को अपना स्टेटस सिंबल समझने लगे हैं। उन्हें लगता है कि उनके बच्चों के अधिक अंक उन्हें समाज में अधिक सम्मान प्रदान करने में सहायक होंगे।

3. नकल करने की अंधी दौड़ :– वर्तमान समय में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में पढ़ाना आधुनिकता का प्रतीक बना दिया गया है। अधिकांश परिवारों में बच्चों को अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में भेजा जाता है। समाज में ऐसा वातावरण बना दिया गया है कि जिसको अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है, वह मूर्ख है।

पाश्चात्य देशों की नकल करने के लिए अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में भेजते हैं। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को हिन्दी भाषा में गणित के अंकों का ज्ञान भी नहीं होता है। अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चे को गणित का अंक ''नवासी'' लिखकर बताने के लिए कहा जाए तो अधिकांश बच्चे गलत अंक ही लिखेंगे। आप स्वयं अपने बच्चों पर प्रयोग करके देख सकते हैं। इसमें बच्चों की गलती नहीं, उनके माता-पिता की गलती है कि उन्होंने अपने बच्चों को अपनी जड़ों से काटकर विदेशी भाषा को अधिक महत्त्व प्रदान किया।

पाश्चात्य शिक्षण पद्धति तथा मूल्यांकन प्रणाली में केवल अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को अधिक प्रतिभावान समझा जाता है। इस प्रणाली ने विगत वर्षों में अधिकांश अभिभावकों की विचारधारा को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया है, जिसके कारण वे अपने बच्चों को अधिक अंक प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते है। वे यह नहीं सोचते कि इसके कारण बच्चों की प्रतिभा दबी रह जाती है तथा वह जीवनभर ऐसा कार्य करने को बाध्य हो जाता है जिसमें उसकी रुचि नहीं है। फलस्वरूप कई बार मानसिक रूप से परेशान होकर बच्चा आत्महत्या जैसे घातक कदम भी उठा लेता है।

अभिभावकों की अपने बच्चों को डिग्री दिलवान की अंधी दौड़ के कारण वर्तमान में इंजीनियर, सी.ए., एम.बी.ए. डिग्री धारी एक दिहाड़ी मजदूर से भी कम वेतन पर कार्य करने को बाध्य हैं।

अत: आवश्यकता इस बात कि है कि बच्चों की प्रतिभा को पहचान कर उनकी प्रतिभा को परिष्कृत करके उसमें पारंगत बनाने का प्रयास किया जाए, क्योंकि बच्चों के रिपोर्ट कार्ड में लिखे हुए अंक उसके जीवन में ज्यादा महत्त्व नहीं रखते हैं।

वर्तमान में भारत के पाश्चात्य शिक्षण पद्धति लागू है, जिसे बदलने में काफी समय लगेगा, लेकिन अपने बच्चों के सुखद भविष्य के लिए आप सभी एक प्रयास कर सकते हैं। इस लेख को पढ़ते समय अधिकांश बच्चों की परीक्षाएँ हो चुकी होंगी तथा अधिकांश बच्चों का परीक्षा परिणाम भी घोषित हो चुका होगा। तो इस बार अगर बच्चों के रिपोर्ट कार्ड में कम अंक आएँ तो बच्चे पर गुस्सा करने की बजाय यह जानने का प्रयास कीजिएगा कि उसकी प्रतिभा क्या है? इसके बाद उसकी प्रतिभा को परिष्कृत करके उसे पारंगत बनाने पर जोर दीजिएगा।

Glimpses of 2021

1. आचार विशुद्धि महोत्सव

आचार्य प्रवर 1008 श्री हुक्मीचंदजी म.सा. की दीक्षा के 200 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आचार विशुद्धि महोत्सव घोषणा 22 फरवरी, 2021 को लोहावट में की गई। यह महोत्सव 2 वर्ष चलेगा।

परमागम रहस्यज्ञाता परमपूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा जन-जन के कल्याण हेतु वर्ष 2021 में निम्न आयाम फरमाए गए-

2. समता सर्व मंगल - 01 जनवरी, 2022 को लोकार्पित

3. समता प्रभातम् - 18 नवम्बर, 2021 को लोकार्पित

4. आध्यात्मिक आरोग्यम् - 9 नवम्बर, 2021 (ज्ञान पंचमी) को लोकार्पित

5. सामायिक संघोष

आध्यात्मिक महोत्सव ब्यावर में 2021 के ऐतिहासिक चातुर्मास की विभिन्न गतिविधियों में सामायिक संघोष के अन्तर्गत सामायिक की 25 रंगी अविस्मरणीय रही, जिसमें लगभग 10,000 सामायिक एक साथ हुई, जो कि एक कीर्तिमान है।

6. वर्ष 2021 में सम्पन्न दीक्षाएँ

क्र.	दीक्षार्थी का नाम	दीक्षा स्थल	दीक्षा दिनांक	दीक्षा पश्चात् नवीन नामकरण
1.	ऋषभजी बोथरा	लोहावट	22.02.2021	श्री ऋजुप्रज्ञमुनिजी म.सा.
2.	संपतदेवी गुलगुलिया	नोखागांव	02.04.2021	साध्वी श्री संपत्तिश्रीजी म.सा. (देवलोक)
3.	मंगलचंदजी सुराणा	गोगेलाव	21.04.2021	श्री मंगलमुनिजी म.सा.
4.	मोतीलालजी सांखला	ब्यावर	15.07.2021	श्री मुक्तेश्वरमुनिजी म.सा.
5.	जागृतिजी दक	ब्यावर	14.08.2021	साध्वी श्री जयंकराश्रीजी म.सा.
6.	श्रीमती कृष्णाबाई ठाकुरगोता	उदयपुर	04.10.2021	साध्वी श्री कीर्तनयशाजी म.सा. (देवलोक)
7.	रोशनीजी बाफना	ब्यावर	28.10.2021	साध्वी श्री रोहिताश्रीजी म.सा.
8.	पूर्वीजी छाजेड़	ब्यावर	28.10.2021	साध्वी श्री पिहिताश्रीजी म.सा.
9.	इशिकाजी बरड़िया	ब्यावर	28.10.2021	साध्वी श्री ईहिताश्रीजी म.सा.
10.	पलकजी डाँगी	ब्यावर	09.11.2021	साध्वी श्री पर्युपासनाश्रीजी म.सा.

7. A-1-11

- 10 अक्टूबर 21 – **A-1-11** एकासना तप महोत्सव : कुल 7205 एकासना तप

8. वर्ष 2021 में नवीन साहित्य लोकार्पण

1. सूरत ए मजहब	आचार्य भगवन्	4. नानेश चरित काव्यम्	श्री वीरेन्द्र मुनि जी मसा.
2. सुरीली सूरत	आचार्य भगवन्	5. पूज्य हुक्मेश	श्री धर्मेश मुनि जी मसा.
3. नूर-ए-सूरत	आचार्य भगवन्	6. ऐसी वाणी बोलिए	

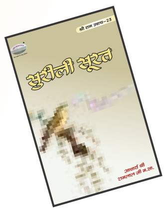

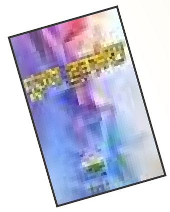
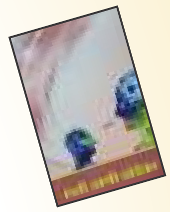

9. एस.पी.एफ. (SPF)

समस्त साधुमार्गी परिवारों में जिन्होंने भी प्रोफेशनल डिग्री हासिल की है, संघ में उनको जोड़ने व सेवाएँ लेने हेतु साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम (**SPF**) का गठन किया गया है।

10. पचक्खाण से निर्वाण

पर्युषण पर्व पर श्रावक-श्राविकाओं व बच्चों को क्रिया से बचाने हेतु 200 नियमों का निर्धारण कर पेपर बांटे गए, जिनमें पूरे राष्ट्र से 6500 से ज्यादा फॉर्म प्राप्त हुए एवं 150 से अधिक नियम ग्रहण करने वाले लगभग 2200 लोग थे, जिनके नाम उत्साहवर्द्धन हेतु श्रमणोपासक में प्रकाशित किए गए।

11. आ. श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव प्रस्ताव

आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. की दीक्षा के 50 वर्ष माघ सुदी 12 वि.स. 2081 (2025) में पूर्ण होने जा रहे हैं, अत: संघ के विशिष्ट महानुभावों द्वारा सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव का प्रस्ताव 13 फरवरी, 2022 को रखा गया।

12. श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

के अन्तर्गत किए गए सराहनीय कार्य

गत वर्ष में महिला समिति द्वारा अधिक से अधिक महिलाओं को संघ से जोड़ने का प्रयास किया गया एवं उनके आत्मोत्थान हेतु निम्न मंजोरंजनात्मक, ज्ञानवर्द्धक गतिविधियाँ कराई गई-

1. पेरेंटिंग पाठशाला
2. वीर से महावीर तक-एक यात्रा
3. अहोदानं सुपात्रदान
4. मिले सुर मेरा तुम्हारा
5. 16 सतियों की जीवन गाथा
6. नारी गुणों की खान, शीलरत्न सबसे महान

Sadhumargi Women's Motivational Forum

Activity Name	Participants		
Parenting Pathshala	156	अहोदानं सुपात्रदानं	286
वीर से महावीर तक	2064	मिले सुर मेरा तुम्हारा	61
		16 सतियों की जीवन गाथा	362

YUVATI SHAKTI

Activity Name	Participants		
ए.बी.सी.डी. (एड बनाओ क्रिएटिविटी दिखाओ)	145	Teach Each	111
3 In 1 Activity (बातचीत की कला पर आधारित)	111	संघ समर्पणा	3394
रोम रोम में राम	688	साज : सुरों का भक्तिमय आगाज	99
		A Step Towards Betterment	187

13. श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

के अन्तर्गत 2021 में किए गए सराहनीय कार्य

- 8 नई शाखाओं का गठन
- देश के 64 क्षेत्रों में प्रवास के माध्यम से संघ प्रभावना का कार्य
- अक्षय तृतीया-21 से प्रतिदिन छोटे कदम : लक्ष्य चरम के माध्यम से दैनिक प्रत्याख्यान की शृंखला
- 2021 में आचार्य भगवन् की दिव्य देशना पर आधारित **Online Quiz Contest -** खिलते ज्ञान पुष्प की शृंखला- प्रथम भाग- 7 मार्च 21, द्वितीय भाग-18 जुलाई 21, तृतीय भाग-12 दिसम्बर 21 एवं चतुर्थ भाग-20 मार्च 22.
- 16 मार्च 21- श्रुत भक्ति दिवस - सामूहिक उपवास एवं रात्रि संवर तप आराधना
- 21-22-23 जुलाई 21 - चातुर्मास स्थापना दिवस - सामूहिक तेला तप आराधना
- 01 अगस्त 21 - आगमिक सत्य-विशुद्ध परम्परा - **An Open Book Exam**
- पर्युषण-21 - पर्युषण के रंग : ज्ञान ध्यान के संग - **An Open Book Exam**
- समता शाखा-ऐतिहासिक उपस्थिति-25 अप्रैल 21 -21,761
- दिसम्बर 21 में समता कैलेंडर : 2022 का प्रकाशन एवं वितरण-कुल 850 से अधिक क्षेत्रों में 21000 से अधिक कैलेंडर वितरित
- उत्क्रांति स्थिति 01.03.22 तक कुल उत्क्रांति गाँव-787, कुल उत्क्रांति परिवार-13831
- अन्नदानम् - 13 फरवरी 22 : कुल 155 संघ, कुल लाभान्वित : 30914
- तरुण शक्ति के अंतर्गत आप तिरें : औरों को तारें के माध्यम से छोटे-छोटे सद्कार्यों की शृंखला
- जून 21 - **Kaun Banega Rising Star - An Online Quiz Contest For** तरुण
- जुलाई 21 - आत्म अवलोकन - **through Handwriting - A Workshop for Hand-Writing Skills**
- 23 अक्टूबर 21 : आचार्य श्री नानेश पुण्य स्मरण दिवस : सामूहिक अयाम्बिल तप आराधना : कुल 4248 आयम्बिल तप आराधना
- 24 अक्टूबर 21 - आचार्य श्री नानेश पुण्य स्मरण दिवस : रक्तदानम् विशाल रक्तदान शिविर : कुल 3051 यूनिट का संग्रह हुआ।
- 24 नवम्बर 21 : परीक्षा सूरज की - **An Open Book Exam**
- 19-26 दिसम्बर 21 - उत्क्रांति क्रान्ति सप्ताह
- 20 फरवरी 22 - आओ जानें हमारी दुनिया - **An Online Workshop**

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश के पावन प्रवास से मदनगंज-किशनगढ़ बना धर्म का गढ़

महानता भोग से नहीं त्याग से आती है -आचार्य श्री रामेश

सद्गुरु का मिलना बहुत दुर्लभ है -उपाध्याय प्रवर

हुक्मसंघ की शान हो आप, शासन में चमकती मिसाल हो आप
सद्गुणों से सजा पावनतम थाल हो आप। आपकी गौरव गरिमा शब्दों से अतीत है
गुरुवर अनासक्त निर्मोही सुविशाल हो आप।।

मदनगंज-किशनगढ़।

जब भाग्य खिलता है, तब सम्पत्ति प्राप्त होती है, लेकिन जब सौभाग्य खिलता है तब महान सद्गुरु की प्राप्ति होती है। ऐसे ही अलौकिक महापुरुष, युगनिर्माता, निर्लिप्त अध्यात्म योगी, आगम ज्ञाता, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, नानेश पट्टधर, जग-आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बेले-बेले के तपस्वी, बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का धर्मनगरी मदनगंज-किशनगढ़ की पुण्यधरा पर मंगल आगमन के साथ अपूर्व धर्माराधना का ठाठ लगा हुआ है। जैन-जैनेत्तर सभी वर्ग, जाति, सम्प्रदाय के धर्मानुयायी दर्शन-प्रवचन का लाभ ले रहे हैं। उभय गुरु-भगवन्तों की निर्मल संयम साधना का गजब प्रभाव देखने को मिल रहा है। धर्मप्रेमी श्रावक-श्राविकाएँ व नगरवासी त्याग-प्रत्याख्यान से अपने जीवन को संयमित व सुरभित करने का प्रयास कर रहे हैं। देश-विदेश के श्रद्धालु निरन्तर गुरुचरणों में उपस्थित हो दर्शन लाभ ले रहे हैं। सम्पूर्ण नगर पावन-पवित्र तपस्वी चारित्रात्माओं के आगमन से धर्म एवं भक्तिमय बन गया है।

वर्ष 2022 के आगामी चातुर्मास हेतु निरन्तर मेवाड़, मालवा, गुजरात, दिल्ली आदि क्षेत्रों से विनतियाँ श्रीचरणों में लगातार प्रस्तुत हो रही हैं। होली चातुर्मासिक पर्व के पश्चात् किसकी झोली में गुरुदेव का सान्निध्य लिखा है इसके लिए सभी को बेसब्री से इन्तजार व उत्सुकता है।

16 फरवरी 2022। परम प्रतापी आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर का संत मण्डली के साथ जैन स्थानक मदनगंज से शिवाजी नगर श्री ब्रज मधुकर स्मृति भवन में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। बीच रास्ते में महावीर सेवा केन्द्र में श्रमण संघ के उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म.सा. ''वागीश'', उपप्रवर्तक श्री गौतममुनिजी म.सा. ''गुणाकर'' आदि संतों से मधुर मिलन हुआ।

जैन स्थानक शिवाजी नगर ब्रज मधुकर स्मृति भवन में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि- **गुरु पद का जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व है। गुरु को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि जो वस्तु जैसी है उसे जो उसी प्रकार बतला दे वह होता है गुरु। उन्होंने जो देशना दी उस देशना का निर्णय भावों से पालन करने वाला और भगवन् की वाणी के अनुसार उपदेश देने वाला, जो लोभ-लालच से मुक्त है, वह होता है गुरु, सत्गुरु। गुरु का बहुत महत्त्व बतलाया गया है। सत्गुरु का मिलना बहुत दुर्लभ है। ''शीश दिया गर गुरु मिले तो भी सस्तो जाण''।**

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि शुभ भावों के साथ धर्म से जुड़े पुरुषार्थ करने से ही सच्चा सुख मिलेगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वीश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने ''राम आ गए हैं, गुरु राम आ गए हैं'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शिवाजीनगर के पदाधिकारियों ने आचार्य भगवन् के आगमन को महान पुण्य का उदय बताया। कई भाई-बहिनों ने स्थानक में आधा घण्टा स्वाध्याय करने का संकल्प लिया। अनेक भाई-बहिनों ने वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास आदि करने का प्रत्याख्यान लिया।

रात्रिभोजन त्याग	सुनीताजी झामड़
वर्ष में 300 दिन बड़े स्नान का त्याग	कमलाबाई बाघमार-कपासन
वर्ष में 150 दिन बड़े स्नान का त्याग	अशोकजी बाघमार-कपासन
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	प्रकाशजी बंबोरिया-जावद, कान्तिलालजी कोचेटा-किशनगढ़
50 पक्की नवकारसी	शिल्पाजी कोठारी-इन्दौर
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	अनिलजी झामड़
प्रतिदिन 21 लोगस्स	चन्द्रकलाजी कुमठ
द्रव्य मर्यादा	नितिनजी गांग

दोपहर में श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने निर्दोष भिक्षा विधि की जानकारी दी। साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं का गुरुचरणों में पधारना हुआ। प्रत्येक पूर्णिमा को गुरुदर्शन करने वाले परम गुरुभक्त रतलाम, जावद, इन्दौर, निम्बाहेड़ा, बीकानेर, दिल्ली, रायपुर, कोलकाता, अजमेर, ब्यावर के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन का लाभ लिया।

17 फरवरी। ब्रज मधुकर स्मृति भवन जैन स्थानक शिवाजी नगर में प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ फरमाया।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''धर्म का स्वाद जो ऋषभदेव भगवान के समय में था वही रूप भगवान महावीर के समय में था और आज भी उसी रूप में है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं है, न कभी होने वाला है। ऐसा नहीं है कि सत्य बदल गया। अहिंसा भूतकाल में भी वही थी, वर्तमान में भी वही है और भविष्यकाल में भी वही रहेगी। सत्य का स्वरूप भी वही रहेगा। अहिंसा, सत्य की आराधना करने वालों की क्षमता कम-ज्यादा हो सकती है। अहिंसा के रूप में न जीने की अभिलाषा, न मरने का भय हो, एक समान स्थिति बनी रहनी चाहिए। वह नहीं रह पाती है तो यह हमारी कमजोरी है। वीरता के बिना धर्म की आराधना नहीं हो सकती। क्षमा वीरों का भूषण है। क्षमा होगी तब हमारे भीतर वीरता होगी। जो वीर है, वही क्षमा कर पाएगा। सामायिक में स्थिरता के लिए पहले शरीर को स्थिर करना होगा, फिर भाषा को और फिर मन को स्थिर करना होगा। मन को साधने का प्रयास करना चाहिए।''**

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि साधुओं को आहार देने में दोष नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि जैसा आहार करते हैं, वैसी मानसिकता बनती है। महासती श्री वंदनाश्रीजी म.सा., महासती श्री दर्शनाश्रीजी म.सा., महासती श्री पूर्वीश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने ''आगम ने जब आकार लिया, गुरु राम उसे तब नाम दिया'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तत किया।

50 संवर, वर्ष में 50 दिन बड़े स्नान का त्याग	प्रदीपकुमारजी धनपतजी जैन

वर्ष में 200 दिन बड़े स्नान का त्याग	चन्द्रकलाजी कुमठ
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	सुशीलाजी सुराणा
21 आयंबिल	प्रेमचन्दजी मेहता
40 एकासना	टीनाजी कवाड़
जमीकन्द त्याग	शान्तिबाई कवाड़
होटल त्याग	प्रेमलताजी मेहता
प्रतिदिन एक लोगस्स की माला	स्नेहलताजी मेहता
21 द्रव्य	किरणजी सोनी
माह में 900 लोगस्स	शान्तिबाई ओस्तवाल
मर्यादापूर्वक रात्रिभोजन त्याग, जमीकन्द त्याग	अनिताजी कोठारी
12 एकासना	पूनमजी मेहता
वर्ष में 50 दिन बड़े स्नान का त्याग	सुशीलाजी हिंगड़, रितेषजी चौरड़िया
27 लोगस्स	गरीमाजी मारू, ताराजी पोखरना

अनेक भाई-बहिनों ने घर में धोवन पानी रखने एवं पीने का संकल्प लिया। स्थानीय व बाहर के दर्शनार्थियों का आवागमन जारी रहा। दोपहर में श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने शुद्ध भिक्षा विधि एवं अन्य विभिन्न विषयों पर महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

18 फरवरी श्री ब्रज मधुकर स्मृति भवन जैन स्थानक शिवाजी नगर में आयोजित धर्मसभा में आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य वाणी में फरमाया कि ''अहिंसा, संयम, तप रूपी धर्म में आनन्द, सुख, शान्ति, समाधि है, पर हमने उनकी अनुभूति नहीं की है तो आनन्द, सुख कैसे प्राप्त होगा। धर्म के स्वरूप को समझना होगा। पंच परमेष्ठी को किया हुआ नमस्कार सभी पापों का नाश करता है। नमस्कार करने की प्रक्रिया हर धर्म और मजहब में है। हाथ जोड़ने से हमारे भीतर एक वाईब्रेशन चालू हो जाता है। हाथ जोड़ेंगे तो मान गलेगा। गर्दन झुकेगी नहीं तो आदमी अकड़ में रहता है। मान को उल्टा करेंगे तो नमा हो जाएगा और कल्याण हो जाएगा। आजकल जितनी भी लड़ाइयाँ होती हैं वे सब मान के कारण होती हैं। टकराहट हमें संसार में ले जाती है। नमन से योग्यता प्रकट होती है और धर्म का आनन्द मिलता है।''

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि इस संसार में कोई भी चीज मेरी नहीं है और मैं किसी का नहीं हूँ। यह शरीर भी मेरा नहीं है और उससे जुड़ा हुआ कोई भी पदार्थ मेरा नहीं है। ''इदं न मम्''। भावना को आगे बढ़ाएँ।

शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वीश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि अनन्त पुण्यवानी का उदय होता है तब हमें राम गुरु जैसे महापुरुष की अमृतवाणी सुनने का अवसर मिल रहा है। इनके हाथ में डोर थामने से हमारी जिन्दगी पार हो जाएगी।

11 वर्षीय बालक प्रिंस संचेती ने अपने भाव यूं रखे-

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, गूंज रहा बस एक ही नाम,
बच्चा-बच्चा बोल रहा है, राम गुरु की जय-जयकार।
स्वर्ग है उतरा आज जमीं पर, कैसे स्वर्णिम नजारे हैं,
राम गुरु सा नगरी पधारे, अभिनन्दन करते सारे हैं।।

आजीवन शीलव्रत	बेबीबाई कटारिया-हुबली
वर्ष में 300 दिन बड़े स्नान का त्याग	मंजूजी चौरड़िया
200 पक्की नवकारसी	विमलाजी रांका-जयपुर
जमीकन्द त्याग	सूरजजी बाफना
21 एकासना	प्रदीपजी धनपतजी जैन
वर्ष में 50 दिन बड़े स्नान का त्याग	चंचलजी कोठारी, प्रियंकाजी मेहता
500 सामायिक	सूरजजी बाफना, आशाजी कोठारी
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	प्रेमचन्दजी मेहता-किशनगढ़, नथमलजी संकलेचा-नोखा
27 लोगस्स	मंजूजी महनोत
कोल्डड्रिंक्स का त्याग	बालक प्रिंस संचेती, बालिका आयुषी संचेती, ध्रुविका संचेती, प्रेमलताजी मेहता

बाहर के दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। प्रवचन के तुरन्त पश्चात् आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर का शिवाजीनगर से किशनगढ़ पुराना शहर महावीर भवन में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। दोपहर में ज्ञानचर्चा व मांगलिक हुई। रात्रि में नवयुवकों ने ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी में उत्साह का परिचय दिया।

संत श्री लाघवमुनिजी म.सा. एवं श्री नवोन्मेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 का सरवाड़ की ओर विहार हुआ।

19 फरवरी। महावीर भवन-किशनगढ़ पुराना शहर महावीर भवन में प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। निर्लिप्त आध्यात्म योगी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''धर्म इंसान से भगवान बनाता है, अधर्म हमें इंसान से राक्षस बनाता है। मनुष्य का जो धर्म है, जो कर्तव्य है उसका पालन कर रहा है या नहीं? हम श्रावक हैं, श्रावकत्व का पालन कर रहे हैं या नहीं? हम साधु हैं, साधुत्व की पालन कर रहे हैं या नहीं? भगवान महावीर ने कहा है कि जाति से या जन्म से कोई महान नहीं होता, सत्कर्म से महान बनता है। जो व्यक्ति निम्न कर्म करता है वह अवनत हो जाता है। श्रावक हो या साधु, मर्यादा ही रक्षा करने वाली है।''**

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि इस भौतिकता में सच्चा सुख नहीं है। आत्मा की खोज की दिशा में आगे बढ़ें तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र में पुरुषार्थ करें। महासती श्री वंदनाश्रीजी म.सा., महासती श्री दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ने ''जग का तिमिर हटाने गुरु राम आ गए हैं'' गीतिका प्रस्तुत की।

संघ अध्यक्षजी एवं मंत्रीजी ने आजीवन मौनपूर्वक भोजन करने का संकल्प लिया। कई भाई-बहिनों ने 12 उपवास, 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 संवर करने का संकल्प लिया।

आजीवन शीलव्रत	प्रेमचन्दजी सुशीलादेवी डेढ़िया-पाली
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	ललितजी कांकरिया-गोगेलाव, सुगनचन्दजी धोका-चैन्नई
24 उपवास	ललिताजी लोढ़ा
50 पक्की नवकारसी, 300 सामायिक	चन्द्रकलाजी नाहर-चैन्नई
माह में दो दिन मोबाइल, टी.वी. का त्याग	अनिताजी जैन
30 एकासना, 30 पौरसी, 60 दिन बड़े स्नान का त्याग	डिम्पलजी कवाड़
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	राकेशजी महनोत, विनोदजी पोखरना, प्रकाशजी पिछोलिया-

	जयपुर, अरुणाजी सामसुखा, रेखाजी कवाड़
51 एकासना	शकुंतलाजी कोठारी

दोपहर में उपाध्याय भगवन् के पावन सान्निध्य में हुई ज्ञानचर्चा में भाई-बहिनों की जिज्ञासाओं का सुन्दर समाधान उपाध्याय भगवन् ने दिया। चैन्नई, बंगईगाँव, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली, गोगेलाव आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालु उपस्थित हुए। सभी सम्प्रदायों के भाई-बहिनों ने गुरुदर्शन का लाभ लिया।

20 फरवरी। महावीर भवन किशनगढ़, पुराना शहर में प्रात:कालीन बेला में समता रविवारीय शाखा का आयोजन हुआ, जिसमें स्थानीय व बाहर से आगत धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष, विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि ''मार्ग शांति और अशांति दोनों का है। अशांति के मार्ग को बताने की आवश्यकता नहीं होती है। बहुत सारे कारणों से अशांति होती है। यदि हम उन कारणों को हटा दें तो शांति हो जाती है। शांति चाहते हैं तो पहले स्वयं में धैर्य को लाओ, अधीर मत बनो। कोई भी कार्य हमारे मन के अनुकूल नहीं होता तो हड़बड़ी होती है। धैर्य की प्राप्ति धर्म से होती है। धर्म हड़बड़ी से हटाता है, स्थिरता देता है। धैर्य बढ़ेगा तो हमारे भीतर शांति पैदा होगी। हमें कभी भी समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। जो समय हमने धर्म से जोड़ लिया वह सार्थक हो जाता है। आचार्य भगवन् ने अपनी आवश्यकताओं को सीमित करने की प्रेरणा दी।''

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि- श्रावक को नौ तत्त्व और पच्चीस क्रिया की जानकारी होनी चाहिए। सभी जीवों के प्रति हमारी गहरी संवेदना होनी चाहिए। हमारे कारण से किसी भी जीव, प्राणी, पशु आदि की काया को कष्ट न पहुँचे।

महासती श्री वंदना श्रीजी म.सा., दर्शना श्रीजी म.सा. ने गुरु भक्ति गीत प्रस्तुत किया। श्रीसंघ व महिला मंडल ने सामूहिक गीतिका में निम्न भाव प्रस्तुत किए-

धन्य है आज की वो घड़ी
आगम आवाज कानों पड़ी
कर्म कैसे हटें, बंध कैसे टलें
इच्छा सुनने की आगे बढ़ी।

आजीवन शीलव्रत	श्री सुगनचंदजी धोखा-चैन्नई
वर्ष में 6 आगम पढ़ने का नियम	विमलजी भंडारी व सुनिताजी लोढ़ा
121 उपवास, 300 पोरसी	चांदबाई महनोत
151 एकासना	पुष्पाजी बोथरा
प्रतिदिन 11 घंटे मौन एवं 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	स्नेहलताजी मेहता-उदयपुर, निशिजी कोठारी, सुहानीजी कोठारी-रतलाम, राखीजी गाँधी-जावरा, रानूजी पितलिया-नीमच, बरखाजी कवाड़, मंजूजी कोठारी
50 पक्की नवकारसी	बालक यश मेहता-उदयपुर व बालिका कीर्ति लोढ़ा, रेखा गाँधी-जावद, डिम्पलजी कवाड़

आचार्य भगवन् ने सामूहिक रूप से आज के दिन 20 मिनट के अंदर भोजन करने का नियम दिलाया।

आचार्य भगवन् के वर्ष 2022 के चातुर्मास के लिए नीमच संघ ने भावभरी विनती प्रस्तुत की। जावद, चैन्नई, अजमेर, ब्यावर, नारायणपुर, उदयपुर, आऊ, देशनोक, जोधपुर, रतलाम, जयपुर, सूरत, जगदलपुर आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन का लाभ लिया। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में प्रश्नोत्तरी हुई। किशनगढ़ शहर संघ ने चातुर्मास की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

21 फरवरी। महावीर भवन किशनगढ़ शहर में प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। तत्पश्चात् आचार्य भगवान से मंगलपाठ आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुआ।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए संयम साधना के सजग प्रहरी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''महानता भोग से नहीं त्याग से आती है और यदि भोगों का त्याग नहीं किया तो आदमी ऊँचा नहीं बनेगा। भोगवादी आदमी दौड़ता है। इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। ज्ञानी की पहचान क्या है? जिसके भीतर आकांक्षाएँ नहीं उठती हैं, आशाएँ, अभिलाषाएँ, आशक्ति जिसके भीतर उफन नहीं रही हो वह ज्ञानी है। जो शांत है वह ज्ञानी है। धर्म हमें कहता है कि तुम अपनी इच्छाओं का त्याग करो, अभिलाषा का त्याग करो और जो प्राप्त है उसको भी सीमित करो। श्रावक को प्रतिदिन 14 नियम चितारने चाहिए।''**

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नवीन ज्ञान सीखने की ललक हमारे भीतर होनी चाहिए। ज्ञानार्जन में रुचि को निरन्तर आगे बढ़ाएँ। महासती श्री वंदना श्रीजी म.सा., दर्शनाश्रीजी म.सा., शर्मिला श्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने भाव गीतिका- ''गुरु सागरवर गंभीर और सौम्य तेरा व्यवहार, अरिहंत जैसे गुरु को पाकर खुल गए मेरे भाग'' प्रस्तुत की।

निकुम्भ, चिकारड़ा संघ ने विनती प्रस्तुत की। केकड़ी संघ ने होली चातुर्मास की भावभरी विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

टी.वी. का त्याग	लक्ष्मीलालजी छाजेड़, कमलेशजी खटोड़-चिकारड़ा
बाजार मिठाई का त्याग	प्रहलादजी लोढ़ा-चिकारड़ा
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	नक्षत्रमलजी सहलोत, हरिसिंहजी मेहता, मानमलजी सोनी-निकुम्भ
50 पक्की नवकारसी	खेतमलजी बुरड़-जगलदलपुर, नीताजी पोखरना-सूरत, लक्ष्मीलालजी छजेड़
1500 सामायिक	पुष्पाजी बोथरा
500 सामायिक	मंजूजी लोढ़ा
700 सामायिक	बरखाजी कवाड़, मंजूजी कोठारी
माह में 2 दिन मोबाइल का त्याग	विमलाजी रांका
21 एकासना	मंजूजी बाफना
600 सामायिक	पुष्पाजी कोठारी

ब्यावर, अजमेर, सूरत, जयपुर, निकुम्भ, चिकारड़ा, जगदलपुर, जोधपुर, नोखा आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया। दोपहर में श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान बोध करवाया।

22 फरवरी। महावीर भवन किशनगढ़ शहर स्थानक में प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई एवं साधु भिक्षाचर्या के बारे में श्री गौरव मुनिजी म.सा. ने जानकारी दी।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववन्दनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''शास्त्रों**

में आगार और अणगार दो धर्म की व्याख्या है। मंजिल एक है, साधना विभिन्न है। साधु जीवन सबसे श्रेष्ठ है। श्रावक जीवन की आराधना से नरक निगोद से बचा जा सकता है। अशुभ योग की प्रवृत्ति को छोड़ना, आरम्भ और परिग्रह के कारण कर्मबंध होता है जितना ज्यादा ममत्व, लगाव, आसक्ति होगी। वहाँ पीड़ा अधिक होगी। अपने मन को पीड़ित नहीं होने देना धर्म सीखाता है। हमारी कोई चीज चली जाए तो मन में पीड़ा नहीं होनी चाहिए। शान्त-प्रशान्त होने से जीवन में आनन्द की प्राप्ति होगी। संतोष सबसे बड़ा धन है।''

श्री गौरव मुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जो चीज जैसी है उसे वैसा नहीं मानना मिथ्यात्व है। अधर्म की प्रवृत्तियों में धर्म नहीं मानना चाहिए। साध्वीमण्डल ने- ''तेरे अहसानों का बदला चुकाया नहीं जाता'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

टी.वी. का त्याग	आजादकुमारजी सहलोत, कमलेशजी धींग-निकुम्भ
51 एकासना	मिनाक्षीजी मेहता
51 एकासना, 60 पोरसी	शांताजी महनोत
31 एकासना	विजयाजी लोढ़ा
60 आयंबिल	सुशीलाजी नाहर
माह में 2 दिन मोबाइल का त्याग	चंचलजी बाफना
120 पोरसी	जयसिंहजी नाहर-भीलवाड़ा
50 पक्की नवकारसी	रमेशजी पोरवाल
40 एकासना	मीनाजी झामड़
50 सामायिक	मीनाजी मेहता
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	सुरेशजी सहलोत-निम्बाहेड़ा, कांताजी पीपाड़ा

आचार्य भगवन् के वर्ष 2022 के चातुर्मास के लिए निम्बाहेड़ा संघ ने श्रीचरणों में पुरजोर विनती प्रस्तुत की। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

23 फरवरी। महावीर भवन किशनगढ़ शहर में प्रात:कालीन शुभबेला में मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। तत्पश्चात् श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने साधु भिक्षाचर्या पर महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''धर्म के दो कार्य हैं- एक तो आने वाले कर्म को रोकता है, दूसरा जो कर्म बंधे हुए उसकी निर्जरा करने का कार्य करता है। इसके लिए प्रबल पुरुषार्थ की आवश्यकता है। किए हुए कर्म बिना भोगे हुए नहीं छूटते हैं। हमें कोई भी बचाने वाला नहीं है। मैं किसी का नहीं हूँ और कोई मेरा नहीं है। शरीर भी मेरा नहीं है जब तक हम अपना मानते हैं तब तक शरीर को पीड़ा होती है। मोह पर विजय धर्म से ही प्राप्त की जा सकती है।''

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने मिथ्यात्व प्रवृत्ति से दूर रहने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री वन्दना श्रीजी म.सा., श्री दर्शनाश्रीजी म.सा., श्री शर्मिला श्रीजी म.सा. आदि ने- 'तू सांचो रे, थारो सांचो रे दरबार' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

24 फरवरी। महावीर भवन, किशनगढ़ शहर में प्रात:कालीन मंगल बेला में मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। तत्पश्चात् साधु भिक्षाचर्या की जानकारी श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने प्रदान की।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए रत्नत्रय के महान आराधक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि ''शैतान, इन्सान और भगवान तीन प्रकार के जीव होते हैं। शैतान जो गलती करता है उस गलती को, भूल को स्वीकार नहीं करता तथा गलती का पोषण करता है। इंसान जो गलती करता है, उसे स्वीकार भी करता है और भगवान गलती करता है और उसे सुधार कर अपने जीवन को सर्वोच्च शिखर पर ले जाता है। धर्म शैतान को इन्सान और इन्सान को भगवान बनाता है। दर्पण जैसे किसी के साथ भेदभाव नहीं करता है, जैसा है वैसा दिखा देता है, उसी तरह धर्म कहता है कि दर्पण की तरह विकार रहित बन जाओ अर्थात् ना किसी के प्रति शत्रुता भाव और ना किसी के प्रति अनुराग। तटस्थ भाव में जीना धर्म सिखाता है। ऐसे धर्म की हम निरन्तर साधना, आराधना करें।''

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि श्रावक को जीव-अजीव का ज्ञाता होना चाहिए। जो जीव-अजीव को जान लेता है वो संयम को जान लेता है। साध्वी श्री वन्दनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा. आदि ने ''राम गुरु के चरणों में वन्दन है'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

31 तेला व रात्रिभोजन त्याग	सरलादेवी नौलखा-राउरकेला
माह में 15000 गाथा का स्वाध्याय	विमलाजी भण्डारी
50 पोरसी	निर्मलाजी भण्डारी
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	लीलादेवी मुकीम-बीकानेर, मदनजी पिछोलिया-आमेठ, अभिषेकजी सुराणा-रायपुर, सरलाजी जैन-रायपुर
12 आयम्बिल	हर्षिताजी मुणोत-बैंगलोर
12 एकासन	समताजी सुराणा-रायपुर, निखिलजी महनोत-बैंगलोर
माह में एक दिन मोबाइल त्याग	शानूजी कोठारी
प्रतिदिन 27 लोगस्स	मक्खनजी कांकरिया

राजस्थान सरकार के पूर्व शिक्षा आयुक्त प्रदीपजी बोरड़-जयपुर, एस.डी.एम. श्रेयांशजी कुमठ (IAS), कौशलजी दुगड़ सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया। दोपहर में ''कर्मबन्ध एवं हमारा जीवन'' विषयक शिविर का क्रम जारी रहा। महापुरुषों के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा आदि भी हुई। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक समिति-किशनगढ़ की सेवाएँ अत्यन्त सराहनीय रही।

25 फरवरी। प्रात: मंगलमय प्रार्थना एवं तत्त्वज्ञान कक्षा अनवरत जारी रही।

महावीर भवन किशनगढ़ शहर में आयोजित धर्मसभा में परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि ''किसी भी जीव की हिंसा करना धर्म नहीं हो सकता। साधु हिंसा की प्रेरणा दे नहीं सकता। धर्म के नाम पर हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकता। छ: काय जीवों की विराधना करने वाला बन जाता है। साधु जीवन सजग व सावधान जीवन है। जीवों की हिंसा मन, वचन और काया से ना हो। हर कार्य में यतना, विवेक रखना होगा। भगवान महावीर का शासन 21,000 वर्ष तक चलेगा। लोभ-लालच से धर्म चलने वाला नहीं है। धर्म तो भावों से चलेगा। हमारा क्रोध, अहंकार कितना कम हुआ? परिवार, समाज में विवाद, झगड़ा व क्लेश करने वाला तो मैं नहीं बना? ये आत्मचिन्तन करें। जैन धर्म को आगे बढ़ाने में हमने कितना योगदान दिया? कहीं बदनाम करने की लिस्ट में तो हमारा नाम नहीं है? साधु या साध्वी, श्रावक हो या श्राविका सभी अपने कर्तव्य का ईमानदारी पूर्वक पालन करें।''

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने साधु की पहचान बताते हुए निम्न गीतिका फरमाई-

ईर्या, भाषा, एषणा, ओळख जो आचार।

गुणवन्त साधु देखने, वन्दू बारम्बार।।

शासन दीपिका साध्वी श्री वन्दनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री शमिलाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. आदि ने ''अहो पधारे मेरे भगवन्, झुक-झुककर हम करते वन्दन'' भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

वर्ष में 300 दिन शीलव्रत	गौतमजी शीलादेवी कोठारी-देवरिया/भीलवाड़ा
दो लाख गाथा का स्वाध्याय	ममोलदेवी पारख-बीकानेर
होटल का त्याग	निर्मलाजी महनोत-रतलाम
101 एकासन व 51 पोरसी	शकुन्तलाजी कोठारी
300 पक्की नवकारसी	प्रेमलताजी झामड़
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	मीनाजी महनोत-रतलाम, ममोलदेवी पारख
वर्ष 50 दिन बड़े स्नान का त्याग	सुरेशजी कांकरिया, कुणालजी सेठिया-बीकानेर
माह में 1 दिन मोबाइल का त्याग	शैतानमलजी महनोत-रतलाम, दीवीबाई साँखला-बालेसर, अशोकजी महनोत
प्रत्येक पक्खी को प्रतिक्रमण	कमलजी चपलोत, सुमितजी कटारिया, सिद्धार्थजी पिरोदिया, अभिषेकजी बाफना, प्रदीपजी कोचर

अनेक भाई-बहिनों ने भ्रूणहत्या जैसे घृणित कार्यों में सहयोग नहीं करने का संकल्प लिया। रतलाम, बीकानेर, बालेसर, बैंगलोर, चैन्नई, पाली आदि कई स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन व सेवा का लाभ लिया। दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के सान्निध्य में आगम वाचनी एवं कर्मबंध एवं हमारा जीवन शिविर में श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने मार्गदर्शन दिया।

26 फरवरी। महावीर भवन में प्रात:कालीन बेला में मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। तत्पश्चात् साधु भिक्षाचर्या की जानकारी श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने प्रदान की।

धर्मसभा में ज्ञानपिपासुओं की पिपासा को शान्त करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य वाणी में फरमाया कि **''आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बना जा सकता है। आत्मा बीज रूप है, महात्मा पौधा है और परमात्मा उस पौधे का फल है। अपने स्वार्थ का त्याग करने वाला महान आत्मा बन जाता है। बुद्धि को नियंत्रित और अनुशासित करने के लिए समुदाय होता है। परिवार, समाज, राष्ट्र, प्रान्त समुदाय है। समुदाय के लिए संविधान होता है। जहाँ हठाग्रह होता है वहाँ सत्य गायब हो जाता है। हमारा लक्ष्य सत्य की खोज करना है। धर्म के प्रति हमारी दृढ़ता मजबूत होनी चाहिए। दूसरों में दोष निकालना आसान है किन्तु अपना दोष देखना बहुत कठिन है।''**

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिनेश्वर भगवान का धर्म सत्य व कल्याणकारी है। हमें इसे स्वीकार कर धर्म का पालन करना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री वन्दनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. ने ''मेरा जो रक्षक है तू कुछ तो है'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

1800 सामायिक	सन्तोषबाई डांगी (90 वर्षीय)
वर्ष में 150 दिन बड़े स्नान का त्याग	प्रकाशजी बोथरा-उज्जैन

वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	दिलीपजी बोहरा-नागदा, शानूजी कोठारी
चौविहार	पुखराजजी मुणोत-रतलाम
200 पक्की नवकारसी	लीलाजी भटेवरा-रतलाम, सज्जनजी मुणोत-राजगढ़
माह में एक दिन चौबीस घण्टे मौन	ललिताजी लोढ़ा
50 पोरसी	कंचनबाई झामड़
365 दिन प्रतिक्रमण	प्रेमबाई चौरड़िया
माह में एक दिन मोबाइल त्याग	महावीरजी मुणोत-रतलाम
12 एकासना	निर्मलजी चपलोत-नागदा

बीकानेर, उज्जैन, चैन्नई, बालेसर, रतलाम, नागदा, जावद, भीलवाड़ा, छोटीसादड़ी, सूरत आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन का लाभ लिया।

श्री गौरवमुनिजी म.सा. के मार्गदर्शन में चार दिवसीय कर्मबन्ध और हमारा जीवन शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

27 फरवरी। महावीर भवन किशनगढ़ शहर में प्रात: रविवारीय समता शाखा का आयोजन हुआ।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विरल विभूति आचार्यदेव ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''जो भीतर में उतर जाता है उसके जीवन में बदलाव आ जाता है। अभी हमारे भीतर मोह का, स्वार्थ का, अहंकार का उफान है। जब मोह का उफान शान्त हो जाता है तब वह घर-संसार में रुकने वाला नहीं होता है। ऐसे ही एक बहिन श्रुति गांधी के जीवन में मोड़ आया और दीक्षा की भावना प्रबल हुई। जो दीक्षा लेकर अपने आपको साधता है, उसके न खाने में, न पहनने में आसक्ति और न किसी प्रकार की शिकायत के भाव रहते हैं। एक मात्र लक्ष्य वीतरागता का है। इसके लिए प्रबल पुरुषार्थ की जरूरत है। जहाँ शिकायत के भाव न हो वहाँ साधना की शुरूआत होती है। चाहे घर, परिवार, समाज की शिकायत हो। आज मुझे किसी के प्रति शिकायत न रहे। मन से भी किसी के प्रति शिकायत न रहे।''** उपस्थित लोगों ने आज के दिन का यह संकल्प आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से ग्रहण किया।

बहुश्रत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **गुरु हमें लघु यानी हल्का बनाते हैं। 18 प्रकार के पापों की प्रवृत्ति करने से जीव भारी और 18 पापों के पापों का त्याग करने से जीव हल्का होता है। हल्केपन में शान्ति होती है तथा भारीपन अशान्ति का कारण है। विपरीत परिस्थिति में भी हम प्रसन्न रहें। कई प्रवचन सुने हैं, सुन रहे हैं और सुनेंगे। अनेक उपाय-जानकारी हमें प्राप्त हुई हैं। अब उसे अमल में लाने की जरूरत है। गुरु भगवन् कहते हैं- हल्के हो जाओ। जो अपने मन की चलाना चाहते हैं वो भारी हैं। हम अपने मन की चलाना चाहते हैं या दूसरों की बात सुनना चाहते हैं? मेरा अभिमान ही मुझे भारीपन की ओर ले जा रहा है। अगर हल्का बनना चाहते हो तो अपने मन की नहीं चलाना। संयमी जीवन हल्केपन का जीवन है। गुरु के अनुसार अपने आपको मोड़ना बहुत कठिन काम है।**

श्री गौरवमुनिजी म.सा. ने विपरीत परिस्थिति में भी समभाव की साधना करने की प्रेरणा दी। साध्वीवृन्द ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। जैसे ही आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से मुमक्षु बहिन श्रुतिजी गांधी सुपुत्री श्री नरेन्द्रजी-रेखाजी गांधी की दीक्षा की उद्घोषणा हुई पूरा संघ खुशी से सराबोर हो गया।

वर्ष में 300 दिन शीलव्रत प्रत्याख्यान	शान्तिलालजी निर्मलादेवी सेठिया-लुधियाना

वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	नीलमजी डूंगरवाल-छोटीसादड़ी, सविताजी बोथरा-अक्कलकुआ, नरेन्द्रजी जैन-मन्दसौर
300 संवर, 100 पोरसी	चन्दनमलजी सिंघवी-नागदा
50 चरम पच्चक्खाण	मंजूजी चौरड़िया
1100 सामायिक	प्रेमबाई चौरड़िया
कोल्डड्रिंक्स, चाय का त्याग	सलोनीजी मेहता
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	चंचलजी, सीमाजी राखेचा-सूरत, विमलाजी डूंगरवाल-छोटीसादड़ी, सुशीलाजी जारोली-निम्बाहेड़ा, आनन्दीलालजी जैन-भीलवाड़ा

बिजयनगर संघ की क्षेत्र स्पर्शने की विनती श्रीचरणों में हुई। दोपहर में आगम वाचनी व ज्ञानचर्चा हुई। दीक्षार्थी बहिन के ओगा बाँधने का कार्यक्रम शान्ति भवन में एवं वीर परिवार श्री विजयकुमारजी, पिस्तादेवी गांधी, नरेन्द्रजी, रेखाजी गांधी, संजयजी राखीजी गांधी एवं परिजनों का तिलक लगाकर स्वागत, बहुमान किशनगढ़ वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ द्वारा किया गया।

दीक्षार्थी बहिन श्रुतिजी गांधी ने अपने भावोद्गार में कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में धर्म की रुचि बढ़ी और अपनी जिज्ञासाओं का सुन्दर समाधान समय-समय पर प्राप्त करती रही। फिर संयम की भावना प्रबल होती गई और आज उभय गुरु-भगवन्तों तथा परिजनों के आशीर्वाद से मैं वीतराग पथ की ओर अपना कदम बढ़ाने जा रही हूँ। केसरिया महिला मण्डल एवं कुछ अन्य बहिनों दीक्षार्थी बहिन के सम्मान में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

एक वीर बाला चली संयम पथ की ओर : युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश के मुखारविन्द से 355वीं दीक्षा के रूप में 26 वर्षीय मुमुक्षु बहिन श्रुतिजी गांधी की जैन भागवती सौल्लास सम्पन्न : नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. घोषित

अपनी पकड़ को छोड़ना सबसे बड़ा त्याग है -आचार्य श्री रामेश

शान्ति आत्मतत्त्व के भीतर है -उपाध्याय प्रवर

अहो, अहो मेरे भगवन्, सुहाने दर्शन हो।
ऐसा लगता है, कि रूह रूह में भर रहे संयम।।
सोना आग से ही कुन्दन हुआ करता है,
साधु चरणरज ही चन्दन हुआ करता है।
छोड़कर मोह-माया को मोक्षगामी जो होते हैं।
उन्हीं का जमाने में बस वन्दन हुआ करता है।

28 फरवरी। किशनगढ़ शहर। टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप, पंखा, कूलर, ए.सी., हीटर आदि आधुनिक सभी सुख-सुविधाओं एवं रिश्ते-नातों को छोड़कर महान वीतराग के कठोर संयम पथ की ओर आज एक वीर बाला अग्रसर

होकर सभी के लिए आदर्श बन गई है। संयम साधना के शिखर पुरुष, युगनिर्माता, युगपुरुष, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रान्ति प्रदाता, निलिप्त आध्यात्म योगी, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बेले-बेले के तपस्वी, बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में जावद के श्री विजयकुमारजी-पिस्तादेवी गांधी की सुपौत्री एवं नरेन्द्रजी-रेखाजी गांधी की लाडली सुपुत्री 26 वर्षीय मुमुक्षु कु. श्रुतिजी गांधी की जैन भागवती दीक्षा महावीर भवन के बाहर खुले भव्य विशाल प्रांगण में अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में अत्यन्त उल्लास, उमंग भरे वातावरण में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर 10 संत-महापुरुष एवं 11 महासतियाँजी सभा में सुशोभित थे।

अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''अहिंसा, संयम, तप रूप धर्म मंगल में जिसका मन सदा लगा रहता है उसको देवता भी नमस्कार करते हैं। अहिंसा धर्म का प्राण है। धर्म को जैसे समझना चाहिए वैसा हमने नहीं समझा है। सबसे बड़ी विडम्बना है कि हम अपने आपसे भी अपरिचित नहीं हैं। मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मैं क्या कर रहा हूँ? मुझे क्या करना चाहिए? इन प्रश्नों का यदि सम्यक् समाधान मिल जाए तो वह धर्म है। बहिन श्रुति गांधी-जावद ने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया कि मुझे अब संसार में नहीं रहना और आज वह दीक्षा के लिए पोशाक बदलकर उपस्थित है।''**

''उठ जाग रे चेतन, निंदिया उड़ा ये मोह-राग की'' संयम गीत जैसे ही आचार्यदेव के मुखारविन्द से उच्चरित हुआ सभा में उपस्थित भाई-बहिनों के मन में वैराग्य के स्वर गूंजने लगे।

आचार्य भगवन् ने प्रात: 10:30 बजे दीक्षा विधि प्रारम्भ की। आचार्यदेव ने दीक्षार्थी बहिन, परिजनों, स्थानीय संघ एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ व उपस्थित जनता से दीक्षा हेतु अनुमति चाही तो सभी ने सहर्ष अनुमोदना प्रदान की। मुमुक्षु बहिन श्रुतिजी गांधी ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए उपस्थित सभी से क्षमायाचना के भाव रखे।

प्रात: 10:38 बजे आचार्यदेव ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से सम्पूर्ण सावद्य योगों, पापकारी क्रियाओं का त्याग करने का संकल्प मुमुक्षु बहिन को कराया और नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया।

जय-जयकार व बधाई के स्वर सभा में गूंजने लगे। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञाश्रीजी म.सा. के नाम की घोषणा होते ही जयघोष से सम्पूर्ण सभा गूंजायमान हो गई। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री वन्दनाश्रीजी म.सा. ने सम्पन्न किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि **भौतिकता प्रधान वातावरण में धन, ऐश्वर्य, खाना-पीना, उल्लास आदि छाए हुए हैं। दुनिया इनकी प्रतियोगिता में लगी हुई है और हमारा चंचल मन भी दुनिया के प्रभाव से इन्हीं चीजों की अंतरंग इच्छा बना लेता है और हर किसी स्थान पर हम इन्हीं पदार्थों की खोज व प्राप्ति के लिए मानसिक तौर से उपाय खोज लेते हैं। उन्हीं उपायों में जब हमें यह समझ में आता है कि किन्हीं महात्मा के चरण बड़े साधन-सम्पन्न हैं। हमारा मन उन भौतिक व्यथाओं को लेकर उन चरणों में पहुँच जाता है और हम चाहते हैं हमारी व्यथाएँ हमारी पीड़ाएँ उन चरणों के प्रताप से दूर हो जाए। यह भाव हमारी बुद्धि के अधीन तुच्छ भाव है। अत्यन्त कमजोर भाव है। जिनशासन ने, हमारे गुरु ने हमें यह शिक्षा नहीं दी है कि हम महात्माओं के चरणों को इन तुच्छ भौतिक आकांक्षाओं से पूजें। शान्ति आत्मतत्त्व के भीतर रही हुई है।**

इस अवसर पर श्री यत्नेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि दीक्षा लेना बड़ी बात है, पर उससे भी बहुत बड़ी बात है

दीक्षा का, संयम का निरतिचार पालन करना। प्राण चले जाएँ पर प्रण नहीं जाना चाहिए। महासती श्री वन्दनाश्रीजी म.सा., महासती श्री दर्शनाश्रीजी म.सा., महासती श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा., महासती श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. आदि ने ''दीक्षा का यह मेला है बड़ा अलबेला है'' सुन्दर भाव गीतिका प्रस्तुत कर माहौल को संयममय बना दिया। महासती श्री वन्दनाश्रीजी म.सा. एवं महासती श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि संसार छोड़कर संयम जीवन विरल आत्मा ही ग्रहण करती है। आचार्य भगवन् के आयामों को ग्रहण कर सच्ची गुरु समर्पणा प्रस्तुत करें।

वीर पिता नरेन्द्रजी गांधी ने कहा कि नवदीक्षिता साध्वीजी गुरु आज्ञा में रहकर पाँच समिति, तीन गुप्ति, पाँच महाव्रत का शुद्ध पालन कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करें, यही मंगलकामना है। वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ किशनगढ़ के श्री अजयजी कवाड़ ने दीक्षा आयोजन को आचार्य भगवन् की असीम कृपा का फल बताया।

महेश नाहटा ने उभय गुरु-भगवन्तों के आदर्श जीवन एवं दीक्षार्थी के अनुपम त्याग से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। 15 मिनट प्रतिदिन सत्साहित्य अध्ययन करने का संकल्प अनेक भाई-बहिनों ने लिया।

आजीवन शीलव्रत	अमृतलालजी मंजूदेवी मेहता-डूंगला, भूपालसिंहजी मंजूजी सिसोदिया-उदयपुर, अजयजी साधनाजी भण्डारी
जमीकन्द त्याग	नरेन्द्रजी रेखाजी गांधी
300 पक्की नवकारसी	चंचलजी बाफना, हेमलताजी डांगी-भीलवाड़ा
250 पच्चक्खाण	मधुबालाजी सकलेचा-उदयपुर
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	संजयजी गांधी-जावद
100 पक्की नवकारसी	विजेताजी सोनी
200 दिन कूलर, पंखा त्याग	शकुंतलाजी कुमट
108 दो पोरसी	ज्ञानचन्दजी डांगी-बड़ीसादड़ी
100 पोरसी	मंजूजी छिंगावत-पिपलियामंडी
एक लाख गाथा का स्वाध्याय	बसन्तीलालजी बड़ौला, पारसजी फाफरिया-जावद
टी.वी. का त्याग	मधुबालाजी सकलेचा
धोवन पानी आजीवन उपयोग करने का नियम	रानू पितलिया-नीमच
100 पक्की नवकारसी	इन्द्रजी कांठेड़
100 पोरसी	तरुणाजी पितलिया

50 पक्की नवकारसी व माह में एक दिन मोबाइल का त्याग अनेक लोगों ने लिया। जावद संघ की ओर से चातुर्मास की भावभरी विनती प्रस्तुत करते हुए महापुरुषों के गौरवमयी जीवन का बखान किया गया। किशनगढ़ संघ अध्यक्षजी, मंत्रीजी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। दीक्षा का यह सुन्दर आयोजन किशनगढ़ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

आचार्य भगवन् का दोपहर में किशनगढ शहर से पद विहार करते हुए सिलोरा पधारना हुआ। आगे सरवाड़ की दिशा में विहार संभावित है। सम्पूर्ण मदनगंज-किशनगढ़ में आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर का यह पावन प्रवास जन-जन को पावन करते हुए अविस्मरणीय बन गया।

-महेश नाहटा

विशेष- परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. की निर्मल संयम साधना से प्रभावित होकर 31 वर्षीय युवा दम्पत्ति ने आजीवन शीलव्रत का प्रत्याख्यान ग्रहण कर अकल्पनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। एतदर्थ साधुवाद।

संक्षिप्त सांसारिक परिचय

मुमुक्षु श्रुतिजी गाँधी

नाम	: मुमुक्षु श्रुतिजी गाँधी	जन्मतिथि	:	03 सितम्बर, 1995
जन्मस्थान	: नीमच (म.प्र.)	मूल निवासी	:	सिंगोली (म.प्र.)

वर्तमान निवास : जावद (म.प्र.)

व्यावहारिक शिक्षा : एमबीए (फाईनेन्स एण्ड एच.आर. (डूएल स्पेशलाईजेशन))
तीन बार डीएवीवी यूनिवर्सिटी मैरिट होल्डर

मार्गदर्शन : परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.

धार्मिक ज्ञान : कंठस्थ- श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र 1 से 9 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 1, 2, 4, 9, 10, 11, 26, 35, पुच्छिसुणं
अध्ययन- श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 29, 32, श्री उववाई सूत्र की 22 गाथाएँ। थोकड़े- तत्त्व का ताला-1, कर्म स्वरूप, कर्मविपाक, बंध उदय उदीरणा सत्ता, लोक का आकार, पल्योपम सागरोपम, चरम पद का थोकड़ा, गमक का थोकड़ा, पुद्गल परावर्तन, डाला पाला, जैन सिद्धान्त बत्तीसी, श्रीमद् प्रज्ञापना सूत्र-1 के कुछ थोकड़े एवं अन्य कई थोकड़े।

धार्मिक शिक्षा : आरुग्गबोहिलाभं

धार्मिक परीक्षा : जैन सिद्धान्त भूषण, जैन सिद्धान्त कोविद, जैन सिद्धान्त विभाकर, जैन सिद्धान्त मनीषी, जैन सिद्धान्त आगम। कंठस्थ- भूषण

वैराग्यकाल : लगभग 4 वर्ष

पारिवारिक परिचय

बड़े दादीजी-दादाजी	: श्रीमती हुलासबाई-स्व. श्री कन्हैयालालजी गाँधी
दादीजी-दादाजी	: श्रीमती पिस्तादेवी-विजयकुमारजी गाँधी
माताजी-पिताजी	: श्रीमती रेखाजी-नरेन्द्रजी गाँधी
बड़ी माता-बड़े पिता	: श्रीमती कल्पनाजी-विनोद्कुमारजी गाँधी
काकीजी-काकाजी	: श्रीमती लाडबाई-अनिलजी गाँधी, सुनीलजी गाँधी, श्रीमती राखीजी-संजयकुमारजी गाँधी
भुआ दादी-फूफाजी	: स्व. श्रीमती सोहनदेवी-स्व. श्री मांगीलालजी नपावलिया, श्रीमती मदनदेवी-स्व. श्री सौभागमलजी पटवा, स्व. श्रीमती प्रेमबाई-श्री मनोहरलालजी पटवा
भाई-भाभी	: निखिलजी (आई.आर.एस.)-श्रीमती श्रुतिजी गाँधी, श्रेयांशजी-श्रीमती रियाजी गाँधी, श्रद्धेश, कमल, श्रेय गाँधी
भतीजा	: त्रिज्ञ गाँधी
बहिन-बहनोई	: श्रीमती दीप्ति-श्री अर्पितजी नागौरी, श्रीमती श्रेया-श्री रौनकजी दक, पूजा, साक्षी गाँधी, समायरा नागौरी
भुआजी-फूफाजी	: श्रीमती अंजनादेवी-श्री गौतमकुमारजी पितलिया, श्रीमती रंजना-सुमतिकुमारजी चावत, श्रीमती किरण-संजयकुमारजी करणपुरिया, श्रीमती निधि-नेहुलजी चावत, श्रीमती पूजा-शुभम्जी करणपुरिया, विपुलजी चावत, नव्या, मोक्षा (भतीजी)
भांजी-जमाई	: श्रीमती सुरभि-धीरजजी मेहता
नानीजी-नानाजी	: श्रीमती लीलादेवी-श्री समरथमलजी भण्डारी
मामीजी-मामाजी	: श्रीमती साधना-अजयजी, श्रीमती अनिता-संजयजी, श्रीमती मीनाक्षी-संदीपजी भण्डारी
मौसीजी-मौसाजी	: श्रीमती रंजीता-मनीषजी पितलिया
भाई-बहिन	: संभव, प्रिया, संयम, सक्षम, वंश, वीर

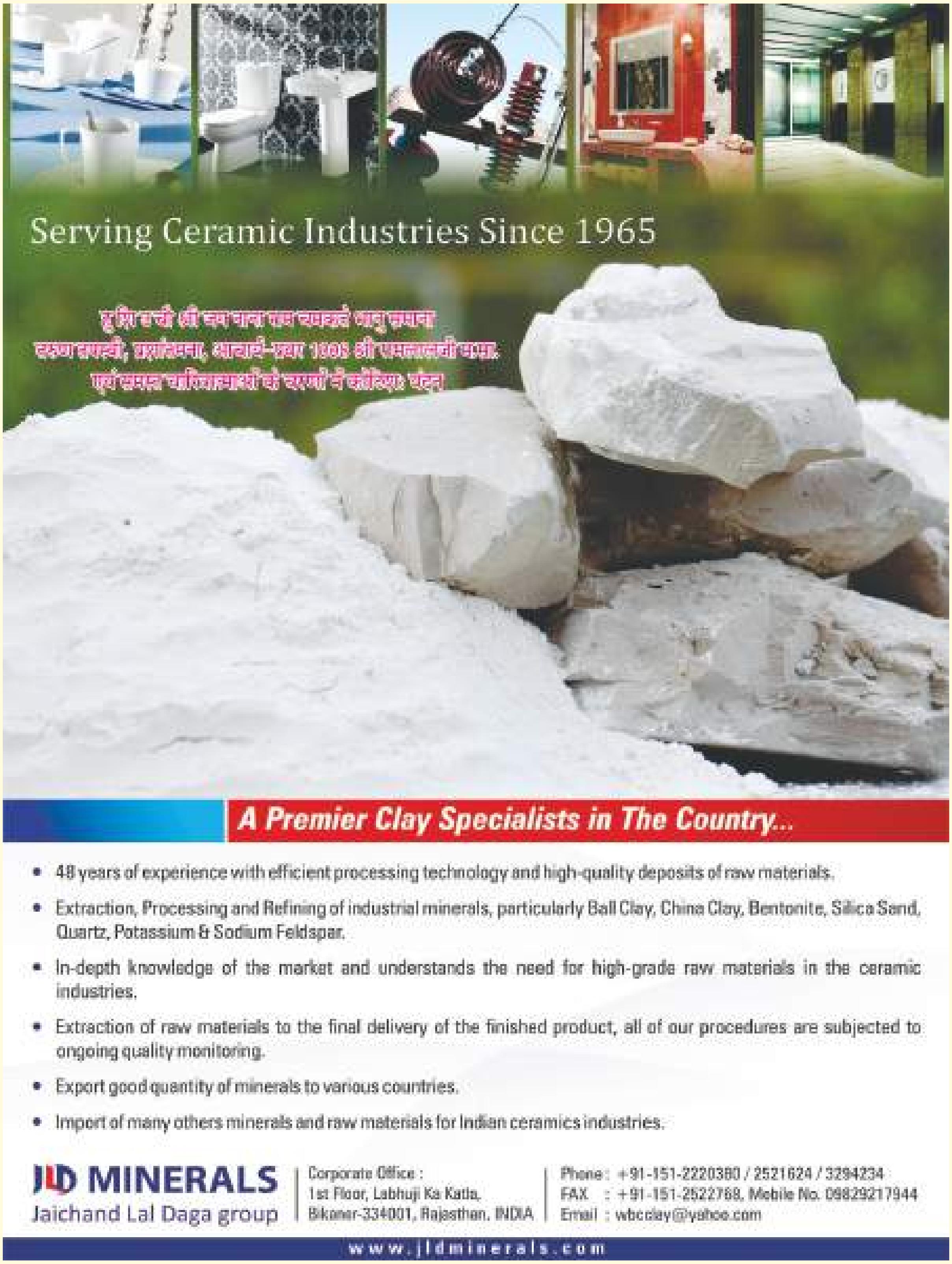
Serving Ceramic Industries Since 1965
A Premier Clay Specialists in The Country...
• 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
• Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
• In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
• Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
• Export good quantity of minerals to various countries.
• Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.
JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group
Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA
Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com
www.jldminerals.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261, मो. : 9509081192
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

आजीवन (अर्द्ध मूल्य)	(केवल भारत में)	500/-
	(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक	(केवल भारत में)	60/-
	(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक	(केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य		10/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-
E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. :	31264126681
IFSC Code :	SBIN0003401
Branch :	G.S. ROAD, Bikaner
Mob. :	7073311108
E-mail :	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990 :	
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153 :	news@sadhumargi.com
साहित्य	: 8209090748 :	publications@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008 :	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777 :	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	: 7231933008 :	anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113 :	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507 :	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008 :	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663 :	globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा। कार्यालय में लंच का समय दोपहर 1:00 बजे से 2:00 बजे तक रहता है।

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
LEAK PROOF
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
UV STABILIZED
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
IS 15778 : 2007 ISI CM/L NO : 2526149
cftri CERTIFIED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com   रक्षा जीवन भर की सुरक्षा   www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि., न्यू दिल्ली में मुद्रित प्रतियाँ 24700

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261